हिंदी

व्याकरण एवं रचना

7

With the blessings of :
Our Parents

हिंदी
व्याकरण एवं रचना
7

Copyright@Publishers

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means without prior permission in written. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Limits of liability and Disclaimer of Warranty:

The Author, Editor, Designer and the Publisher of this book have tried their best to ensure that all the texts are correct in all respect. However, the author and the publisher does not take any responsibility of any mistake, if happened. The correction of mistakes, if found will duly be done in the next edition.

MADE IN INDIA

Support Recycle

Save a Tree
Save the Earth

One Ton of this Paper Saves 17 trees

Max Retail Price: On Back Cover

Edited by:
Editone International Pvt. Ltd.

Based on:

- National Education Policy 2020
- NCF 2022
- Activity Based Format
- Innovative Approach
- Learning with fun
- Eco Friendly Paper

आमुख

भाषा को समझने हेतु व्याकरण एक मजबूत कड़ी है। बिना व्याकरण को समझे हम भाषा को सरल एवं स्पष्ट रूप से नहीं समझ सकते। इसी को ध्यान में रखते हुए 'हिंदी व्याकरण एवं रचना' (कक्षा 1 से 8) तैयार की गई है।

इस शृंखला में नई शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख मापदंडों का बड़ी सटीकता से पालन किया गया है। नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित इस पुस्तक में व्याकरण की प्रमुख इकाइयों को बड़े ही सरल, सहज एवं रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस शृंखला में व्याकरण को चित्रों के माध्यम से बड़े ही सहज भाव से तैयार किया गया है ताकि बच्चों को व्याकरण की जटिलता का तनिक भी आभास न हो।

पाठ के प्रस्तुतीकरण में शामिल 'पढ़िए और समझिए' के द्वारा बच्चों को चित्रों के माध्यम से संपूर्ण अध्याय को सरल एवं सहज रूप से समझाने का प्रयास किया गया है ताकि बच्चों का पाठ से जुड़ाव आसानी से हो सके। पाठ में शामिल 'अध्यापन संकेत' हमारा एक छोटा-सा प्रयत्न है जिसके माध्यम से शिक्षक/शिक्षिका बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

पाठ में शामिल 'आइए, पुनरावृति करें' के माध्यम से सीखे गए बिंदुओं को दोहराया गया है। अभ्यास कार्य के अंतर्गत शामिल 'मौखिक' और 'लेखन कार्य' के द्वारा बच्चों के श्रवण कौशल, बौद्धिक क्षमता और लेखन-शैली पर विशेष ध्यान दिया गया है। साथ ही, 'सोचें-विचारें' के द्वारा बच्चों की रचनात्मक, कार्यात्मक एवं तार्किक क्षमता को निखारने की कोशिश की गई है। 'खेल-खेल में' बच्चों की प्रतिभा को उभारने का संकल्प लिया गया है। साथ ही उनकी मानसिक योग्यता को बल प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है। 'प्रेरणादायक मूल्य' को संपूर्ण शृंखला में शामिल करने का मूल उद्देश्य बच्चों में नैतिक गुणों को प्रभावी स्वरूप प्रदान करना है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह शृंखला बच्चों में भाषा को रचनात्मक स्वरूप प्रदान करेगी और उनके बौद्धिक व व्यवहार रूपी अधिगम क्षमता को बढ़ाएगी। आपके सुझावों की सदैव प्रतीक्षा रहेगी। शुभकामनाओं सहित.....

–प्रकाशक

पाठ्यपुस्तक का परिचय

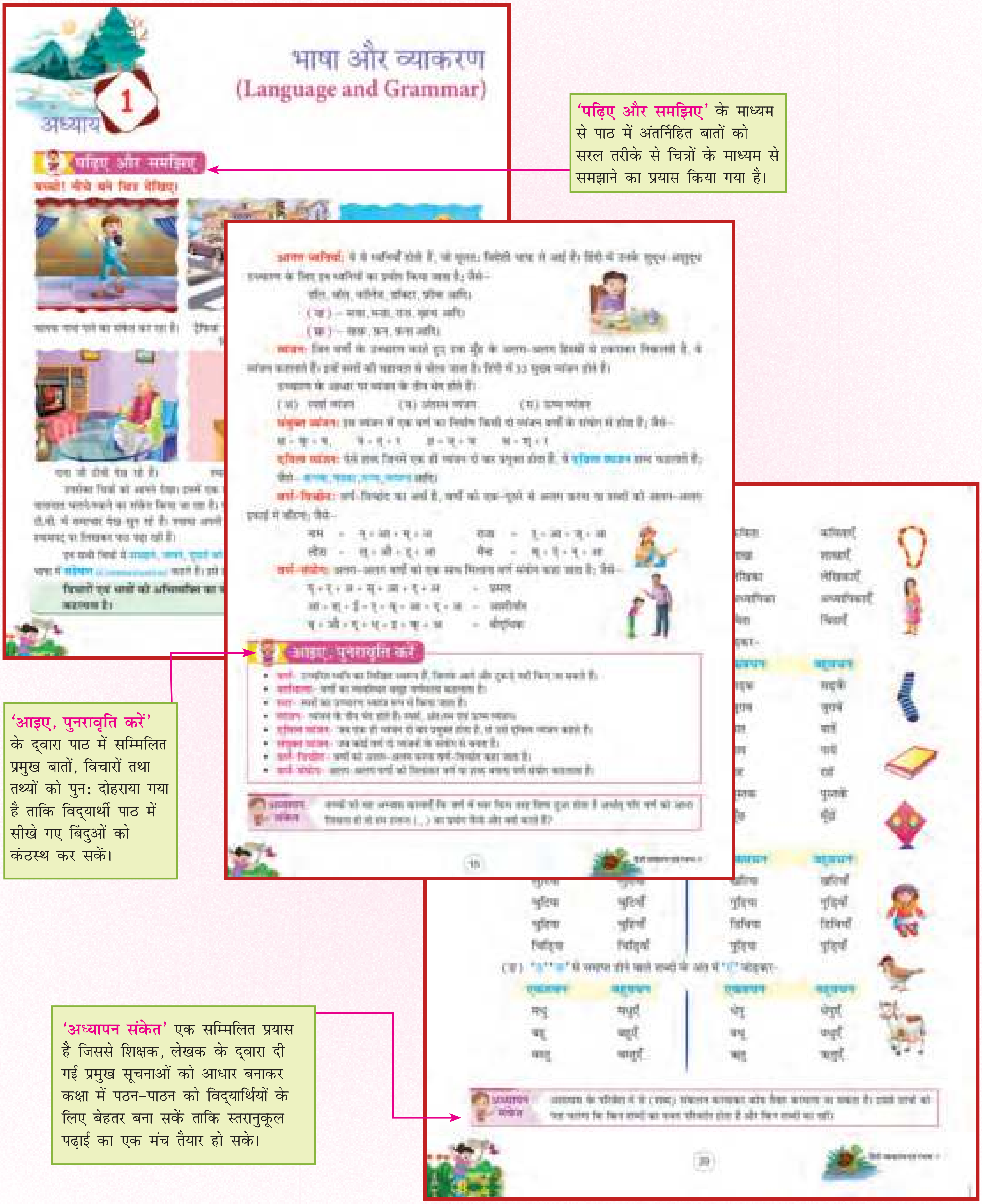

'पढ़िए और समझिए' के माध्यम से पाठ में अंतर्निहित बातों को सरल तरीके से चित्रों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है।

'आइए, पुनरावृति करें' के द्वारा पाठ में सम्मिलित प्रमुख बातों, विचारों तथा तथ्यों को पुन: दोहराया गया है ताकि विद्यार्थी पाठ में सीखे गए बिंदुओं को कंठस्थ कर सकें।

'अध्यापन संकेत' एक सम्मिलित प्रयास है जिससे शिक्षक, लेखक के द्वारा दी गई प्रमुख सूचनाओं को आधार बनाकर कक्षा में पठन-पाठन को विद्यार्थियों के लिए बेहतर बना सकें ताकि स्तरानुकूल पढ़ाई का एक मंच तैयार हो सके।

'अभ्यास कार्य' के अंतर्गत शामिल प्रश्नों के महत्वपूर्ण समुच्चय के द्वारा विद्यार्थियों में महत्वपूर्ण कौशलों के साथ-साथ उनकी रचनात्मकता को भी प्रभावी रूप देने का प्रयास किया गया है।

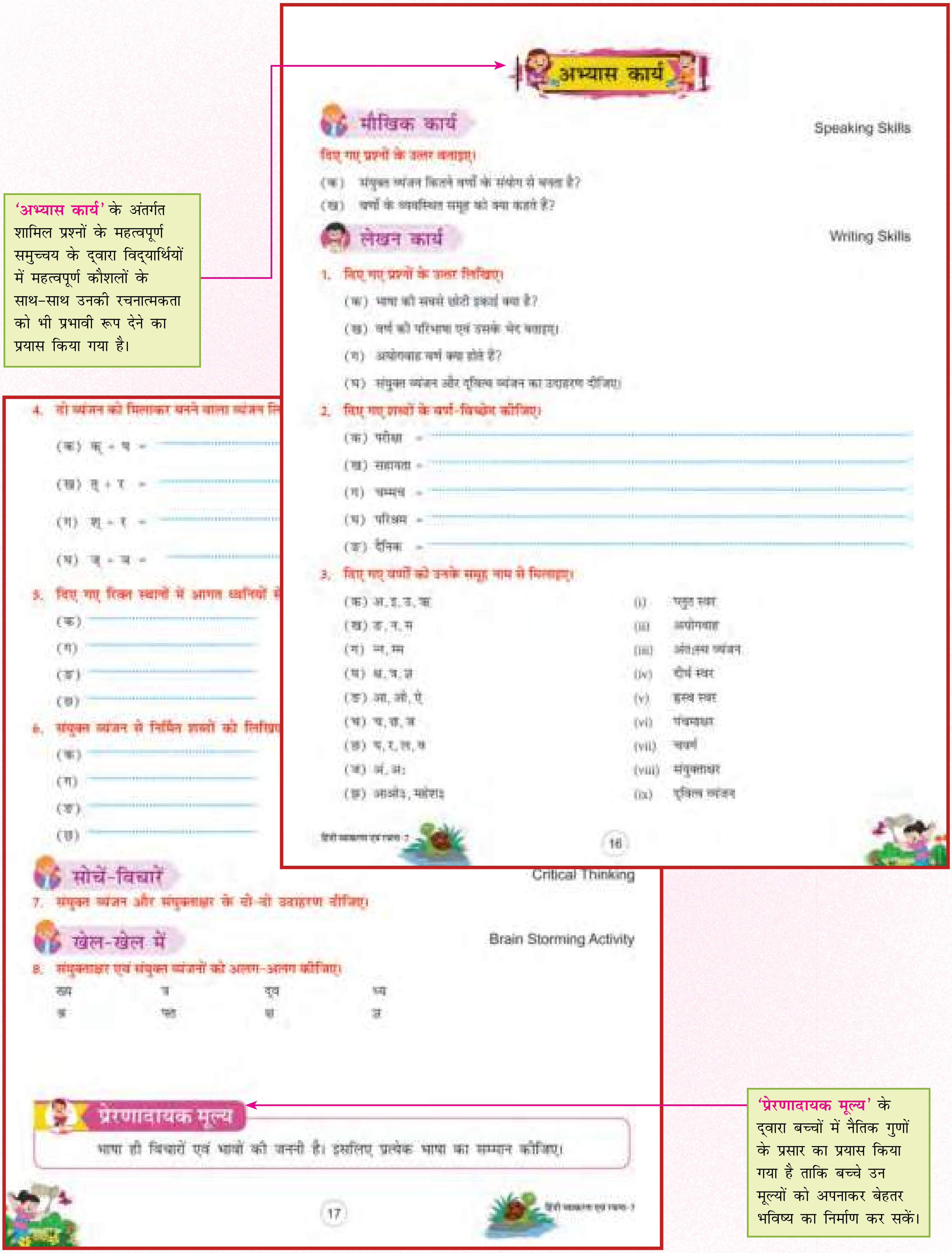

'प्रेरणादायक मूल्य' के द्वारा बच्चों में नैतिक गुणों के प्रसार का प्रयास किया गया है ताकि बच्चे उन मूल्यों को अपनाकर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।

अनुक्रमणिका

क्रम. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा और व्याकरण (Language and Grammar)	7
2.	वर्ण-विचार (Phonology)	13
3.	शब्द-विचार (Morphology)	18
4.	संज्ञा (Noun)	25
5.	लिंग (Gender)	31
6.	वचन (Number)	37
7.	सर्वनाम (Pronoun)	43
8.	विशेषण (Adjective)	52
9.	क्रिया (Verb)	60
10.	काल (Tense)	68
11.	संधि (Joining)	73
12.	समास (Compound)	82
13.	कारक (Case)	90
14.	उपसर्ग (Prefix)	98
15.	प्रत्यय (Suffix)	104
16.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ (Idioms & Proverbs)	110
17.	शब्द-भंडार (Word-Vocabulary)	118
18.	वाक्य-विचार (The Sentence)	126
19.	अशुद्ध वाक्यों का शोधन (Correction of Incorrect Sentences)	132
20.	चित्र-वर्णन (Picture Description)	137
	स्वमूल्यांकन पत्र-1	**141**
	स्वमूल्यांकन पत्र-2	**143**

अध्याय 1

भाषा और व्याकरण
(Language and Grammar)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! दिए गए चित्र देखिए।

बालक गाना गाने का संकेत कर रहा है।

ट्रैफिक पुलिस यातायात रोकने के लिए संकेत देते हुए।

चिड़ियाँ चीं-चीं कर रहीं हैं।

दादा जी टीवी देख रहे हैं।

श्यामा पत्र लिख रही है।

अध्यापिका पढ़ा रही हैं।

उपरोक्त चित्रों को आपने देखा। इसमें एक बच्चा संकेत करके गाना गा रहा है। दूसरे चित्र में ट्रैफिक पुलिस द्वारा यातायात चलने/रुकने का संकेत किया जा रहा है। कुछ चिड़ियाँ आपस में 'चीं-चीं' करके बातें कर रहीं हैं। वहीं दादा जी टी.वी. में समाचार देख-सुन रहे हैं। श्यामा अपनी नानी को पत्र लिख रही है। अध्यापिका जी बच्चों को बोलकर और श्यामपट् पर लिखकर पाठ पढ़ा रही हैं।

इन सभी चित्रों में समझने, जानने, दूसरों को समझाने, उन्हें सूचनाएँ देने का कार्य हो रहा है। इन सब कार्यों को हिंदी भाषा में **संप्रेषण** (Communication) कहते हैं। इसे ही **भाषा** कहा जाता है। इसे हम इस रूप में भी कह सकते हैं कि–

विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति का बोलकर, सुनकर, लिखकर, पढ़कर आदान-प्रदान करना भाषा कहलाता है।

अब यहाँ प्रश्न यह है कि हम किस-किस को भाषा कहेंगे और किसे भाषा की श्रेणी में नहीं रखेंगे। बच्चो! पहले जब लोगों को भाषा नहीं मालूम थी, तो लोग संकेतों के माध्यम से एवं शारीरिक भाव-भंगिमाओं से बातचीत करते थे। वैसे ही जैसे आजकल हम लोग चिड़ियों को शोर मचाते, पशुओं को बोलते एवं एक-दूसरे को चाटकर प्रेम प्रकट करते देखते हैं। अब आप यह जानिए कि भाषा का यही सांकेतिक स्वरूप धीरे-धीरे अपरिपक्व रूप में बातचीत या संप्रेषण का साधन बना है। फिर भाषा के विकास से धीरे-धीरे यह स्वरूप कई तरह की बोलियों से होता हुआ भाषा की शुद्धता की ओर अग्रसर हुआ। यदि मनुष्य और बाकी प्राणियों के बीच भाषा की तुलना की जाए, तो केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो अपनी बात को समझा या सुना सकता है।

यदि हम भाषा के रूप की बात करें, तो इसके दो रूप हमारे सामने मुख्य रूप से हैं– मौखिक तथा लिखित।

मौखिक भाषा: इसमें भाषा का वह स्वरूप शामिल है, जो केवल कहा या सुना जा सकता है। इसमें सुनना तथा बोलना सम्मिलित किया जाता है।

लिखित भाषा: साधारणतः सुनने या बोलने से हम थोड़े समय बाद वह भूलने लगते है। इसलिए हम सब इसे स्थायित्व लिपिबद्धता प्रदान करने के लिए उनको लिखने लगे। कागज़ के आविष्कार के पूर्व इसे भोजपत्र, ताम्रपत्र, ताड़पत्र पर लिखते थे। कागज़ के आविष्कार के बाद इसे उस पर लिखकर सुरक्षित रखा गया। समय बीतने के साथ तकनीकी विकास के बाद अब कंप्यूटर की हार्डडिस्क में डाटा सुरक्षित रखा जाता है। इससे भी बढ़कर अब वेब में यानी कि शून्य में डाटा को सुरक्षित रखा जाता है। लिखित भाषा में पढ़ना तथा लिखना शामिल हैं।

भाषा और बोली: भाषा जहाँ एक ओर विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती है वहीं बोली या उपभाषा एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती है। भाषा का लिखित रूप होता है जबकि बोली का कोई लिखित रूप नहीं होता। अवधी और ब्रज ऐसी बोलियाँ हैं जिनके साहित्य की रचना भी हुई है।

कोस-कोस पर बदले पानी ।
तीन कोस पर बदले बानी ॥

हमारा देश विविध धर्मों को मानने वाला व अनेक संप्रदायों को मानता है, इसलिए यहाँ पर बोलियाँ भी बहुत हैं; जैसे–

अवधी	मारवाड़ी	कन्नौजी
राजस्थानी	बघेली	बुंदेली
भोजपुरी	कुमाऊँनी	गढ़वाली
मारवाड़ी	हरियाणवी	पूरबी

हिंदी भाषा: हिंदी भाषा का उद्भव संस्कृत भाषा के तद्भव से हुआ है। इसे तद्भव रूप में जन-सामान्य की भाषा बनाने के लिए अपनाया गया। मुगलों के काल में ही हिंदी भाषा अधिक विभाजित होती रही। पुनः वर्तमान में भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिंदी को भारत के संवैधानिक स्वरूप की मान्यता मिली और प्रत्येक 14 सितंबर को हम हिंदी दिवस मनाते हैं। भारत में 6500 भाषाएँ बोली जाती हैं। सभी यूरोपीय भाषाएँ रोमन लिपि पर आधारित हैं।

भारतीय संविधान में अब तक 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। वे हैं–

1. हिंदी 2. असमिया 3. बांगला 4. डोगरी 5. बोडो 6. उर्दू 7. नेपाली 8. गुजराती 9. कन्नड़ 10. कश्मीरी 11. कोंकणी 12. मैथिली 13. मलयालम 14. मराठी 15. मणिपुरी 16. ओड़िया 17. पंजाबी 18. संस्कृत 19. संथाली 20. सिंधी 21. तमिल 22. तेलुगू।

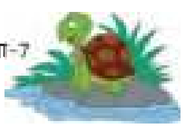

राष्ट्रभाषा: जिस भाषा को अधिकांश लोग बोलते हैं, उसे **राष्ट्रभाषा** कहा जाता है। यही एक ऐसी भाषा है जो कि समूचे भारत में अधिकांश रूप में बोली जाती है। जहाँ तक हिंदी को राष्ट्रभाषा मानने का प्रश्न है, यह वह सभी आवश्यक शर्तें पूरी करती है, जो एक राष्ट्रभाषा मानने के लिए पर्याप्त है, किंतु अनेक प्रयासों के बावजूद इसे अभी तक संविधान द्वारा राष्ट्रीय या राष्ट्रभाषा का स्वरूप प्राप्त नहीं हो सका है।

लिपि: किसी भी भाषा को लिखने के चिह्न या व्यवस्थित ढंग को **लिपि** कहते हैं। लिपि के माध्यम से ही भाषाएँ लिखी जाती हैं। हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है। इसकी वर्णमाला इस प्रकार है–

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	
क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण	(ड़, ढ़)	
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व			
श	ष	स	ह			
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			

कुछ भाषाओं की लिपियाँ हैं–

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
हिंदी	देवनागरी	चीनी	चीनी (मंदारिन)
संस्कृत	देवनागरी	जापानी	कानोलिपि (जापानी)
गुजराती	गुजराती	बांग्ला	बंगाली
अंग्रेज़ी	रोमन	पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	फारसी	मणिपुरी	मैतेई

व्याकरण (Grammar)

नीचे बने चित्र देखिए और उनकी बातें सुनकर मज़े लीजिए–

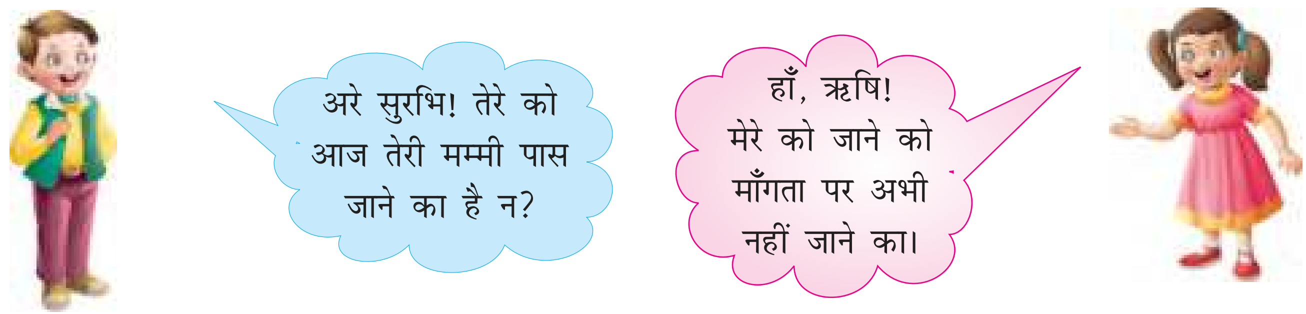

बच्चो! पढ़कर मज़ा आ गया न? आपको हँसी भी आ रही होगी। अब उनकी ये बातें पढ़िए–

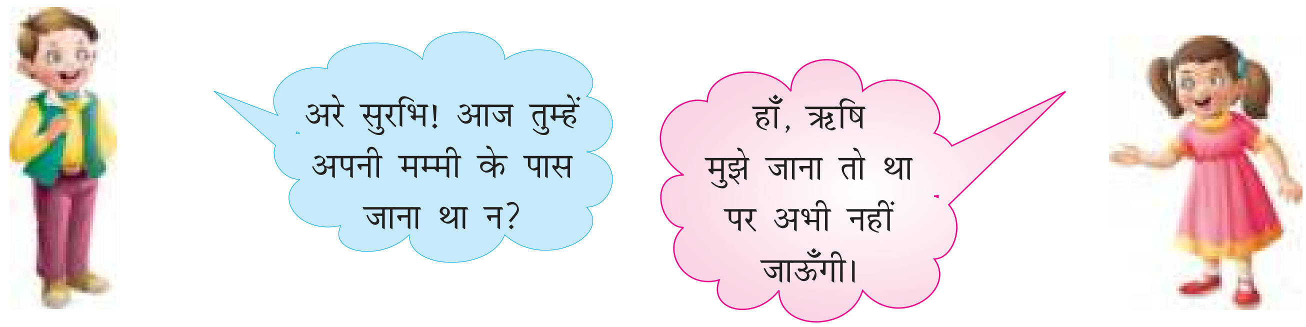

अध्यापन संकेत बच्चों को भाषा और बोली का अंतर बताते हुए राजभाषा हिंदी का महत्व समझाएँ।

यह संवाद शुद्ध भाषा पर आधारित है। व्याकरण के व्यवस्थित ढंग से भाषा को शुद्ध रूप में लिखा या पढ़ा जा सकता है जिसे व्याकरण द्वारा करना ही संभव है। अतः हम कह सकते हैं कि–

भाषा को शुद्ध रूप से बोलना, पढ़ना व लिखना व्याकरण द्वारा होता है।

व्याकरण के लाभः

- व्याकरण भाषा को ठीक करता है।
- व्याकरण भाषा को व्याकरणिक नियमों की कसौटी पर कसके ही उसे शुद्धता प्रदान करता है।
- व्याकरण भाषा को सिखाता नहीं है बल्कि उसे शुद्ध रूप प्रदान करके लिपिबद्ध करता है।

आइए, पुनरावृति करें

भाषा – भाषा द्वारा हम अपनी बात दूसरों को बताते तथा दूसरों की बात स्वयं समझते हैं। दूसरों की बात समझना एवम् अपनी बात को समझाना भाषा द्वारा ही मुमकिन है।

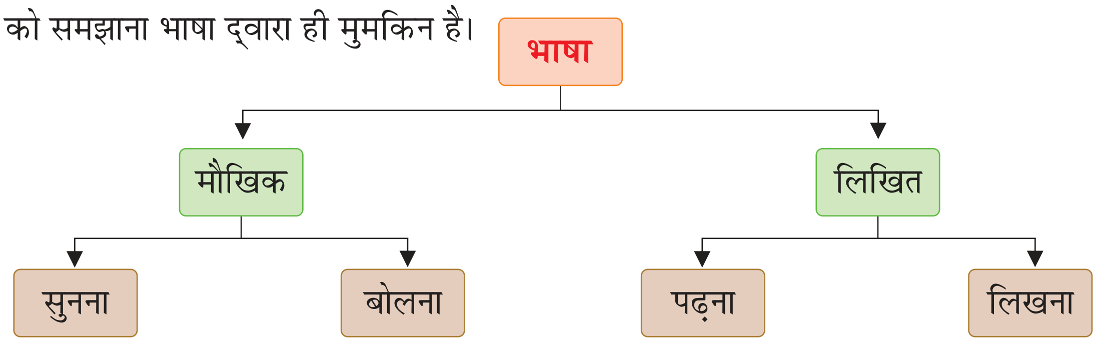

(सुनकर-पढ़कर स्वयं समझते हैं) (बोलकर-लिखकर दूसरों को बताते हैं)

बोली – यह अपेक्षाकृत सीमित क्षेत्र में बोली जाती है। इसमें कोई साहित्य नहीं लिखा होता है।

- भारतीय संविधान में कुल 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है।
- हिंदी को संविधान में **राजभाषा** का स्थान दिया गया है।
- प्रत्येक 14 सितंबर को भारत में **हिंदी दिवस** मनाया जाता है।
- **लिपि** – भाषा को लिखने के चिह्न या ढंग लिपि कहलाते हैं।
- **व्याकरण** – व्याकरण भाषा को शुद्धता प्रदान करता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) भाषा किसे कहते हैं?

(ख) भाषा के कितने रूप हैं?

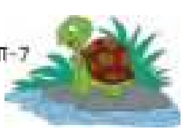

(ग) लिपि किसे कहते हैं?

(घ) भाषा और बोली में क्या अंतर है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए चित्र को पहचान कर भाषा के रूप लिखिए।

....

2. दी गई भाषाओं को उनकी बोलियों के साथ मिलाइए।

हरियाणवी	भाषा	मेवाड़ी
कोंकणी		मैथिली
बघेली		कुमाऊँनी
डोगरी		बोडो
छत्तीसगढ़ी	बोली	चीनी

3. दिए गए वाक्यों के सामने सही (✓) या गलत (✗) के निशान लगाइए।

(क) हिंदी की लिपि देवनागरी में भाषा के दो रूप होते हैं। ☐

(ख) कुमाऊँनी एक सुंदर भाषा है। ☐

(ग) भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ☐

(घ) हिंदी हमारी राजभाषा है। ☐

(ङ) भारत में 6500 बोलियाँ बोली जाती हैं। ☐

(च) ई-मेल करना लिखित भाषा का रूप है। ☐

(छ) भाषा का लिखित रूप लिपिबद्ध नहीं होता है। ☐

(ज) संकेत को भी भाषा माना गया है। ☐

4. भाषा और बोली में क्या अंतर है? विस्तार से वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. यदि भाषा को केवल सांकेतिक रूप में ही संप्रेषण का माध्यम बनाया जाता तो हमें विचारों, भावों की अभिव्यक्ति के लिए क्या-क्या चुनौतियाँ आती?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. 'माँ' को अलग-अलग बोली में क्या-क्या पुकारना चाहेंगे?

....

....

7. अध्यापिका श्यामपट्ट पर एक-एक शब्द लिखकर बच्चों से अलग-अलग भाषाओं में पूछें।

8. अपने मित्रों के नाम लिखिए। उनके सामने लिखिए कि वे कहाँ के हैं और कौन-सी उनकी मातृभाषा है?

छात्र/छात्रा का नाम	कहाँ के मूल निवासी हैं?	मातृभाषा
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

प्रेरणादायक मूल्य

प्रत्येक भाषा, बोली का करो सम्मान,
समृद्ध देश की यही पहचान।

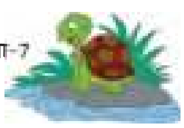

वर्ण–विचार
(Phonology)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए।

पार्क खुल गया है।

बच्चे झूला झूल रहे हैं।

नृत्यांगना नृत्य सिखा रही हैं।

उपरोक्त लिखे गए वाक्य अनेक शब्दों से बने हैं। ये सभी शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त किए जाते हैं, तो उन्हें 'पद' कहा जाता है। ये सभी शब्द ध्वनियों से बने होते हैं।

वर्ण: ध्वनियाँ ही वर्ण कहलाती हैं। वर्ण ध्वनि की सबसे छोटी इकाई होते हैं। उनके आगे और टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं; जैसे– झूला = झ् + ऊ + ल् + आ

वर्णमाला

हमारी हिंदी की वर्णमाला में कुल 52 वर्ण होते हैं, जो ये हैं–

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	स्वर एवं अं, अः अयोगवाह
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः		

क	ख	ग	घ	ङ		→ कवर्ग	व्यंजन
च	छ	ज	झ	ञ		→ चवर्ग	
ट	ठ	ड	ढ	ण	(ड़, ढ़)	→ टवर्ग	
त	थ	द	ध	न		→ तवर्ग	
प	फ	ब	भ	म		→ पवर्ग	
य	र	ल	व			→ अंतःस्थ व्यंजन	
श	ष	स	ह			→ ऊष्म व्यंजन	
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			→ संयुक्त व्यंजन	

वर्णों के मूलत: दो भेद होते हैं– स्वर तथा व्यंजन।

स्वर: ऐसे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती है, बल्कि उनका उच्चारण स्वतंत्र ध्वनियों द्वारा किया जाता है, वे स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या ग्यारह है– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ तथा औ।

स्वर के तीन भेद होते हैं–

(क) ह्रस्व स्वर (ख) दीर्घ स्वर तथा (ग) प्लुत स्वर।

(क) **ह्रस्व स्वर:** जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व (छोटा) स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार है– अ, इ, उ तथा ऋ।

(ख) **दीर्घ स्वर:** जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों का दोगुना समय लगता है, वे दीर्घ (बड़े) स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या सात है– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ।

(ग) **प्लुत स्वर:** यह अलग से कोई स्वर नहीं है, बल्कि उच्चारण के समय को लेकर यह भेद किया गया है। इसके उच्चारण में ह्रस्व स्वर का तीन गुना समय लगता है। इसलिए इसके अंत में हिंदी में संख्या '३' लिख दी जाती है। यह किसी को बुलाने या दूर के व्यक्ति को पुकारने के लिए प्रयुक्त होता है; जैसे–ओ३म, आओ३, राम३, मोहन३ आदि।

अयोगवाह: (अं, अ:)–ये दोनों वर्ण अयोगवाह के रूप में जाने जाते हैं। ये न तो स्वर होते हैं और न तो व्यंजन होते हैं।

अनुस्वार: इसका चिह्न शिरोरेखा पर बिंदु (ं) है। यह प्राय: सभी पंचम वर्णों (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) के बाद यदि उन्हीं के वर्ग का पहले चार वर्णों में से कोई आता है, तो वहाँ इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे–

क् + अ + ङ् (पंचम वर्ण) + घ् (कवर्ग का चौथा वर्ण) + आ = कंघा।

च् + अ + म् (पंचम वर्ण) + प् (पवर्ग का पहला वर्ण) + अ + क् + अ = चंपक।

ग् + अ + ङ् (पंचम वर्ण) + ग् (कवर्ग का तीसरा वर्ण) + आ = गंगा।

च् + अ + न् (पंचम वर्ण) + द् (तवर्ग का तीसरा वर्ण) + अ + न् + अ = चंदन।

घ् + अ + ण् (पंचम वर्ण) + ट् (टवर्ग का पहला वर्ण) + आ = घंटा।

श तथा स वर्ण के पहले कोई भी पंचम वर्ण आता है, तो वह अनुस्वार में बदल जाता है; जैसे–

अ + न् (पंचम वर्ण) + श् + अ = अंश।

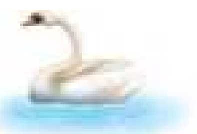

ह + न् (पंचम वर्ण) + स् + अ = हंस।

विसर्ग: इस ध्वनि का चिह्न (:) एवं उच्चारण 'ह' है। ये शब्द मूलत: संस्कृत भाषा के मूल शब्द होते हैं; जैसे– अत:, प्रात:, नम: आदि।

आगत ध्वनियाँ: ये वे ध्वनियाँ होती हैं, जो मूलत: विदेशी भाषा से आई हैं। हिंदी में उनके शुद्ध-अशुद्ध उच्चारण के लिए इन ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

डॉल, बॉल, कॉलेज, डॉक्टर, फ्रॉक आदि।

(ज़) – सज़ा, मज़ा, राज़, ख़ाना आदि।

(फ़) – साफ़, फ़न, फ़ना आदि।

व्यंजन: जिन वर्णों के उच्चारण करते हुए हवा मुँह के अलग-अलग हिस्सों से टकराकर निकलती है, वे व्यंजन कहलाते हैं। इन्हें स्वरों की सहायता से बोला जाता है। हिंदी में 33 मुख्य व्यंजन होते हैं।

उच्चारण के आधार पर व्यंजन के तीन भेद होते हैं।

(अ) स्पर्श व्यंजन (ब) अंतस्थ व्यंजन (स) ऊष्म व्यंजन

संयुक्त व्यंजन: इस व्यंजन में एक वर्ण का निर्माण किसी दो व्यंजन वर्णों के संयोग से होता है; जैसे–

क्ष = क् + ष, त्र = त् + र ज्ञ = ज् + ञ श्र = श् + र

द्‌वित्व व्यंजन: ऐसे शब्द जिनमें एक ही व्यंजन दो बार प्रयुक्त होता है, वे **द्‌वित्व व्यंजन** शब्द कहलाते हैं; जैसे– कच्चा, पक्का, गन्ना, चम्मच आदि।

वर्ण-विच्छेद: वर्ण-विच्छेद का अर्थ है, वर्णों को एक-दूसरे से अलग करना या शब्दों को अलग-अलग इकाई में बाँटना; जैसे–

नाम	=	न् + आ + म् + अ	राजा	=	र् + आ + ज् + आ
लौटा	=	ल् + औ + ट् + आ	मैना	=	म् + ऐ + न् + आ

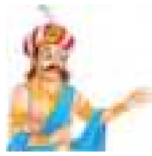

वर्ण-संयोग: अलग-अलग वर्णों को एक साथ मिलाना वर्ण संयोग कहा जाता है; जैसे–

प् + र् + अ + स् + आ + द् + अ	=	प्रसाद
आ + श् + ई + र् + व् + आ + द् + अ	=	आशीर्वाद
ब् + औ + द् + ध् + इ + क् + अ	=	बौद्‌धिक

आइए, पुनरावृति करें

- **वर्ण**– उच्चरित ध्वनि का लिखित स्वरूप हैं, जिनके आगे और टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं।
- **वर्णमाला**– वर्णों का व्यवस्थित समूह वर्णमाला कहलाता है।
- **स्वर**– स्वरों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है।
- **व्यंजन**– व्यंजन के तीन भेद होते हैं। स्पर्श, अंत:स्थ एवं ऊष्म व्यंजन।
- **द्‌वित्व व्यंजन**– जब एक ही व्यंजन दो बार प्रयुक्त होता है, तो उसे द्‌वित्व व्यंजन कहते हैं।
- **संयुक्त व्यंजन**– जब कोई वर्ण दो व्यंजनों के संयोग से बनता है।
- **वर्ण-विच्छेद**– वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहा जाता है।
- **वर्ण-संयोग**– अलग-अलग वर्णों को मिलाकर वर्ण या शब्द बनाना वर्ण संयोग कहलाता है।

अध्यापन संकेत

बच्चों को यह अभ्यास करवाएँ कि वर्ण में स्वर किस तरह छिपा हुआ होता है अर्थात् यदि वर्ण को आधा लिखना हो तो हम हलंत (्) का प्रयोग कैसे और क्यों करते हैं?

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) संयुक्त व्यंजन कितने वर्णों के संयोग से बनता है?

(ख) वर्णों के व्यवस्थित समूह को क्या कहते हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भाषा की सबसे छोटी इकाई क्या है?

(ख) वर्ण की परिभाषा एवं उसके भेद बताइए।

(ग) अयोगवाह वर्ण क्या होते हैं?

(घ) संयुक्त व्यंजन और द्वित्व व्यंजन का उदाहरण दीजिए।

2. दिए गए शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए।

(क) परीक्षा = ...

(ख) सहायता = ...

(ग) चम्मच = ...

(घ) परिश्रम = ...

(ङ) दैनिक = ...

3. दिए गए वर्णों को उनके समूह नाम से मिलाइए।

(क) अ, इ, उ, ऋ	(i) प्लुत स्वर
(ख) ङ, न, म	(ii) अयोगवाह
(ग) न्न, म्म	(iii) अंत:स्थ व्यंजन
(घ) क्ष, त्र, ज्ञ	(iv) दीर्घ स्वर
(ङ) आ, ओ, ऐ	(v) ह्रस्व स्वर
(च) च, छ, ज	(vi) पंचमाक्षर
(छ) य, र, ल, व	(vii) चवर्ग
(ज) अं, अः	(viii) संयुक्ताक्षर
(झ) आओ३, महेश३	(ix) द्वित्व व्यंजन

4. दो व्यंजन को मिलाकर बनने वाला व्यंजन लिखिए।

(क) क् + ष = ...

(ख) त् + र = ...

(ग) श् + र = ...

(घ) ज् + ञ = ...

5. दिए गए रिक्त स्थानों में आगत ध्वनियों से निर्मित शब्द लिखिए।

(क) .... (ख) ....

(ग) .... (घ) ....

(ङ) .... (च) ....

(छ) .... (ज) ....

6. संयुक्त व्यंजन से निर्मित शब्दों को लिखिए।

(क) .... (ख) ....

(ग) .... (घ) ....

(ङ) .... (च) ....

(छ) .... (ज) ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. संयुक्त व्यंजन और संयुक्ताक्षर के दो-दो उदाहरण दीजिए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. संयुक्ताक्षर एवं संयुक्त व्यंजनों को अलग-अलग कीजिए।

ख्य	त्र	द्व	ध्य
श्र	फ्त	क्ष	ज्ञ

प्रेरणादायक मूल्य

भाषा ही विचारों एवं भावों की जननी है। इसलिए प्रत्येक भाषा का सम्मान कीजिए।

अध्याय 3

शब्द-विचार
(Morphology)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनकी कही बातों को पढ़िए-

आपने वर्णों के बारें में पढ़ा। वर्णों का समूह प्रभावशाली होता है। इन्हें समूह में रखकर प्रयोग में लाया जाता है। क्योंकि यदि वर्ण समूह सार्थक नहीं होते तो उनका प्रयोग भी न बोलकर न लिखकर किया जा सकता है। अतः

वर्णों के सार्थक समूह एवं ध्वनियों को शब्द कहते हैं।

अब आइए, यह जानने का प्रयास करते हैं कि शब्द के कितने भेद होते हैं–

शब्द के भेद-

शब्द के भेद इन आधारों पर निश्चित किए गए हैं; वे हैं–

1. उत्पत्ति के आधार पर

2. रचना के आधार पर
3. प्रयोग के आधार पर
4. अर्थ के आधार पर

अब आइए, इनके बारे में विस्तार से जानते हैं–

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्द के भेद-

उत्पत्ति के आधार पर शब्द के चार भेद होते हैं- (क) तत्सम (ख) तद्‌भव (ग) देशज (घ) विदेशज

(क) तत्सम शब्द- संस्कृत भाषा के वह शब्द जिन्हें बिना किसी परिवर्तन के हिंदी भाषा में प्रयोग किया जाता है, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।

(ख) तद्‌भव शब्द- संस्कृत भाषा से हिंदी में परिवर्तित होकर प्रयोग में लाए जाने वाले शब्द तद्‌भव शब्द कहलाते हैं; जैसे- घृत - (घी), नासिका (नाक)

कुछ तत्सम-तद्‌भव शब्द नीचे दिए जा रहे हैं–

तत्सम शब्द	तद्‌भव शब्द	तत्सम शब्द	तद्‌भव शब्द
स्वर्ण	सोना	दंत	दाँत
दिवस	दिन	कर्पट	कपड़ा
चटका	चिड़िया	अश्व	घोड़ा
घट	घड़ा	पक्षी	पंछी
कुक्कुर	कुत्ता	वृक्ष	पेड़
अक्षि	आँख	मस्तक	माथा
नासिका	नाक	कर्ण	कान
अंगुष्ठ	अँगूठा	जिह्वा	जीभ
क्षेत्र	खेत	सत्य	सच
स्वप्न	सपना	नव	नया
प्रस्तर	पत्थर	दुग्ध	दूध
तृण	तिनका	अंधकार	अँधेरा
मूढ़	मूर्ख	अश्रु	आँसू
पुत्र	बेटा	ज्येष्ठ	जेठ
कनिष्ठ	छोटा	आश्विन	क्वार
श्रावण	सावन	पंच	पाँच

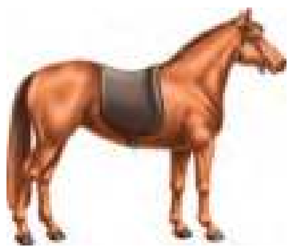

शत	सौ	हस्ति	हाथी
सर्प	साँप	वानर	बंदर
धेनु	गाय	पर्यंक	पलंग
मक्षिका	मक्खी	ग्राम	गाँव
नगर	शहर	अर्ध	आधा
उच्च	ऊँचा	नम:	नमस्ते
उदर	पेट	शयन	सोना
सूर्य	सूरज	निद्रा	नींद

(ग) देशज शब्द– जो शब्द देश या क्षेत्र-विशेष की बोली से निकलते हैं, वह 'देशज' शब्द कहलाते हैं; जैसे–

गाड़ी

पैसा

लड़का

लोटा

चारपाई

(घ) विदेशज शब्द– वे शब्द जो अंग्रेज़ी, फारसी, अरबी, पुर्तगाली आदि से हिंदी भाषा में प्रयोग होते हैं, वे विदेशज शब्द कहलाते हैं। इनमें अनेक विदेशी भाषाओं के शब्द सम्मिलित हैं–

अरबी– किस्मत, वकील, जहाज़, तारीख, क़िताब, इज्ज़त, अमीर, कालीन, मतलब, किस्मत आदि।

फ़ारसी– शादी, दरोगा, ज़हर, खूबसूरत, बहादुर, आवारा, किनारा, हप्ता, मुफ़्त आदि।

अंग्रेज़ी– स्कूल, डॉक्टर, बस, स्टेशन, ट्रक, पेन, पेंसिल, सर्कस, टेलीफ़ोन, टी.वी., कंप्यूटर, कार, ट्रेन, ट्राम आदि।

तुर्की– चाकू, तोप, बारूद, बेगम, तलाश आदि।

पुर्तगाली शब्द– अलमारी, कप्तान, कमरा, गमला, तौलिया।

2. रचना के आधार पर शब्द भेद–

रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं– (क) रूढ़ शब्द (ख) यौगिक शब्द (ग) योगरूढ़ शब्द।

(क) रूढ़ शब्द– ऐसे शब्द जिन्हें किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयोग किया जाता है तथा उनके खंडन करने पर उनका कोई अर्थ न निकले, वह रूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे–

जल

हाथ

सूर्य

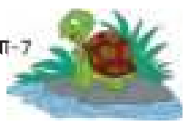

ज + ल (अलग करने पर कोई अर्थ नहीं) उसी प्रकार ह् + आ + थ (इनमें भी अलग करने पर कोई अर्थ नहीं होगा)

(ख) यौगिक शब्द– जिन शब्दों के दो अलग-अलग टुकड़े करने पर भी, उनके टुकड़ों का अर्थ निकले, वे यौगिक शब्द कहलाते हैं; जैसे–

विद्यार्थी
(विद्या + अर्थी)
दोनों के अर्थ

विद्यालय
(विद्या + आलय)
दोनों के अर्थ

राष्ट्रपति
(राष्ट्र + पति)
दोनों के अर्थ

(ग) योगरूढ़ शब्द– ऐसे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर तो बनते हैं, किंतु इनका प्रयोग रूढ़ शब्दों की तरह किसी निश्चित अर्थ के लिए ही प्रयुक्त किया जाता है; जैसे–

त्रिनेत्र
(तीन + नेत्र)

दशानन
(दश + आनन)

गजमुख
(गज + मुख)

बच्चो! ऊपर आपने देखा कि ऐसे शब्द केवल अपने रूढ़ अर्थ के लिए किसी प्राणी, व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

3. प्रयोग के आधार पर शब्दों के भेद–

प्रयोग के आधार पर शब्दों के प्रायः दो भेद होते हैं– (क) विकारी (ख) अविकारी

(क) विकारी शब्द– वे शब्द जिनमें स्थिति के अनुसार परिवर्तन हो वे विकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे– संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण।

इन सबकी विस्तृत चर्चा हम आगे के अध्याय में करेंगे।

(ख) अविकारी शब्द– जिन शब्दों पर लिंग, वचन, कारक आदि के कारण उनकी स्थिति में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, इन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को चार समूहों में बाँटिए और प्रत्येक समूह को तत्सम्, तद्भव, देशज, विदेशी शब्दों को छाँटकर या चर्चा द्वारा गतिविधि करवाएँ।

अविकारी शब्द भी चार प्रकार के होते हैं– (i) क्रिया विशेषण (ii) संबंधबोधक (iii) समुच्चयबोधक (iv) विस्मयादिबोधक।

4. अर्थ के आधार पर शब्द के भेद–

शब्दों के अनेक अर्थ, शब्दों के उल्टे अर्थ, सुनने में परिवर्तित अर्थ इत्यादि की उत्पति शब्दों के अर्थ के आधार पर होती है। शब्दों के मुख्यत: प्रकार हैं– (i) पर्यायवाची शब्द (ii) विलोम शब्द (iii) अनेकार्थक शब्द (iv) श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द (v) वाक्यांशबोधक शब्द एवं (vi) एकार्थक शब्द।

आइए, पुनरावृति करें

शब्द
एकाधिक वर्णों से निर्मित सार्थक शब्द

- उत्पत्ति के आधार पर
  - तत्सम
  - तद्भव
  - देशज
  - विदेशी
- रचना के आधार पर
  - रूढ़
  - यौगिक
  - योगरूढ़
- प्रयोग के आधार पर
  - विकारी
    - (i) संज्ञा
    - (ii) सर्वनाम
    - (iii) विशेषण
    - (iv) क्रिया
  - अविकारी
    - (i) क्रिया विशेषण
    - (ii) संबंधबोधक
    - (iii) समुच्चयबोधक
    - (iv) विस्मयादिबोधक
- अर्थ के आधार पर
  - पर्यायवाची
  - विलोम
  - अनेकार्थक
  - एकार्थक
  - वाक्यांशबोधक
  - श्रुतिसम भिन्नार्थक

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) रूढ़ शब्द का कोई दो उदाहरण बताएँ।

(ख) 'चारपाई' शब्द देशज है या विदेशज?

लेखन कार्य

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) 'पद' किसे कहते हैं?

(ख) रचना के आधार पर शब्द के कितने भेद होते हैं?

(ग) शब्द को किन चार भेदों में बाँटा गया है?

(घ) देशज एवं विदेशज शब्दों में क्या अंतर है? समझाइए।

2. दिए गए शब्दों को उचित वर्ग में लिखिए।

आगे, मुख, गाड़ी, मुँह, रात्रि, पेटी, तोप, आश्चर्य, लोटा, बारूद, पगड़ी, जिह्वा, अलमारी, आश्चर्य, कंप्यूटर, लड़का, ऑफिस, डॉक्टर, स्वप्न, खाट, चाकू, चुन्नी, तौलिया, ज्येष्ठ, बाल्टी, बाबा, तृण

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	देशज शब्द	विदेशज शब्द
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

3. दिए गए तत्सम शब्दों को तद्भव रूप में बदलकर लिखिए।

मयूर –	कुक्कुर –	कर्ण – ....
पात्र –	स्वप्न –	आश्चर्य – ....
अक्षि –	दंत –	मक्षिका – ....

4. भेदों के दो-दो उदाहरण लिखिए।

(क) यौगिक – ....

(ख) योगरूढ़ – ....

(ग) रूढ़ शब्द – ....

(घ) एकार्थी – ....

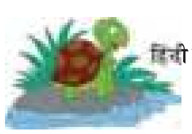

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. दिए गए चित्र को पहचानिए और बताइए कि ये किस शब्द समूह का है।

अरबी फारसी अंग्रेजी हिंदी तुर्की पुर्तगाली।

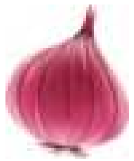 ....

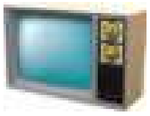 ....

.... 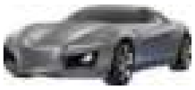 ....

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. आपके घर में अपनी मातृभाषा में बहुत-से शब्द बोले जाते होंगे। उन शब्दों को अर्थ के साथ लिखकर सूची तैयार कीजिए।

7. अखबार या पाठ्यपुस्तक से देशज और विदेशज शब्द छाँटकर कॉपी में लिखवाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार वर्णों का सार्थक समूह शब्द कहलाता है, उसी प्रकार प्रत्येक वर्ग, धर्म, लिंग, जाति का समूह समाज कहलाता है तथा प्रत्येक समाज अपने आप में विशेष होता है।

अध्याय 4

संज्ञा (Noun)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे शब्द पढ़िए–

यह हमारा विद्यालय है। कोरोना के कारण काफ़ी समय बाद खुला है। सभी बच्चे मास्क लगाकर अपनी-अपनी कक्षा में जा रहे हैं। हमारी अध्यापिकाएँ भी मास्क लगाई हुई हैं। विद्यालय के गार्ड गेट पर ही सबके मास्क की जाँच कर रहे हैं। वे सबको सैनेटाइज़ भी कर रहे हैं। कुछ कर्मचारी पूरे विद्यालय में दवाओं का छिड़काव कर रहे हैं। एक व्यक्ति बच्चों के शारीरिक तापमान की जाँच कर रहा है। बहुत दिनों के बाद विद्यालय आना अच्छा लग रहा है।

बच्चो! उपर्युक्त वाक्यों में आए शब्द विद्यालय, कोरोना, कक्षा, गार्ड, गेट, दवाई, व्यक्ति, बच्चे, मास्क आदि

किसी-न-किसी के नाम हैं। ये सभी नाम किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, व्यवसाय, जाति के हैं। व्याकरण शास्त्र में सभी तरह के नामों को संज्ञा कहते हैं। अतएव हम यह भी कह सकते हैं कि—

ऐसे शब्द जिनसे किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम का पता चलता है, उन्हें संज्ञा कहा जाता है।

अब आइए, संज्ञा शब्द के भेद के बारे में जानते हैं—

संज्ञा शब्द के मुख्यतः तीन भेद होते हैं—

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ख) जातिवाचक संज्ञा (ग) भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा—

किसी विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध कराने वाले शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं; जैसे—

रंजीत पाठ पढ़ रहा है।
कविता नाच रही है।
माता जी शिवमंदिर जा रही हैं।
लँगड़ा आम बाज़ार में आ गया है।

यहाँ वाक्यों में आए रंगीन शब्द – रंजीत, कविता, शिवमंदिर तथा लँगड़ा आम विशेष नाम, विशेष स्थान तथा विशेष वस्तु हैं। ये सभी शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द कहे जाते हैं।

2. जातिवाचक संज्ञा—

ऐसे शब्द जिनसे किसी विशेष व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान आदि की संपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है, वैसे शब्दों को जातिवाचक संज्ञा शब्द कहते हैं; जैसे—

अध्यापिका जी पढ़ा रही हैं।
घर के सामने पेड़ लगा है।
जंगल में शेर घूम रहे हैं।
मछलियाँ पानी में तैर रही हैं।

यहाँ वाक्यों में आए रंगीन शब्द – अध्यापिका जी, घर, पेड़, शेर, मछलियाँ, जंगल तथा पानी से किसी वस्तु विशेष का नहीं बल्कि उनकी पूरी जाति का पता चल रहा है। इसलिए ये सब जातिवाचक संज्ञा शब्द हैं।

3. भाववाचक संज्ञा—

ऐसे संज्ञा शब्द जिनसे किसी गुण, दोष, अवस्था, मन के भाव (हर्ष, खुशी, विषाद) आदि की जानकारी मिलती है, उसे भाववाचक संज्ञा शब्द कहते हैं; जैसे—

हमारे घर के चारों ओर हरियाली है।
हमें ईमानदारी से अपना काम करना है।
राकेश और मेरे बीच गाढ़ी मित्रता है।
किसी के साथ शत्रुता नहीं करनी चाहिए।

ऊपर के वाक्यों में आए शब्द हरियाली, ईमानदारी, मित्रता, शत्रुता हमारे मन के भाव हैं। ये दिखाई नहीं देते बल्कि अनुभव किए जाते हैं। इसलिए इन्हें भाववाचक संज्ञा शब्द कहते हैं।

अब आइए, यह जानें कि भाववाचक संज्ञा शब्द कैसे बनाए जाते हैं?

जातिवाचक शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाना–

जातिवाचक	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक	भाववाचक संज्ञा
घर	घरेलू	व्यक्ति	व्यक्तित्व
युवा	यौवन	सज्जन	सज्जनता
शत्रु	शत्रुता	मित्र	मित्रता
कवि	कवित्व	देव	देवत्व
पशु	पशुता/पशुत्व	नारी	नारीत्व
लड़का	लड़कपन	विद्वान	विद्वता
अमीर	अमीरी	गरीब	गरीबी
इंसान	इंसानियत	बालक	बालकपन

विशेषण शब्दों से–

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
अच्छा	अच्छाई	निर्धन	निर्धनता
भूखा	भूख	सफ़ेद	सफ़ेदी
गहरा	गहराई	लंबा	लंबाई
लाल	लालिमा	काला	कालिमा
हरा	हरियाली / हरीतिमा	महान	महानता
कठोर	कठोरता	नीचा	नीचाई / नीचता
गहरा	गहराई	मधुर	मधुरता
ऊँचा	ऊँचाई	कायर	कायरता

क्रिया शब्दों से–

क्रिया शब्द	भाववाचक संज्ञा	क्रिया शब्द	भाववाचक संज्ञा
लिखना	लिखावट/लिखाई	रोना	रुलाई
बुनना	बुनावट	चिल्लाना	चिल्लाहट
गिरना	गिरावट	जागना	जागरण
लड़ना	लड़ाई	पीटना	पिटाई
मिलाना	मिलावट	जीतना	जीत
हँसना	हँसी	हारना	हार
चढ़ना	चढ़ाई	पढ़ना	पढ़ाई
उड़ना	उड़ान	धोना	धुलाई

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को संज्ञा के भेदों का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते हुए समझाएँ।

सर्वनाम शब्दों से–

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
अहं	अहंकार	आप	आपा
सर्व	सर्वस्व	मम	ममता/ममत्व
स्व	स्वत्व	अपना	अपनत्व/अपनापन
निज	निजता/निजत्व	पराया	परायापन

अव्यय शब्दों से–

अव्यय	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	भाववाचक संज्ञा
निकट	निकटता	तीव्र	तीव्रता
दूर	दूरी	समीप	समीपता/सामीप्य
धिक्	धिक्कार	शीघ्र	शीघ्रता
ऊपर	ऊपरी	मना	मनाही
बाहर	बाहरी	भीतर	भीतरी

आइए, पुनरावृति करें

- **संज्ञा**– सभी प्रकार के नाम – (व्यक्ति, जाति, पशु-पक्षी, स्थान, वस्तु, भाव) को संज्ञा कहते हैं।
- संज्ञा के मुख्यत: तीन भेद होते हैं– व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक।

संज्ञा

- व्यक्तिवाचक (विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि)
- जातिवाचक (प्रत्येक जाति का बोध कराने वाले शब्द)
- भाववाचक (मन की दशाएँ, या भाव– हर्ष, क्रोध, घृणा, प्रसन्नता आदि)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) 'ईमानदारी' शब्द में कौन-सी संज्ञा है? बताइए।

(ख) संज्ञा के कितने भेद होते हैं? बताइए।

(ग) 'जंगल में शेर घूम रहा हैं। वाक्य में संज्ञा की पहचान करके बताइए।

लेखन कार्य

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) संज्ञा किसे कहते हैं?

(ख) भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं?

(ग) भाववाचक संज्ञा शब्द किन-किन शब्दों से बनाए जाते हैं?

(घ) जातिवाचक संज्ञा की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

2. दिए गए वाक्यों में से संज्ञा शब्द छाँटकर उनके भेद भी लिखिए।

(क) हिंदी हमारी राजभाषा है। ....व्यक्तिवाचक............

(ख) तोते शोर मचाकर उड़ रहे हैं। ....

(ग) डॉ. कलाम हमारे राष्ट्रपति थे। ....

(घ) मित्रता निभाना कठिन होता है। ....

(ङ) लाल बहादुर शास्त्री यशस्वी नेता थे। ....

(च) पुस्तकें पढ़ना अच्छी आदत होती है। ....

(छ) माता जी बढ़िया भोजन पकाती हैं। ....

(ज) दशहरी आम बहुत मीठा होता है। ....

(झ) सेना ने कारगिल में शत्रु को हराया। ....

3. संज्ञा शब्दों का उनके भेद से सही मिलान कीजिए।

मनुष्यता	**व्यक्तिवाचक**	काबुली घोड़े
महल	**जातिवाचक**	चंचलता
तोते	**भाववाचक**	उदासी
अमेरिका		पर्वत

4. दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए।

रोना –	....	प्यासा –	....
तरुण –	....	कुशल –	....
नारी –	....	पुरुष –	....
हरा –	....	नीला –	....
स्व –	....	अपना –	....
नीचे –	....	समीप –	....
कवि –	....	दास –	....

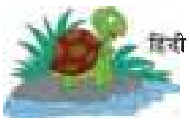

5. **दिए गए शब्दों को उचित वर्ग में लिखिए।**

दासता	मोर	भारत	मनाही	पुस्तक	गंगा	फल	रुकावट	हिमालय
कंजूसी	लड़का	आकाशगंगा	लड़कपन	लड़का	वाराणसी	राजस्थान	मित्र	गरमी

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

सोचें-विचारें
Critical Thinking

6. **कोरोना महामारी से बचाव के प्रति जागरूक करते हुए एक स्लोगन लिखिए, जिसमें संज्ञा के तीनों भेदों से संबंधित कोई-न-कोई शब्द अवश्य हो।**

खेल-खेल में
Brain Storming Activity

7. **प्रत्येक बच्चे से उसका नाम, शहर का नाम, घर का मुहल्ला, पसंद-नापसंद की चीज़ें पूछें। फिर उन शब्दों को तीन संज्ञा के भेदों में वर्गीकृत करवाएँ।**

8. **चित्र को देखकर उन शब्दों को लिखिए जो संज्ञा को दर्शाते हैं।**

प्रेरणादायक मूल्य

इस दुनिया में किसी के साथ खुद की तुलना मत करो। यदि आप ऐसा करते हैं तो आप खुद का अपमान कर रहे हैं।

अध्याय 5

लिंग
(Gender)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को देखिए और उनके नाम पढ़िए।

मुर्गा बाँग दे रहा है।
मुर्गी चूज़ों को घुमा रही है।

अध्यापक पढ़ा रहे हैं।
अध्यापिका खेल खिला रही है।

गाय दूध दे रही है।
बैल घास चर रहा है।

बच्चो! आपने देखा कि मुर्गा, अध्यापक तथा बैल पुरुष का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वहीं मुर्गी, अध्यापिका तथा गाय शब्द स्त्री का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इनका पुरुष तथा स्त्री के रूप में प्रतिनिधित्व करना ही **लिंग** कहा जाता है।

इसे हम इस तरह से भी कह सकते हैं कि–

शब्द के जिस रूप से स्त्री अथवा पुरुष जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं।

आइए, अब लिंग के भेद के बारे में जानने की कोशिश करते हैं–

लिंग के दो भेद होते हैं– 1. पुल्लिंग तथा 2. स्त्रीलिंग।

1. **पुल्लिंग :** ऐसे शब्द जो केवल पुरुषवाचक की जानकारी देते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहा जाता है; जैसे–

वन में मोर नाच रहे हैं।

गिलास में दूध भरा है।

आजकल देसी खिलौने नहीं बन रहे हैं।

1. **पुल्लिंग शब्दों की पहचान इस प्रकार से की जा सकती है–**

प्राय: समय, दिन, महीने, अनाज, ग्रह, देश, धातु, द्वीप आदि के नाम पुल्लिंग में होते हैं–

समय : मिनट, सेकेंड, घंटा, क्षण आदि।

दिन : रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार।

महीने : फरवरी, चैत्र, वैशाख, फाल्गुन, मार्च, अप्रैल आदि।
देश : भारत, अमेरिका, चीन, जापान, रूस आदि।
द्वीप : मालद्वीप, लक्षद्वीप आदि।
पर्वत : हिमालय, काराकोरम, नीलगिरी, नेपाल, विंध्याचल, मैकाल आदि।
अनाज : गेहूँ, चना, जौ, मटर, बाजरा आदि।
धातु : सोना, लोहा, ताँबा, पीतल, जस्ता आदि। (चाँदी नहीं)
सागर : हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, लाल सागर, आर्कटिक सागर आदि।

2. **मिश्रित पदार्थ या चीज़ें–**

जैसे– लोटा, बुढ़ापा, लड़कपन, अपनापन, मच्छर, भालू, गैंडा, खरगोश, गीदड़, तोता, कौआ आदि।

2. **स्त्रीलिंग :** ऐसे शब्द जिनके रूप से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

जैसे– हिंदी हमारी राजभाषा है।
मम्मी जी ने आज पीले रंग की साड़ी पहनी है।
ठंड में चाय-कॉफ़ी पीने का मज़ा ही कुछ और है।

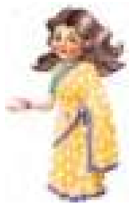

आइए, कुछ स्त्रीलिंग शब्दों के बारे में जानें:

शरीर के कुछ अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे– आँख, नाक, जीभ, पलकें, उँगली, नाभि, ठोड़ी आदि।

- तिथियाँ : द्वितीया, तृतीया, पूर्णिमा, अमावस्या आदि।
- भोजन : खीर, पूड़ी, रोटी, दाल, सब्ज़ी आदि।
- भाषाएँ : हिंदी, चीनी, अंग्रेज़ी, अरबी, फ़ारसी आदि।
- नदियाँ : गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, ताप्ती, झेलम, कावेरी, महानदी, कृष्णा आदि।
- बोलियाँ : हरियाणवी, भोजपुरी, मेवाती, अवधी, बुंदेली, कुमाऊँनी आदि।

कुछ मिश्रित चीज़ें : बुढ़िया, कुटिया, खटिया, बिटिया, तकिया, चुटिया, लुटिया, कविता, भाषा, विद्या, मिठाई, लिखावट, सजावट, गीता, सीता, ममता, सुंदरता, सगाई, पिटाई, धुलाई, रजाई आदि।

कुछ मसाले : दालचीनी, हल्दी, लौंग, मिर्च, इलायची, सौंफ़ आदि।

कुछ ऐसे भी शब्द होते हैं, जो स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग दोनों में प्रयुक्त किए जाते हैं; जैसे– दही, डॉक्टर, प्रोफ़ेसर, वकील, चित्रकार, पत्रकार, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल आदि।

अब आइए, यह जानने का प्रयत्न करें कि पुल्लिंग से स्त्रीलिंग शब्द कैसे बनाए जाते हैं–

(क) अंत में 'आ' जोड़कर–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
महोदय	महोदया
शिष्य	शिष्या
आचार्य	आचार्या
प्रिय	प्रिया
अनुज	अनुजा

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
पूज्य	पूज्या
वृद्ध	वृद्धा
सुत	सुता
छात्र	छात्रा
भवदीय	भवदीया

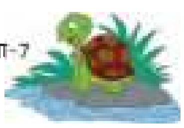

(ख) 'इका' जोड़कर–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
गायक	गायिका
लेखक	लेखिका
शिक्षक	शिक्षिका
बालक	बालिका
नायक	नायिका
पाठक	पाठिका

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
सेवक	सेविका
चालक	चालिका
अध्यापक	अध्यापिका
संपादक	संपादिका
संचालक	संचालिका
रक्षक	रक्षिका

(ग) 'ई' अंत में जोड़कर–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
रस्सा	रस्सी
फूफा	फूफी
देव	देवी
चाचा	चाची
मामा	मामी

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
भतीजा	भतीजी
घोड़ा	घोड़ी
पुत्र	पुत्री
दास	दासी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी

(घ) अंत में 'आनी या रानी' जोड़कर–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
देवर	देवरानी
सेठ	सेठानी
इंद्र	इंद्राणी
जेठ	जेठानी

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
क्षत्रिय	क्षत्राणी
मेहतर	मेहतरानी
नौकर	नौकरानी
रुद्र	रुद्राणी

(ङ) अंत में 'इया' जोड़कर–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
चिड़ा	चिड़िया
बंदर	बंदरिया
डिब्बा	डिबिया
गुड्डा	गुड़िया

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
बूढ़ा	बुढ़िया
चूहा	चुहिया
लोटा	लुटिया
कुत्ता	कुतिया

(च) राज्यों के अंत में 'नी' और 'इनी' जोड़कर–

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
ऊँट	ऊँटनी
जाट	जाटनी

पुल्लिग	स्त्रीलिंग
तपस्वी	तपस्विनी
स्वामी	स्वामिनी

सिंह	सिंहनी
भील	भीलनी
शेर	शेरनी
मोर	मोरनी
हंस	हंसिनी

आज्ञाकारी	आज्ञाकारिणी
तेजस्वी	तेजस्विनी
अभिमानी	अभिमानिनी
हितकारी	हितकारिणी
मनस्वी	मनस्विनी

(छ) शब्दों के अंत में 'इन' और वती/मती लगाकर–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
साँप	साँपिन
नाग	नागिन
लुहार	लुहारिन
नाती	नातिन
पापी	पापिन
भक्त	भक्तिन

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
श्रीमान	श्रीमती
धनवान	धनवती
गुणवान	गुणवती
रूपमान	रूपमती
भगवान	भगवती
बुद्धिमान	बुद्धिमती

(ज) अन्य अनेक प्रकार से–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
कवि	कवयित्री
विधुर	विधवा
भाई	बहन
विद्वान	विदुषी
आदमी	औरत
नर	मादा
सम्राट	साम्राज्ञी
युवक	युवती
भैंसा	भैंस
नेता	नेत्री
दाता	दात्री
वक्ता	वक्त्री
खरगोश	मादा खरगोश
कछुआ	मादा कछुआ

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
राजा	रानी
पिता	माता
बादशाह	बेगम
साधू	साध्वी
ससुर	सास
पति	पत्नी
पुरुष	स्त्री
वीर	वीरांगना
वर	वधू
कर्ता	कर्त्री
प्रबंधकर्ता	प्रबंधकर्त्री
भालू	मादा भालू
भेड़िया	मादा भेड़िया
उल्लू	मादा उल्लू

अध्यापन संकेत

बच्चों को यह बताएँ कि कुछ पदवाची शब्दों में लिंग आधार पर परिवर्तन नहीं होता है; जैसे– सभापति आ रहे हैं। (सभापतिन आ रही हैं।) यह गलत होगा।

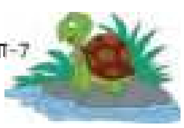

आइए, पुनरावृति करें

लिंग– स्त्री या पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द लिंग कहे जाते हैं।

लिंग

- **पुल्लिंग** (केवल पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द)
- **स्त्रीलिंग** (केवल स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द)

- कुछ शब्द सदैव स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे– तितली, मकड़ी, कोयल, भेड़, गिलहरी, मक्खी, चील, मछली आदि।
- कुछ शब्द सदैव पुल्लिंग होते हैं; जैसे– उल्लू, मच्छर, खरगोश, कछुआ आदि।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) लिंग के कितने भेद होते हैं?

(ख) कुछ सदैव स्त्रीलिंग होते हैं। उन शब्दों के उदाहरण बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) लिंग किसे कहते हैं?

(ख) पुल्लिंग किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ग) स्त्रीलिंग किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

2. दिए गए वाक्यों में रंगीन शब्दों के लिंग पहचान कर सामने लिखिए।

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
(क) मेरे घर तोता पाला गया है।	....	....
(ख) गरमी की छुट्टियों में मैं नैनीताल गया था।	....	....
(ग) उल्लू रात में जागता है, खरगोश दिन में।	....	....
(घ) बाग में कोयल फूक रही है।	....	....
(ङ) समारोह में अनेक कवयित्रियों ने भाग लिया।	....	....
(च) मैं अपने भाई और भाभी के साथ रहता हूँ।	....	....

3. दिए गए शब्दों के लिंग बदलिए।

दयावान –	आदमी –	युवक – ....
भवदीय –	प्रिय –	तपस्वी – ....
लेखक –	चालक –	लुहार – ....
जाट –	भील –	दाता – ....

4. **सारिणी में दिए शब्दों को उचित वर्ग में लिखिए।**

सास, वीर, मछली, खरगोश, राजा, पत्नी, औरत, मादा, भेड़िया, भवदीय, वृद्धा, महान, श्रीमती, गुणवान, दाता, अभिनेत्री, रूपवती

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

5. **दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

(क) 'वक्ता' का स्त्रीलिंग शब्द क्या होगा?

(i) वक्ती ☐ (ii) वाक्ती ☐ (iii) वक्ति ☐ (iv) वक्त्री ☐

(ख) 'भील' का स्त्रीलिंग रूप क्या होगा?

(i) भीला ☐ (ii) भिलंगना ☐ (iii) भिलनी ☐ (iv) भीलनी ☐

(ग) 'खरगोश' का स्त्रीलिंग शब्द क्या है?

(i) खरगोशी ☐ (ii) खरगोशिनी ☐ (iii) नर खरगोश ☐ (iv) मादा खरगोश ☐

सोचें-विचारें
Critical Thinking

6. **क्या स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग शब्दों को वचन के आधार पर बदला जा सकता है? सोचकर बताइए।**

खेल-खेल में
Brain Storming Activity

7. **दिए गए वर्ग में से पुल्लिंग-स्त्रीलिंग शब्दों का जोड़ा छाँटकर लिखिए।**

इं	द्र	चौ	ह	त	प	स्वि	नी	नि	मा	भि	अ
द्रा	से	बा	ल	अ	भि	मा	नी	वृ	द्धा	चि	ड़ा
णी	ठा	इ	वा	वृ	द्ध	त्र	हा	त्रा	छा	लो	टा
से	नी	न	ई	त	प	स्वी	चि	ड़ि	या	स्सी	चर
ठ	चौ	बे	ह	ल	वा	इ	न	लु	टि	या	स्सा

पुल्लिंग : ....

....

स्त्रीलिंग : ....

....

प्रेरणादायक मूल्य

जो राष्ट्र स्त्री–पुरुष में समानता रखता है, वह निरंतर विकास की ओर अग्रसर रहता है।

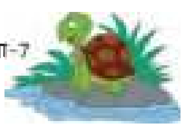

अध्याय 6

वचन (Number)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे वाक्यों में रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए।

तितली उड़ रही है।
तितलियाँ उड़ रही हैं।

गाय चर रही है।
गायें चर रही हैं।

लड़की गीत गा रही है।
लड़कियाँ गीत गा रही हैं।

बच्चो! ऊपर आपने देखा कि चित्रों में एक तितली उड़ रही है, एक गाय चर रही है और एक लड़की गीत गा रही है। यहाँ एक वस्तु को एकवचन कहा जाता है, वहीं अगले तीन चित्रों में- अनेक तितलियाँ उड़ती हुईं, बहुत-सी गायें चरती हुई तथा अनेक लड़कियाँ गीत गाती हुई दिख रही हैं। इनकी संख्या एक से अधिक होने पर यह बहुवचन कही जाती हैं। अतएव हम कह सकते हैं कि-

शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहा जाता है।

अब आइए, वचन के भेद को जानते हैं–

बच्चो! हमेशा यह ध्यान रखना होगा कि हिंदी भाषा में वचन दो प्रकार के होते हैं- एकवचन तथा बहुवचन। वहीं अंग्रेज़ी में भी वचन दो प्रकार के होते हैं- Singular Number तथा Plural Number किंतु संस्कृत भाषा में वचन तीन प्रकार के होते हैं- एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन ।

अब आइए, हिंदी में वचन के बारे में जानते हैं-

हिंदी भाषा में वचन दो प्रकार के होते हैं- एकवचन तथा बहुवचन।

1. **एकवचन–** शब्द के जिस रूप से उसके केवल एक का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–

लड़की नाचती है।
तोता मिर्च खाता है।
मालिन माला बना रही है।

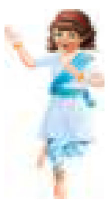

गाय दूध देती है।
पंखा चल रहा है।
नानी ने कहानी सुनाई।

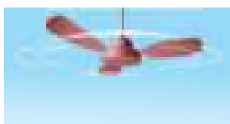

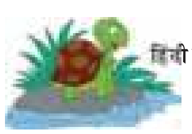

2. बहुवचन– शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक अर्थात् अनेक का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे–

तोते मिर्च खा रहे हैं।

मालिने मालाएँ बना रही हैं।

लड़कियाँ नाचती हैं।

गायें दूध दे रही हैं।

पंखे चल रहे हैं।

नानी ने कहानियाँ सुनाई।

यहाँ कई तोते, कई मालिनें, अनेक मालाएँ, कई लड़कियाँ, अनेक गायें, अनेक पंखे तथा अनेक कहानियाँ का बोध है। अत: यहाँ बहुवचन है।

अब आइए, यह जानें कि एकवचन से बहुवचन कैसे बनाए जाते हैं?

(क) 'आ' से समाप्त होने वाले शब्दों के अंत में 'ए' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
तोता	तोते	पत्ता	पत्ते
घड़ा	घड़े	छाता	छाते
जूता	जूते	पंखा	पंखे
रुपया	रुपये	भाला	भाले
ताला	ताले	बेटा	बेटे
लोटा	लोटे	कौआ	कौए
गन्ना	गन्ने	कीड़ा	कीड़े
पेड़ा	पेड़े	तारा	तारे
चश्मा	चश्मे	कुरता	कुरते
संतरा	संतरे	मेला	मेले
केला	केले	कपड़ा	कपड़े
गत्ता	गत्ते	कमरा	कमरे

(ख) 'आ' से समाप्त होने वाले शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
सभा	सभाएँ	कन्या	कन्याएँ
महिला	महिलाएँ	कथा	कथाएँ

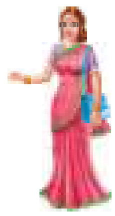

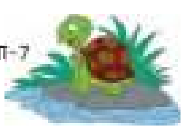

माला	मालाएँ	कविता	कविताएँ
लता	लताएँ	शाखा	शाखाएँ
माता	माताएँ	लेखिका	लेखिकाएँ
भाषा	भाषाएँ	अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
कला	कलाएँ	चिंता	चिंताएँ

(ग) 'अ' से समाप्त होने वाले शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कलम	कलमें	सड़क	सड़कें
किताब	किताबें	जुराब	जुराबें
दीवार	दीवारें	बात	बातें
चीज़	चीज़ें	गाय	गायें
पलक	पलकें	राह	राहें
पतंग	पतंगें	पुस्तक	पुस्तकें
बहन	बहनें	मूँछ	मूँछें

(घ) 'या' से समाप्त होने वाले शब्दों को 'याँ' करके-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लुटिया	लुटियाँ	खटिया	खटियाँ
चुटिया	चुटियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ
चुहिया	चुहियाँ	डिबिया	डिबियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ	पुड़िया	पुड़ियाँ

(ङ) 'उ' 'ऊ' से समाप्त होने वाले शब्दों के अंत में 'एँ' जोड़कर-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मधु	मधुएँ	धेनु	धेनुएँ
बहू	बहुएँ	वधू	वधुएँ
वस्तु	वस्तुएँ	ऋतु	ऋतुएँ

अध्यापन संकेत

आसपास के परिवेश में से (शब्द) संकलन करवाकर कोष तैयार करवाया जा सकता है। इससे छात्रों को पता चलेगा कि किन शब्दों का वचन परिवर्तन होता है और किन शब्दों का नहीं।

(च) इ, ई से समाप्त होने वाले शब्दों के अंत में 'इयाँ' जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
निधि	निधियाँ	जाति	जातियाँ
नदी	नदियाँ	दासी	दासियाँ
लड़की	लड़कियाँ	लिपि	लिपियाँ
चिट्ठी	चिट्ठियाँ	मुरगी	मुरगियाँ
पत्ती	पत्तियाँ	रीति	रीतियाँ
सखी	सखियाँ	मकड़ी	मकड़ियाँ
चाबी	चाबियाँ	रस्सी	रस्सियाँ
सीढ़ी	सीढ़ियाँ	मक्खी	मक्खियाँ
छुट्टी	छुट्टियाँ	शक्ति	शक्तियाँ

(छ) जन, वृंद, गण आदि जोड़कर–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्मचारी	कर्मचारीवर्ग	गुरु	गुरुजन
मंत्री	मंत्रीगण	छात्र	छात्रगण
पाठक	पाठकगण	प्रिय	प्रियजन
सैनिक	सैनिकदल	विद्यार्थी	विद्यार्थीगण
हम	हम लोग	कवि	कविगण
मुनि	मुनिगण	अमीर	अमीर लोग
नर्तक	नर्तकदल	गरीब	गरीब लोग

आइए, पुनरावृति करें

- **वचन** शब्दों के एक या अनेक का बोध कराने वाले शब्द होते हैं।
- वचन दो प्रकार के होते हैं– एकवचन तथा बहुवचन।
- एक का बोध कराने वाले शब्द **एकवचन** कहलाते हैं।
- एक से अधिक का बोध कराने वाले शब्द **बहुवचन** कहलाते हैं।
- एकवचन से बहुवचन में परिवर्तन भी किया जाता है।

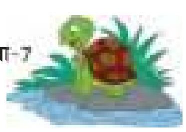

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य
Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वचन से किसका बोध होता है?

(ख) बहुवचन किसे कहते हैं?

लेखन कार्य
Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) एकवचन किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

(ख) बहुवचन की परिभाषा तथा उदाहरण लिखिए।

(ग) बहुवचन कैसे बनाए जाते हैं विस्तारपूर्वक बताइए।

2. दिए गए शब्दों को बहुवचन में बदलिए।

बुढ़िया –	तितली –	कुतिया – ....
धेनु –	गत्ता –	गन्ना – ....
दीवार –	कविता –	सभा – ....
तोता –	घड़ा –	बहू – ....

3. दिए गए शब्दों को एकवचन में बदलिए।

लताएँ –	गुरुजन –	तोते – ....
चीज़ें –	कविताएँ –	लड़कियाँ – ....
मोज़े –	जुराबें –	मित्रगण – ....
छुट्टियाँ –	बंदरियाँ –	नर्तकदल – ....
मूछें –	बहुएँ –	पत्तियाँ – ....
दीवारें –	पतंगें –	मुरगियाँ – ....

4. दिए गए वाक्यों के सामने उनके वचन लिखिए।

(क) पार्क में रामकथा हो रही है। – ....

(ख) बंदरिया पेड़ पर बैठी है। – ....

(ग) आकाश में पक्षीवृंद उड़ रहे हैं। – ....

(घ) सौरभ की पतंग ऊँची उड़ रही है। – ....

5. **दिए गए वाक्यों में सही शब्द को एकवचन में बदलिए-**

(क) भोजन पर अनेक .... भिनभिना रही है। (मक्खी / मक्खियाँ)

(ख) भारत .... का देश कहा जाता है। (त्योहार / त्योहारों)

(ग) रंजना ने नई .... खरीदी। (चुनीयाँ / चुनरी)

(घ) लॉकडाउन में लोगों ने .... नहीं उड़ाई। (दावत / दावतें)

(ङ) आजकल सुशांत केस सभी के लिए .... बना है। (सुर्खी / सुर्खियाँ)

(च) बिल्ली ने .... पकड़ ली है। (चुहियॉं / चुहिया)

(छ) हमको .... काम स्वयं करना चाहिए। (अपना / अपने)

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. **कुछ ऐसे शब्दों की सूची सोचकर बनाइए जिनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. **दी गई सारिणी में से शब्द और उनके परिवर्तित वचन वाले शब्द छाँटकर लिखिए-**

तो	ते	प	ब	प	चि	म	छ	लि	याँ	
ता		त्ते	क	री	ट्ठी	ति	त	लि	याँ	
कों	प	लें	री	क्षा	पा	ठ	क	व	र्ग	
प	त्ता	र	च	ना	एँ	अ	मी	र	लो	ग
ल	म	क्खी	ब	क	रि	याँ	ना	रि	याँ	ना
प	री	क्षा	एँ	स	खी	ट्टि	पा	क	क	री
ति	त	ली	स	खि	याँ	मि	ट्टी	अ	मी	र

वचन	परिवर्तित वचन
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

प्रेरणादायक मूल्य

"एक-एक करके बनते हैं अनेक, अनेकता में एकता करे राष्ट्र को एक।"

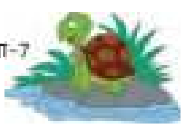

अध्याय 7

सर्वनाम
(Pronoun)

पढ़िए और समझिए

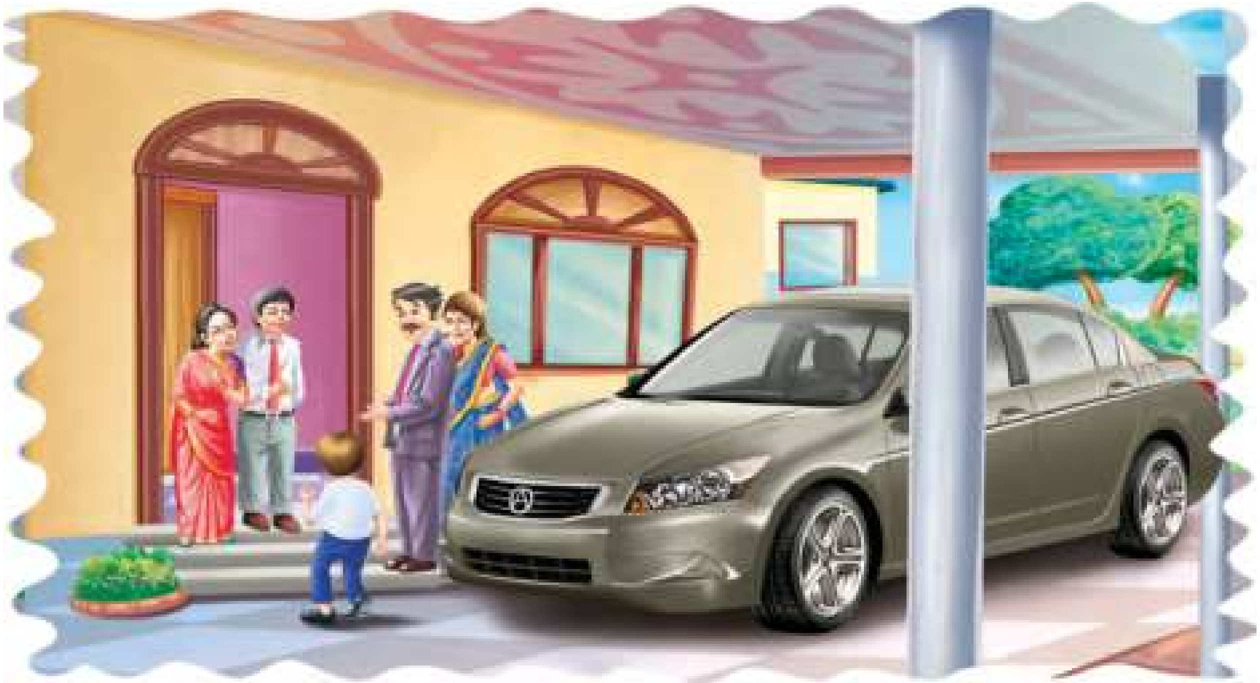

मोहन और मोहन के मम्मी-पापा दिनेश के घर गए हैं। मोहन, मोहन की मम्मी-पापा के साथ कार से नीचे उतर गया। दरवाज़े पर दिनेश के मम्मी-पापा मोहन और मोहन के मम्मी-पापा का स्वागत कर रहे हैं। मोहन ने दिनेश को नहीं देखा। दिनेश रसोई में मोहन और मोहन के मम्मी-पापा के लिए नाश्ता सजा रहा था। दिनेश के मम्मी-पापा ने मोहन के मम्मी-पापा से नमस्ते की। फिर मोहन के मम्मी-पापा को घर के अंदर ले गए। घर में दिनेश ने भी मोहन के मम्मी-पापा को हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

अब यहाँ इन्हीं वाक्यों को इस प्रकार से पढ़िए।

मोहन और उसके मम्मी-पापा दिनेश के घर गए हैं। मोहन अपने मम्मी-पापा के साथ कार से उतर गया। दरवाज़े पर दिनेश के मम्मी-पापा, उसका और उसके मम्मी-पापा का स्वागत कर रहे हैं। मोहन ने दिनेश को नहीं देखा। वह रसोई में मोहन और उसके मम्मी-पापा के लिए नाश्ता सजा रहा था। उसके मम्मी-पापा ने मोहन के मम्मी-पापा को नमस्ते कही। फिर वे उनको घर के अंदर ले गए। घर में दिनेश ने भी मोहन के मम्मी-पापा को हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

बच्चो! मोहन और उसके मम्मी-पापा के लिए उसके, अपने, वह, वे, उनको शब्दों का प्रयोग किया गया है। यहाँ बार-बार उनके नाम नहीं लिखने के कारण भाषा सुंदर हो गई है। पूरी बात भी समझ में आ रही है। नाम के बदले प्रयोग किए गए ये रंगीन शब्द ही सर्वनाम कहलाते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि-

संज्ञा शब्द के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले सभी शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

अब आइए, सर्वनाम शब्दों के भेदों की चर्चा करें-

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के छह भेद होते हैं– 1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. संबंधवाचक सर्वनाम 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम।

अब इनके बारे में विस्तारपूर्वक अध्ययन करते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम:

ऐसे सर्वनाम शब्द बोलने वाले, सुनने वाले तथा किसी अन्य के लिए प्रयोग किए जाते है; जैसे- तुम, मैं, उसके, वह आदि।

तुम लखनऊ से कब आए?
मैं अभी कुछ काम कर रहा हूँ।
उसके पास तो रामू को जाना था।
वह बहुत दिनों से बीमार है।

पुरुषवाचक सर्वनाम भी तीन प्रकार के होते हैं:

(क) उत्तम पुरुष: उत्तम पुरुष सर्वनाम शब्द का प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है; जैसे- मैं, हम, मेरा, मुझे हमारा।

मुझे विद्‌यालय से पुरस्कार मिला है।
मेरा कार्य अभी चल रहा है।
मुझे कुछ नहीं चाहिए।

(ख) मध्यम पुरुष: इस सर्वनाम का प्रयोग श्रोता या सुनने वाले के लिए किया जाता है; जैसे- तुम, तुमने, तुमसे, तुम्हारे।

तुम कहीं नहीं जाओगे।
तुमने यह कार्य अच्छा नहीं किया।
तुम्हारे गाँव में कौन-सी फसल बोई गई है?

(ग) अन्य पुरुष: इस सर्वनाम का प्रयोग वक्ता या श्रोता किसी अन्य व्यक्ति के लिए करता है; जैसे– वह, वे, उनसे, उन्होंने आदि।

वह बड़ा ईमानदार व्यक्ति है।
वे सब क्यों भाग रहे हैं?
उन्होंने अब तक गाड़ी पकड़ ली होगी।

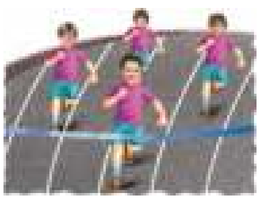

2. निश्चयवाचक सर्वनाम:

ऐसे सर्वनाम दूर या पास के व्यक्तियों या वस्तुओं का निश्चयात्मक बोध कराते हैं; जैसे–

वह कार पिता जी की है।

ये गहनें दादी जी के हैं।

वे लोग कल घर चले गए।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम:

जो सर्वनाम शब्द किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं, वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–

दरवाजे पर कोई आया है।

क्या कुछ खाने को मिलेगा?

गाड़ी पकड़ने किसे जाना है?

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम:

ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम शब्द कहलाते हैं; जैसे–

यह पुस्तक किसकी है?

तुम कहाँ जा रहे हो?

आज तुम्हें क्या काम करना है?

5. संबंधवाचक सर्वनाम:

जो सर्वनाम शब्द वाक्यों में आए संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के बीच संबंध होने की जानकारी देते हैं, वे संबंधवाचक सर्वनाम कहे जाते हैं; जैसे–

जो पढ़ता है, वह सफल होता है।

जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

जिसे बुलाओगे, वही आएगा।

6. निजवाचक सर्वनाम:

ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग कर्ता द्वारा अपनेपन का बोध कराने के लिए किया जाता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–

राजेश अपनेआप चला गया।

रुकिए, मैं खुद आकर देखूँगा।

सबको स्वयं काम करने की आदत डालनी चाहिए।

अब आइए, जानें कि सर्वनाम शब्दों की रूप-रचना किस प्रकार की जाती है? वास्तव में जब हम सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करते समय कारक चिह्नों का प्रयोग करते हैं, तो सर्वनाम शब्दों के रूप में परिवर्तन आ जाता है–

इनकी रूप-रचना इस प्रकार होती है–

'मैं' उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	मेरे द्वारा, मुझसे	हमसे, हमारे द्वारा
संप्रदान	मेरे लिए, मुझको	हमको, हमारे लिए
अपादान	मुझसे	हमसे
संबंध	मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे
अधिकरण	मुझमें, मुझपर	हममें, हम पर

'तुम' मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तू, तुमने, तूने	तुम, तुमने, तुम सबने
कर्म	तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
करण	तेरे द्वारा, तुझसे	तुमसे, तुम्हारे द्वारा
संप्रदान	तुझको, तेरे लिए	तुमको, तुम्हारे लिए
अपादान	तुझसे (अलग होने)	तुमसे (अलग)
संबंध	तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
अधिकरण	तुझमें, तुझपर	तुममें, तुझ पर

'वह' अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	उसे, उसको	उनको, उन्हें
करण	उससे, उसके द्वारा	उनसे, उनके द्वारा
संप्रदान	उसको, उसके लिए	उनको, उनके लिए
अपादान	उससे (अलग होने)	उससे (अलग होने)
संबंध	उसका, उसकी, उससे	उस, उनकी, उनमें
अधिकरण	उसमें, उस पर	उनमें, उन पर

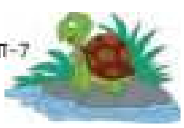

'यह' निश्चयवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने
कर्म	इसे, इसको	इनको, इन्हें
करण	इससे, इसके द्वारा	इनसे, इनके द्वारा
संप्रदान	इसको, इसके लिए	इनको, इनके लिए
अपादान	इससे (अलग होने)	इनसे (अलग होने)
संबंध	इसका, इसकी, इससे	इनका, इनकी, इनके
अधिकरण	इसमें, इस पर	इनमें, इन पर

'कोई' अनिश्चयवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कोई, किसी ने	कोई, किन्हीं ने
कर्म	किसी को	किन्हीं को
करण	किसी से, किसी के द्वारा	किन्हीं से, किन्हीं के द्वारा
संप्रदान	किसी को, किसी के लिए	किन्हीं को, किन्हीं के लिए
अपादान	किसी से (अलग)	किन्हीं से (अलग)
संबंध	किसी का, किसी की, किसी के	किन्हीं का, किन्हीं की, किन्हीं के
अधिकरण	किसी में, किसी पर	किन्हीं में, किन्हीं पर

'कौन' प्रश्नवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कौन, किससे	कौन, किन्होंने
कर्म	किसे, किसके, किसको	किन्हें, किनके, किनको
करण	किससे, किसके द्वारा	किनसे, किनके द्वारा
संप्रदान	किसके लिए, किसको	किनके लिए, किनको
अपादान	किससे (अलग)	किनसे (अलग होने)
संबंध	किसका, किसकी, किसके	किनका, किनकी, किनके
अधिकरण	किस पर, किसमें	किन पर, किन में

अध्यापन संकेत बच्चों को सर्वनाम शब्दों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करें तथा वाक्यों में सर्वनाम शब्दों का प्रयोग सटीकता के साथ करना सिखाएँ।

‘जो’ पुरुषवाचक सर्वनाम

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	जो, जिसने	जो, जिन्होंने
कर्म	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
करण	जिससे, जिसके द्‌वारा	जिनसे, जिनके द्‌वारा
संप्रदान	जिसको, जिसके लिए	जिनको, जिनके लिए
अपादान	जिससे (अलग)	जिनसे (अलग होने)
संबंध	जिसका, जिसकी, जिसके	जिनकी, जिनका, जिनके
अधिकरण	जिस पर, जिसमें	जिन पर, जिनमें

आइए, पुनरावृति करें

- संज्ञा के बदले प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम
- पुरुषवाचक
  - (क) उत्तम पुरुष
  - (ख) मध्यम पुरुष
  - (ग) अन्य पुरुष
- निश्चयवाचक
- अनिश्चयवाचक
- संबंधवाचक
- प्रश्नवाचक
- निजवाचक

- सर्वनामों की रूपरेखा में कारक चिह्नों के कारण परिवर्तन होता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) सर्वनाम में किन के कारण परिवर्तन होता है?

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम के कितने उपभेद हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) सर्वनाम किसे कहते हैं?

(ख) सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं?

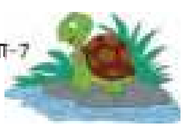

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के कितने भेद होते हैं? किसी एक को परिभाषित कीजिए।

(घ) संबंधवाचक सर्वनाम की परिभाषा दीजिए।

2. दिए गए वाक्यों में से सर्वनाम शब्दों को छाँटकर उनके भेद का नाम लिखिए।

(क) वह इस वर्ष भी पास नहीं हुआ। ....

(ख) जो जैसा करेगा, वह वैसा ही भरेगा। ....

(ग) आप सोफ़े पर बैठ जाइए। ....

(घ) कोई नहीं पहुँचा है। ....

(ङ) वह मेरे घर अवश्य आएगा। ....

(च) पिता जी अपनेआप चले गए। ....

(छ) मैं अपना गृहकार्य स्वयं करता हूँ। ....

3. दिए गए सर्वनाम शब्दों की उनके सही भेद तक रेखा खींचिए।

(क) जो, वह	(i) निजवाचक
(ख) कोई, किसे	(ii) निश्चयवाचक
(ग) स्वयं, खुद	(iii) प्रश्नवाचक
(घ) वह, वे	(iv) संबंधवाचक
(ङ) मैं, हम, तुम, सब	(v) पुरुषवाचक
(च) कौन, किसे	(vi) अनिश्चयवाचक

4. दिए गए सर्वनाम शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) जिसकी, उसकी : ....

(ख) उन्हें : ....

(ग) कौन : ....

(घ) कुछ : ....

(ङ) किन्होंने : ....

5. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति सही शब्द चुनकर कीजिए।

(क) मेरे साथ .... भी चलना है। (तुम / तुमको / किसको)

(ख) तुम .... काम करो। (तुम्हारा / अपना / दूसरों)

(ग) .... नानी जी आई हैं। (हमारी / मेरी / सबकी)

(घ) .... नौकर को मेरे पास बुलाओ। (कोई / एक / किसी)

(ङ) मैं .... घर जाता हूँ। (मेरे / अपने / कोई)

(च) .... यह काम शोभा नहीं देता। (तुमको / तुम्हें / तुम)

6. रिक्त स्थानों की पूर्ति सही शब्द चुनकर कीजिए।

(क) विदेश से आए लोगों में से .... को कोरोना हुआ था।

(i) सब ☐ (ii) कुछ ☐ (iii) अधिक ☐ (iv) कोई ☐

(ख) मोहन सारे काम .... से करता है।

(i) उस ☐ (ii) दूसरे ☐ (iii) स्वयं ☐ (iv) कोई ☐

(ग) मुझे .... बुला रहा है।

(i) कुछ ☐ (ii) कहाँ ☐ (iii) तुम ☐ (iv) कोई ☐

(घ) अभी-अभी मामा जी .... घर आए हैं।

(i) मामी जी ☐ (ii) सबके ☐ (iii) हमारे ☐ (iv) वहाँ ☐

7. इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों की जगह सर्वनाम रूप लिखकर वाक्यों को पुनः लिखिए।

(क) राधा सुशिक्षित लड़की है, राधा नेकदिल भी है।

....

(ख) काजल एक होशियार लड़की है, इसलिए काजल को पुरस्कार मिला।

....

(ग) कृष्ण मक्खन खाना पसंद करते थे इसलिए कृष्ण मक्खन चुराकर खाते थे।

....

(घ) कौए को प्यास लगी थी इसीलिए कौए ने प्रयास कर पानी पिया।

....

8. दिए गए वाक्यों में सर्वनाम का सही रूप लिखकर वाक्य पुनः लिखिए।

(क) तुम्हारा बहन का नाम क्या है? ....

(ख) शिकारी ने जो शेर मारा था उसने जिंदा है। ....

(ग) मेरे को आम अच्छा लगता है। ....

(घ) हमको तुमकी कविता अच्छी लगी। ....

(ङ) जिनको बहन अध्यापिका है। ....

9. दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों के बहुवचन बनाकर वाक्यों को पुनः लिखिए।

(क) मैं प्रतिदिन सैर को जाता हूँ।

....

(ख) तुम्हें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे किसी को दु:ख पहुँचे।

....

(ग) मैं भारत का नागरिक हूँ। मेरा कर्तव्य देश की रक्षा करना है।

....

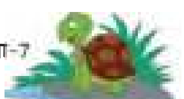

सोचें-विचारें

Critical Thinking

10. 'आप भला तो जग भला' इस लोकोक्ति में सर्वनाम शब्द आए हैं। आप अन्य लोकोक्तियों को कक्षा-चर्चा के द्वारा लिखें और उनमें सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कीजिए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

11. सर्वनाम शब्दों की शब्दाक्षरी का खेल कक्षा में खिलवाएँ।

12. अध्यापक/अध्यापिका कुछ सर्वनाम शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर छात्रों से उनके वाक्य प्रयोग करवा सकते हैं।

प्रेरणादायक मूल्य

हमें सदैव बड़ों को आदर प्रकट करने हेतु तुम्हारा, तुम आदि शब्दों का त्याग कर 'आप' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

अध्याय 8

विशेषण
(Adjective)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखकर उनके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

यह एक सुंदर उद्यान है। इसमें अनेक पेड़-पौधे लगे हैं। कुछ बच्चे छोटी-छोटी साइकिलें चला रहे हैं। कुछ लोग खुले जिम पर कसरत कर रहे हैं। उद्यान में खुशबूवाले और सुंदर फूल खिले हैं। वहाँ की घासें भी हरी-हरी हैं। अनेक बुजुर्ग लोग भी प्रसन्नता से घूम रहे हैं।

बच्चो! आपने यहाँ देखा कि सुंदर उद्यान की विशेषता है। पेड़-पोधों की संख्या का अनेक से पता चल रहा है। छोटी-छोटी साइकिल की विशेषता है। जिम की विशेषता खुले हैं। फूलों की विशेषता का पता उनकी खुशबू से लग रहा है। उद्यान की घासों की विशेषता हरी-हरी से पता चलती है। कुछ पेड़ों की विशेषता उनके फलदार होने से है। सड़कें भी अच्छी बनी हैं। सड़कों की विशेषता अच्छी से जानी जा रही है। इस प्रकार ये सभी विशेषता वाले शब्द विशेषण कहे जाते हैं। इन्हें हम इस प्रकार से भी कह सकते हैं कि–

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषताएँ या गुण-दोषों आदि को बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

अब ये विशेषताएँ अलग-अलग होती हैं; जैसे–

गुण-दोष वाली विशेषता: ये किसी वस्तु के स्वभाव, स्थान या भाव आदि के बारे में बताते हैं; जैसे-

ऊँचे पहाड़, सुरीला गीत, चतुर खरगोश
अच्छी माँ, तेज़ छात्र, भव्य आरती आदि।

वस्तु की मात्रा संबंधी विशेषता: ऐसे शब्द जिनसे वस्तु की मात्राओं/माप-तौल की जानकारी मिलती है; जैसे-

दो किलो टमाटर, तीन लीटर दूध, पाँच मीटर कपड़ा
एक कैरेट अंडे, पाँच सौ गज जमीन, कुछ दवाइयाँ
पच्चीस लीटर पेट्रोल, चार तोला सोना, सवा किलो पेड़े आदि।

संज्ञा से पहले विशेषता: कुछ शब्द संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताने लगते हैं; जैसे-

उसका घर, यह विद्यालय, वे वृक्ष, वह लड़की, कोई छात्र, मेरा घर आदि।

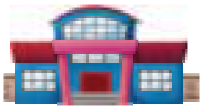

अब आइए, विशेषण शब्दों के भेदों को जानें:

विशेषण के चार भेद होते हैं- 1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण 3. परिमाणवाचक विशेषण 4. सार्वनामिक विशेषण।

1. गुणवाचक विशेषण:

ऐसे विशेषण अपने विशेष्य (संज्ञा/सर्वनाम) के गुणों, रूप, रंग, आकार, गंध, स्वाद, गुण-दोष आदि का बोध कराते हैं; जैसे–

सुंदर घर

खुशबूदार फूल

ऊँची इमारत

यहाँ घर की विशेषता सुंदर शब्द से, फूल की विशेषता खुशबूदार शब्द से तथा इमारत की विशेषता उसकी ऊँचाई से प्रदर्शित हो रही है। कुछ गुणवाचक विशेषण शब्द निम्नलिखित हैं–

स्वाद-गंध	: खट्टा, मीठा, फीका, चटपटा आदि।
गुण-दोष	: ईमानदार, बुद्धिमान, योग्य, दुष्ट, आलसी, फुर्तीला आदि।
रंग-रूप	: सुनहरी, लाल, हरी, फिरोज़ी, चमकीली आदि।
दशा-अवस्था	: अमीर, लंबा, गोरा, पतला, स्वस्थ, कमज़ोर आदि।
आकार-प्रकार	: गोल, चौकोर, लंबा, नाटा, छोटा, मोटा आदि।
स्थान-देशकाल	: भारतीय, ग्रामीण, प्राचीन, शहरी, चीनी आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण:

ऐसे विशेषण शब्द जो विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) की संख्या का बोध कराते हैं, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

हमारी कक्षा में तीस छात्र हैं।

गमले में चार फूल खिले हैं।

माता जी के पास कई साड़ियाँ हैं।

मेरे घर तीन लीटर दूध रोज़ आता है।

संख्यावाचक विशेषण के भी दो उपभेद होते हैं–

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण: ऐसे विशेषण शब्द जो अपने विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) की निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण शब्द कहे जाते हैं; जैसे–

पचास मज़दूर पैदल जा रहे हैं।

शैक्षिक भ्रमण के लिए बीस छात्र गए।

आजकल टमाटर साठ रुपए किलो हो गया है।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण: ऐसे विशेषण शब्द जो अपने विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) की किसी निश्चित संख्या का बोध नहीं कराते हैं, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहे जाते हैं; जैसे–

अब जाकर कुछ गाड़ियाँ चलने लगी हैं।

रैली में हज़ारों लोगों ने भाग लिया।

राकेश को थोड़ा बुखार अभी भी है।

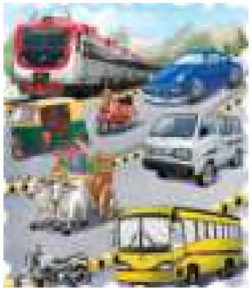

3. परिमाणवाचक विशेषण:

ऐसे विशेषण शब्द जिनसे किसी वस्तु के माप-तौल आदि का पता चलता है, वे परिमाण (मात्रा) वाचक विशेषण कहे जाते हैं; जैसे–

दो किलो प्याज़ ले आओ।

कुछ नमकीन खाने को दो।

तीन मीटर कपड़ा कमीज़ के लिए लगेगा।

यहाँ प्रयुक्त शब्द दो किलो, कुछ, तीन मीटर से परिमाण (मात्रा) माप-तौल का पता लग रहा है। इसलिए ये सब परिमाणवाचक विशेषण शब्द हैं।

परिमाणवाचक विशेषण के भी दो उपभेद होते हैं–

(क) निश्चित परिमाणवाचक: ऐसे विशेषण शब्द जिनसे किसी निश्चित परिमाण (मात्रा) का पता चलता है, वे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे–

आज मैंने बीस किलो अखबार बेचे।
मेरी कार में बीस लीटर पेट्रोल भरा है।
रजनी ने तीन नई साड़ियाँ खरीदीं।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक शब्द: ऐसे विशेषण शब्द जिनसे किसी निश्चित परिमाण का बोध नहीं होता है, उन्हें अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहा जाता है; जैसे–

मुझे खाने में थोड़ी दही दे देना।
अधिक भोजन करने से बचना चाहिए।
हमें कम चीनी का इस्तेमाल करना चाहिए।

4. सार्वनामिक विशेषण:

ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग संज्ञा के आगे विशेषण के रूप में किया जाता है, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है। इन्हें संकेतवाचक विशेषण भी कहा जाता है; जैसे–

यह घर संजना का है।
उस विद्यालय में मेरा दाखिला हुआ है।
ये तो बहुत महँगी साड़ी होगी।
वह उद्यान बड़ा है।

विशेषण शब्दों की रूप-रचना

विशेषण शब्दों की रचना अनेक तरह से की जाती है–

(क) संज्ञा शब्दों से–

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
लखनऊ	लखनवी	भारत	भारतीय
रंग	रंगीन/रंगीला	नमक	नमकीन
परिवार	पारिवारिक	स्वस्थ	स्वास्थ्य
लालच	लालची	अर्थ	आर्थिक
झगड़ा	झगड़ालू	धर्म	धार्मिक
ग्राम	ग्रामीण	शहर	शहरी
गुलाब	गुलाबी	राष्ट्र	राष्ट्रीय
अमेरिका	अमेरिकी	पत्थर	पथरीला

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
कंकड़	कंकरीला	नगर	नागरिक
भाग्य	भाग्यशाली	पक्ष	पाक्षिक
संतोष	संतोषी	लूट	लुटेरा
धन	धनी	नाटक	नाटकीय
अपमान	अपमानित	रौब	रौबीला
पुष्प	पुष्पित	चिह्न	चिह्नित

(ख) क्रिया शब्दों से–

क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
पढ़ना	पढ़ाकू	सड़ना	सड़ियल
खेल	खिलाड़ी	घूमना	घुमक्कड़
लड़ना	लड़ाकू	कमाना	कमाऊ
चलना	चाल/चालू	बेचना	बिकाऊ
भागना	भगोड़ा	अड़ना	अड़ियल
घटना	घटित	रक्षा	रक्षक
मिलना	मिलनसार	खाना	खाऊ/खब्बू
रोता	रोतड़ू/रोवना	पठ	पठित
जिद	जिद्दी	क्रोध	क्रोधी
जागना	जागरण	करना	कर्मी

(ग) सर्वनाम शब्दों से–

सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
कौन	कौन–सा/कैसा	मैं	मेरा
यह	ऐसा	कोई	कैसा
तुम	तुम्हारा	वह	वैसा
हम	हमारा	जो	जैसा

(घ) अव्यय शब्दों से–

अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
बाहर	बाहरी	भीतर	भीतरी
आगे	अगला	नीचे	निचला

अध्यापन संकेत छात्रों को विशेषण का व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए उनसे कुछ वाक्य लिखने को कहें और फिर उन वाक्यों में से छात्रों से विशेषण का चयन करवाएँ।

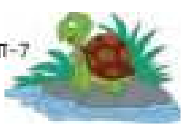

आइए, पुनरावृत्ति करें

- **विशेषण**– संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेष बातें (विशेषता) बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

विशेषण

- गुणवाचक
- संख्यावाचक
  - (क) निश्चित संख्या
  - (ख) अनिश्चित संख्या
- परिमाणवाचक
  - (क) निश्चित परिमाण
  - (ख) अनिश्चित परिमाण
- सार्वनामिक

- अनेक शब्दों से विशेषण बनाए जाते हैं।
- गुणवाचक विशेषण– गुण–दोष, आकार–प्रकार आदि को बताने वाले शब्द होते हैं।
- विशेषण शब्दों की रचना अनेक शब्दों से होती है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) संख्यावाचक विशेषण के कितने उपभेद हैं?

(ख) विशेषण शब्द का एक उदाहरण बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) विशेषण किसे कहते हैं?

(ख) विशेषण कितने प्रकार के होते हैं? किसी एक की परिभाषा दीजिए।

(ग) विशेषण शब्दों की रचना किस प्रकार होती है?

(घ) संकेतवाचक विशेषण की परिभाषा लिखिए।

2. दिए गए वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर उनके सामने लिखिए।

(क) डालियों पर पके आम लटके हैं। ....

(ख) हमारे लिए एक पैकेट कलम ले आना। ....

(ग) उस लड़की को बुलाओ। ....

(घ) दीवार पर सफ़ेदी करवानी है। ....

(ङ) कुछ फल लाकर मुझे भी दे दो। ....

(च) दीपक में थोड़ा घी डाल देना। ....

(छ) अब तो कुछ मीठा हो जाए। ....

(ज) यहाँ से ग्रामीण क्षेत्र शुरू होता है। ....

3. दिए गए शब्दों से विशेषण शब्द बनाकर लिखिए।

झगड़ा	–	पढ़ना	– ....
पक्ष	–	पत्थर	– ....
घूमना	–	कमाना	– ....
राष्ट्र	–	बेचना	– ....
नीच	–	रंग	– ....
इतिहास	–	लालच	– ....
मन	–	कौन	– ....

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति सही शब्द चुनकर कीजिए।

(क) मम्मी जी हमें हमेशा .... भोजन देती हैं।

(i) बासी ☐ (ii) बेकार ☐ (iii) ताज़ा ☐ (iv) ताजगी ☐

(ख) हमारे घर रोज़ .... दूध आता है।

(i) दो किलो ☐ (ii) दो मीटर ☐ (iii) दो गज ☐ (iv) दो लीटर ☐

(ग) मम्मी जी मेरे लिए बाज़ार से .... ड्रेस ले आई हैं।

(i) सामान्य ☐ (ii) खराब ☐ (iii) बढ़िया ☐ (iv) कुछ नहीं ☐

(घ) हमारे विद्यालय में .... फूल लगे हैं।

(i) कोई ☐ (ii) खुशबूवाले ☐ (iii) बदबूवाले ☐ (iv) गंदे ☐

5. दिए गए चित्रों के लिए दो-दो विशेषण शब्द लिखिए।

(क) तोता – ....

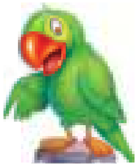

(ख) गाय – ....

(ग) घर – ....

(घ) बगीचा – ....

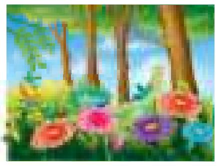

(ङ) पेंटिंग – ....

(च) डॉ. कलाम – ....

(छ) तिरंगा – ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. हमें किन विशेषताओं को धारण करना चाहिए? कक्षा में चर्चा-संवाद करके पाँच वाक्य लिखिए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. दिए गए वर्ग में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए।

च	स	न	ग्रा	म	बे	न	सुं
म	र	वी	मी	ड़	ई	म	द
की	ल	न	ण	की	मा	की	र
ला	चा	र	मी	ला	न	न	
कु	क	मी	ठा	बु	द्धि	मा	न
छ	म	को	म	ल	थो	ड़ा	सा

....

....

....

....

....

प्रेरणादायक मूल्य

सद्गुणों को सदैव धारण करना चाहिए फिर भले ही वे किसी भी वर्ग, जाति एवं धर्म से क्यों न मिलते हों।

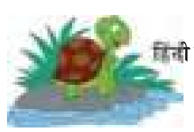

अध्याय 9

क्रिया
(Verb)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को पहचानिए और उनके नीचे लिखे वाक्यों के रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए–

रंजन कहानी लिखता है।

हवाई जहाज़ उड़ गया।

अध्यापिका जी पाठ पढ़ाएँगी।

यहाँ ऊपर लिखे वाक्यों में लिखता है, उड़ गया तथा पढ़ाएँगी से उनके कर्ता द्वारा काम किए जाने की जानकारी मिल रही है। काम संबंधी शब्द होने के कारण ये सब **क्रिया** शब्द कहे जाएँगे। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि–

ऐसे शब्द जिनसे किसी कार्य के करने या होने का पता चले, उन्हें क्रिया शब्द कहते हैं।

यहाँ हमें इस बात पर भी विचार करना होगा कि क्रिया में दो बातें कही गई हैं। पहली, क्रिया का होना; दूसरी, क्रिया का करना। अब इन उदाहरणों को देखें –

कमरे में मेज़ रखी है।

बच्चे कक्षा में बैठे हैं।

बच्चे अंत्याक्षरी खेल रहे हैं।

प्रथम दो उदाहरणों में रखी है, बैठे हैं, इससे यह पता चल रहा है कि कार्य हो चुका है यानी कि कार्य का होना। मेज़ कमरे में रखी है (रखी जा चुकी है) और बच्चे कक्षा में बैठे हैं यानी कि बैठ चुके हैं। कहने का अर्थ है

कि कार्य हो चुका है, इसे ही कार्य का होना कहा जाता है। तीसरे उदाहरण में बच्चे अंत्याक्षरी खेल रहे हैं अर्थात् अंत्याक्षरी खेलने की क्रिया अभी भी हो रही है। इसे ही क्रिया का 'करना' कहा जाता है।

अब आइए, यह जानें कि क्रिया के कितने रूप होते हैं?

क्रिया के दो रूप होते हैं– (क) धातु रूप तथा (ख) सामान्य रूप।

(क) धातु रूप– क्रिया के मूल रूप को धातु रूप कहते हैं। इसके अंत में 'ना' नहीं लगता है; जैसे– लिख, पढ़, चढ़, हँस, देख, बोल, सुन, चल, उठ आदि।

(ख) सामान्य रूप– क्रिया के मूल रूप (धातु रूप) के अंत में 'ना' जोड़ देने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है; जैसे–

लिख	+	ना	=	लिखना	पढ़	+	ना	=	पढ़ना	चढ़	+	ना	=	चढ़ना
गा	+	ना	=	गाना	पक	+	ना	=	पकना	हँस	+	ना	=	हँसना
देख	+	ना	=	देखना	सुन	+	ना	=	सुनना	सुन	+	ना	=	सुनना
उठ	+	ना	=	उठना	रो	+	ना	=	रोना	खो	+	ना	=	खोना

अब आइए, क्रिया के भेदों को जानें।

क्रिया के भेद दो आधारों पर निश्चित किए गए हैं–

1. **कर्म के आधार पर :** कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं– (क) सकर्मक क्रिया (ख) अकर्मक क्रिया
2. **रचना के आधार पर :** रचना के आधार पर क्रिया के चार भेद माने गए हैं– (क) संयुक्त क्रिया (ख) नामधातु क्रिया (ग) प्रेरणार्थक क्रिया (घ) पूर्वकालिक क्रिया।

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद–

(क) सकर्मक क्रिया– सकर्मक का अर्थ है, कर्म के साथ क्रिया। वह क्रिया जिसके साथ कर्म जुड़ा हो और क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–

माता जी खाना बनाएँगी।

धोबिन कपड़े सुखा रही है।

नंदन दूध पी रहा है।

बच्चो! इन उदाहरणों में खाना, कपड़े और दूध कर्म शब्द हैं। क्रिया का प्रभाव इन पर ही पड़ रहा है, न कि कर्ता पर।

अध्यापन संकेत बच्चों को कुछ चित्र दिखाएँ। तदोपरांत उनसे कक्षा में चर्चा के दौरान पूछें कि चित्रों में क्या हो रहा है? यह क्रिया का कौन-सा रूप है?

यहाँ पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि क्रिया के पहले वाक्य के बीच में क्या, किसे और किसको प्रश्न लगाने पर यदि उत्तर सकारात्मक मिलता है, तो वह क्रिया सकर्मक होगी। उपर्युक्त उदाहरण को देखें–

माता जी खाना बनाएँगी।	माता जी क्या बनाएँगी?	–	खाना।
धोबिन कपड़े सुखा रही है।	धोबिन क्या सुखा रही है?	–	कपड़े।
नंदन दूध पी रहा है।	नंदन क्या पी रहा है?	–	दूध।

यहाँ 'क्या' से प्रश्न पूछने पर सबके उत्तर मिल रहे हैं, इसलिए यहाँ सकर्मक क्रियाएँ हैं।

सकर्मक के भेद–

सकर्मक क्रिया के दो भेद होते हैं– (i) एककर्मक (ii) द्विकर्मक

(i) **एककर्मक क्रिया :** ऐसी सकर्मक क्रिया जिसमें केवल एक ही कर्म होता है, वह एककर्मक क्रिया कही जाती है; जैसे–

मंजूषा पत्र लिख रही है।

बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं।

माता जी बच्चे को सुलाती हैं।

यहाँ वाक्यों की क्रियाओं– 'लिख रही है (पत्र)', 'खेल रहे हैं (क्रिकेट)', 'सुलाती हैं (बच्चों को)' के लिए केवल एक ही कर्म प्रयुक्त हुए हैं।

(ii) **द्विकर्मक क्रिया:** ऐसी क्रियाएँ जिनके लिए एक से अधिक कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रियाएँ कहते हैं; जैसे–

दादी जी बच्चों को कहानी सुनाती हैं।

रंजना ने सुगंधा को कलम दी।

माता जी नौकरानी से बर्तन मँजवाती हैं।

यहाँ तीनों वाक्यों में क्रियाएँ तो एक-सी ही हैं, किंतु उनके दो-दो कर्म (रंगीन शब्दों में) प्रयुक्त हुए हैं।

(ख) अकर्मक क्रिया : जिस वाक्य में ऐसी क्रियाएँ प्रयुक्त की गई हैं, जिनके लिए किसी भी कर्म का प्रयोग नहीं हुआ है, वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं; जैसे–

वायुयान उड़ता है।

मोर नाचता है।

बच्चा हँसता है।

इन वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के पहले किसी भी कर्म का प्रयोग नहीं किया गया है। अतः यह अकर्मक क्रिया कही जाएगी। इसके लिए यदि क्रिया के पहले क्या, किसे और किसको लगाकर प्रश्न किया जाता है, और कोई भी उत्तर नहीं मिलता है, तो वहाँ अकर्मक क्रिया होती है; जैसे–

वायुयान उड़ता है।	वायुयान क्या उड़ता है?	कोई उत्तर नहीं।
मोर नाचता है।	मोर क्या नाचता है?	कोई उत्तर नहीं।
बच्चा हँसता है।	बच्चा क्या हँसता है?	कोई उत्तर नहीं।

कुछ अकर्मक क्रियाएँ निम्नवत् होती हैं–

हँसना, रोना, छींकना, खाँसना, नहाना, खेलना, तैरना, उछलना, चमकना, गिरना, फिसलना, टहलना, जागना, सोना, उठना, बैठना, देखना आदि।

रचना के आधार पर क्रिया के भेद–

रचना के आधार पर क्रिया के चार भेद होते हैं–

(क) संयुक्त क्रिया (ख) नामधातु क्रिया (ग) प्रेरणार्थक क्रिया (घ) पूर्वकालिक क्रिया।

(क) संयुक्त क्रिया : किसी वाक्य में दो या दो से अधिक धातुओं के योग से बनी क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ कही जाती हैं; जैसे–

नौकर घर चला गया है।

गुब्बारे वाला आ गया है।

नाना जी चले गए हैं।

इन उदाहरणों में चला गया, आ गया, चले गए दो-दो अलग धातुओं वाली क्रियाओं का प्रयोग हुआ है। अतएव ये सब संयुक्त क्रियाएँ हैं।

(ख) नामधातु क्रिया : ऐसी क्रियाएँ जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि से बनती हैं, वे नामधातु क्रियाएँ कही जाती हैं; जैसे–

किसी चीज़ को हथियाना नहीं चाहिए।

नितिन के दादा जी सठिया गए हैं।

अच्छी चीज़ें अपनाना चाहिए।

कुछ नाम धातु की क्रियाएँ हैं–

बतियाना, नाचना, शरमाना, अपनाना, लतियाना, जतलाना, कँपकँपाना, खज़ाना, हकलाना, झुठलाना, खटखटाना आदि।

(ग) प्रेरणार्थक क्रिया: क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कर्ता स्वयं कोई कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे–

माँ नौकरानी से खाना बनवाती हैं।

पिता ने मोहन के बाल कटवाए।

माँ ने नौकरानी से साड़ी धुलवाई।

यहाँ कार्य को कर्ता स्वयं न करके किसी अन्य से करवा रहा है। इसलिए यहाँ प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग किया गया है।

(घ) पूर्वकालिक क्रिया : ऐसी क्रिया जिसका पूरा होना वाक्य की मुख्य क्रिया के पूरे होने से पूर्व पाया जाए, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं; जैसे–

बच्चा रोकर सो गया।

रंजना खाकर चली गई।

कक्षा में पहुँचकर छात्र पढ़ने लगे।

इन सभी उदाहरणों से यह पता चल रहा है कि मुख्य क्रिया से पहले या पूर्व में ही एक अन्य क्रिया संपन्न हो चुकी है। इसे हम पूर्वकालिक क्रिया कहेंगे।

आइए, पुनरावृति करें

- **क्रिया**– किसी कार्य का करना या होना क्रिया कहलाता है।
- **क्रिया के भेद**– कर्म के आधार पर तथा रचना के आधार पर।

क्रिया
(किसी कार्य का करना या होना)

- **कर्म के आधार पर**
  - **सकर्मक** (कर्म के साथ)
  - **अकर्मक** (कर्म के बिना)
- **रचना के आधार पर**
  - **संयुक्त क्रिया** (रह गई, लौट आए)
  - **नामधातु क्रिया** (बतियाना, हथियाना)
  - **प्रेरणार्थक क्रिया** (धुलवाए, मँगवाए)
  - **पूर्वकालिक क्रिया** (पहुँचकर, सोकर, पढ़कर)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद हैं?

(ख) किसी कार्य का होना क्या कहलाता है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) क्रिया किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(ख) कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते हैं?

(ग) सकर्मक और अकर्मक क्रिया के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

2. दिए गए वाक्यों में से क्रिया शब्दों को रेखांकित करके सामने लिखिए।

(क) नरेश ने अपना गृह-कार्य पूरा कर लिया। ....

(ख) माता जी साड़ियाँ खरीदने बाज़ार गई हैं। ....

(ग) कल आकाश में लाल बादल दिखाई दिए। ....

(घ) जंगल में शेर विचरण कर रहे थे। ....

(ङ) गाय बछड़े को दूध पिला रही थी। ....

(च) पानी पूरे दिन बरसता रहा। ....

(छ) नानी जी घर आकर सोफ़े पर बैठ गईं। ....

(ज) सुगंधा की आवाज़ बड़ी सुरीली है। ....

(झ) विश्व में तीसरे विश्वयुद्ध की आशंका बढ़ गई है। ....

3. दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनिए।

(क) 'भारत एक गरीब देश है' में क्रिया शब्द होगा–

(i) भारत ☐ (ii) है ☐ (iii) ढ़लना ☐ (iv) देश ☐

(ख) 'सूरज शाम को ढलता है' में कर्म होगा–

(i) सूरज ☐ (ii) शाम ☐ (iii) ढलता ☐ (iv) ढलता है ☐

(ग) 'बच्चा रोता है' वाक्य में कौन-सी क्रिया है?

(i) सकर्मक ☐ (ii) अकर्मक ☐ (iii) प्रेरणार्थक ☐ (iv) पूर्वकालिक ☐

(घ) गाड़ी स्टेशन पर आ गई। रेखांकित क्रिया का भेद क्या है?

(i) सकर्मक ☐ (ii) अकर्मक ☐ (iii) पूर्वकालिक ☐ (iv) संयुक्त क्रिया ☐

(ङ) 'पड़ोसी ने राधे को डंडे से पिटवाया।' रेखांकित क्रिया का प्रकार है–

(i) नामधातु ☐ (ii) अकर्मक ☐ (iii) प्रेरणार्थक ☐ (iv) संयुक्त क्रिया ☐

4. दी गई मूल क्रियाओं से उनकी प्रेरणार्थक क्रियाएँ लिखिए।

पीना	–	पढ़ना	–	सोना	– ....
लिखना	–	खाना	–	देना	– ....
घूमना	–	धोना	–	चलना	– ....

5. दिए गए वाक्यों में क्रिया शब्द भरकर पूरा कीजिए।

(क) आज वर्षा हो ....।

(ख) विद्यालय की घंटी ....।

(ग) पिता जी कल लखनऊ ....।

(घ) मेरी नानी जी का पत्र ....।

(ङ) नेता जी ने बड़ा जोशीला भाषण ....।

(च) सिनेमा देखकर मज़ा ....।

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. क्रिया में मूल धातु होती है; जैसे– 'तुम कहाँ गए थे?' इस वाक्य में मूल धातु - जा रहा है। आप भी कक्षा-चर्चा द्वारा कुछ वाक्य बनाइए जिनमें मूल धातु का प्रयोग हुआ हो।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. कक्षा में बच्चों से पूछें कि आज उन्होंने कौन-कौन से कार्य किए हैं? उनके बताए शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखिए।

8. दी गई सारिणी में से क्रिया शब्द छाँटकर नीचे लिखिए।

खि	लु	भा	ना	ब	ति	या	ना	सु	च
ल	थ	प	थ	पा	ना	सु	ला	ला	ल
वा	कँ	प	कँ	पा	ना	ला	ह	ना	वा
ना	ख	लि	पी	न	रा	ती	न	हा	ना
ढ़	भा	ग	क	र	ह	फ़ि	घु	मा	ना
प	ढ़	ना	मा	ल	सु	ला	खि	ला	ना
प	ढ़ा	ना	वा	ल	दि	ना	रु	ला	ना

....

....

....

प्रेरणादायक मूल्य

संसार में सब कुछ उपलब्ध है, परंतु कर्महीन व्यक्ति कुछ प्राप्त नहीं कर पाता, अतः सदैव क्रियाशील रहें।

अध्याय 10

काल (Tense)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उनके नीचे लिखे रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए–

कल मैं चिड़ियाघर **गया था**।

आज मेरा जन्मदिन **मनेगा**।

अभी मैं गृहकार्य **कर रहा हूँ**।

बच्चो! यहाँ आपने देखा कि '**गया था**' में जाने की क्रिया पूरी हो चुकी है अर्थात् यह बात बीते समय की है। '**मनेगा**' में जन्मदिन आज किसी समय मनाया जाएगा अर्थात् जन्मदिन मनाने का कार्य बाद में (भविष्य) संपन्न होगा। तीसरे वाक्य में '**कर रहा हूँ**' से पता चलता है कि गृहकार्य शुरू तो है, किंतु अभी पूरा नहीं हुआ है। वह अभी भी मौजूदा समय (वर्तमान) में चल रहा है। इन तीनों अवस्थाओं में क्रिया के संपन्न होने की स्थिति को **काल** के नाम से जाना जाता है।

अब आइए, जानते हैं कि काल के कितने प्रकार होते हैं–

काल के तीन प्रकार होते हैं– 1. भूतकाल 2. वर्तमानकाल 3. भविष्यत्काल

1. **भूतकाल :** क्रिया के जिस रूप से यह बात ज्ञात हो कि कोई कार्य बीते समय (भूतकाल) में पूरा हो चुका है, तो उसे **भूतकाल** कहते हैं; जैसे–

मोहन पढ़ **चुका था**।

कल हमारे घर नानी जी **आई थीं**।

पिता जी परसों दुबई **चले गए**।

इन वाक्यों में क्रियाओं से पता चलता है कि सभी कार्य बीते समय में पूरे हो चुके हैं। इसलिए इन्हें **भूतकाल** कहेंगे।

बच्चो! भूतकाल के भी अनेक भेद होते हैं–

1. सामान्य भूतकाल 2. आसन्न भूतकाल 3. पूर्ण भूतकाल 4. अपूर्ण भूतकाल 5. संदिग्ध भूतकाल और 6. हेतुहेतुमद् भूतकाल।

2. वर्तमान काल : क्रिया के वैसे स्वरूप जिससे पता चलता है कि वह क्रिया वर्तमान समय या मौजूदा समय में चल रही है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे–

श्रेया गीत गा रही है।

रंजना पुस्तक पढ़ रही है।

गुड़िया झूला झूल रही है।

इन वाक्यों में आई क्रियाएँ– 'गा रही है', 'पढ़ रही है' तथा 'झूल रही है' से पता चलता है कि क्रियाएँ अभी समाप्त नहीं हुई हैं, बल्कि सभी अभी भी चल रही हैं। इसलिए ये सब वर्तमान काल की क्रियाएँ हैं।

वर्तमान काल के तीन भेद होते हैं– 1. सामान्य वर्तमान काल 2. अपूर्ण वर्तमान काल 3. संदिग्ध वर्तमान काल।

3. भविष्यत्काल : भविष्यत् काल में क्रिया के जिस किसी स्वरूप से उसके भविष्य या आने वाले समय में पूर्ण होने की जानकारी मिलती है, उसे भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे–

मैं कल मुंबई जाऊँगा।

मेरे मकान की परसों रजिस्ट्री होगी।

कल मेरा भाई यूरोप से आएगा।

बच्चो! यहाँ रंगीन शब्दों की क्रियाएँ– जाऊँगा, होगी, आएगा से क्रिया के भविष्य या बाद में संपन्न होने की सूचना मिल रही है। अतएव यहाँ पर भविष्यत् काल में क्रियाएँ संपन्न होंगी।

भविष्यत्काल के दो भेद होते हैं– 1. सामान्य भविष्यत्काल 2. संभाव्य भविष्यत्काल।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को काल के संबंध में विस्तारपूर्वक समझाते हुए उसके विभिन्न भेदों को उदाहरण सहित समझाएँ।

आइए, पुनरावृति करें

- **काल**– क्रिया का वैसा रूप जिससे पता चलता है कि कोई क्रिया किस समय में पूरी हुई है, हो रही है या पूरी होगी काल कहते हैं।
- क्रिया के जिस रूप से पता चले कि क्रिया संपन्न हो चुकी है, वह भूतकाल है।
- क्रिया के जिस रूप से पता चले कि क्रिया संपन्न हो रही है, किंतु अभी पूरी नहीं हो पाई है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।
- क्रिया का वह स्वरूप जिससे यह पता चले कि क्रिया आने वाले समय (भविष्य) में संपन्न होगी, वह भविष्यत् काल कहलाता है।

काल

भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्यत्काल
चुका/चुकी, हुआ, था, थी, थे आदि।	है, रहा/रही है, करता/करती है आदि।	होगा/होगी, जाऊँगा, गे, गी, करेगा, करेगी आदि।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) भूतकाल किसे कहते हैं?

(ख) वर्तमान काल किसे कहते हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) काल की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

(ख) भविष्यत्काल को परिभाषा सहित समझाइए।

(ग) भूतकाल के भेदों को वाक्य सहित लिखिए।

2. दिए गए निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तन करके दोबारा लिखिए।

(क) कल पहाड़ी के पीछे एक शेर देखा गया। (भविष्यत्काल में)

....

(ख) 8 अक्टूबर को वायुसेना दिवस मनाया जाता है। (भूतकाल में)

....

(ग) पिता जी दफ़्तर से घर आ गए थे। (वर्तमानकाल)

....

3. दिए गए वाक्यों को उनके सही काल से मिलाइए।

कहानी अच्छी थी।	वर्तमानकाल	सरला नृत्य करेगी।
नंदन 'मम्मी' को पुकारने लगा।	भूतकाल	पिकनिक सुंदर मनाई गई।
खरीफ़ की फसल अच्छी होगी।	भविष्यत्काल	कुत्ता भौंक रहा है।

4. दिए गए वाक्यों में काल का सही चुनाव कीजिए।

(क) रंजीता का विवाह होने वाला है।

(i) भूतकाल ☐ (ii) भविष्यत् काल ☐ (iii) वर्तमान काल ☐

(ख) नदी में बाढ़ आई हुई है।

(i) भविष्यत् काल ☐ (ii) भूतकाल ☐ (iii) वर्तमान काल ☐

(ग) हमारी बस आने ही वाली है।

(i) भूतकाल ☐ (ii) वर्तमान काल ☐ (iii) भविष्यत् काल ☐

(घ) रेलगाड़ी बड़ी देर से खड़ी है।

(i) भूतकाल ☐ (ii) भविष्यत् काल ☐ (iii) वर्तमान काल ☐

(ङ) हवाई जहाज़ उड़ान भरने वाला है।

(i) भूतकाल ☐ (ii) वर्तमान काल ☐ (iii) भविष्यत् काल ☐

(च) रिया शिमला घूमने गई है।

(i) वर्तमान ☐ (ii) भूतकाल ☐ (iii) भविष्यत् काल ☐

5. दिए गए वाक्यांशों से वाक्य बनाइए।

(क) चुका है। – ....

(ख) करेगा। – ....

(ग) चुका होगा। – ....

(घ) हारेगा – ....

(ङ) होनी है। – ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. 'काल' समय यात्रा को दर्शाता है। क्या हम भविष्यकाल में जा सकते हैं? इस यात्रा विवरण को अपने शब्दों में लिखिए और उन परिणामों की चर्चा करें जो आप महसूस कर रहे हैं।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. कक्षा में छात्रों के तीन समूह बनवाकर प्रत्येक समूह से एक-एक काल के वाक्य बनवाएँ।
8. श्यामपट्ट पर एक वाक्य लिखिए। फिर बच्चों से शेष दो कालों में परिवर्तित करके वाक्य बुलवाएँ।
9. चित्र देखकर वाक्य बनाइए और काल का नाम लिखिए।

(क)

....

(ख)

....

(ग)

....

(घ)

....

प्रेरणादायक मूल्य

हमें भूतकाल से सीखते हुए वर्तमान में जीने का प्रयास करना चाहिए ताकि हमारा भविष्य स्वर्णिम हो।

अध्याय 11

संधि
(Joining)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए। उनके नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए।

यह हमारा विद्य आलय है।

यह हमारा विद्यालय है।

यह सूर्य अस्त है।

यह सूर्यास्त है।

हिमालय को नदी ईश कहा जाता है।

हिमालय को नदीश कहा जाता है।

बच्चो! ऊपर लिखे वाक्यों में 'विद्या आलय', 'सूर्य अस्त' तथा 'नदी ईश' शब्दों की संधि होने के बाद नए शब्द बने हैं– देवालय, सूर्यास्त तथा नदीश। ये शब्द पहले शब्द के अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण को जोड़कर बने हैं।

जैसे– विद्या + आलय से विद्यालय; वधू + उत्सव से वधूत्सव; नदी + ईश से नदीश शब्द बने हैं।

अ + आ = आ   ऊ + उ = ऊ   ई + ई = ई

संधि का अर्थ मेल है। यहाँ दो वर्णों का मेल हो जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि–

दो वर्णों के मेल से उनके रूप में जो बदलाव या परिवर्तन आता है, वह संधि कहलाता है।

अब आइए, जानें कि संधि-विच्छेद क्या है?

जैसे– विद्यालय = विद्या + आलय

महेंद्र = महा + इंद्र

रवीश = रवी + ईश

संधि के भेद –

संधि के तीन भेद होते हैं– 1. स्वर संधि   2. विसर्ग संधि   3. व्यंजन संधि

1. स्वर संधि– स्वर संधि वह होती है, जिसमें स्वर के साथ स्वर का मेल होता है; जैसे–

पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

(क्+अ) आ

स्वर

गुरु + उपदेश = गुरुपदेश

(र्+उ) उ

स्वर

स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं–

(क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण् सधि (ङ) अयादि संधि

(क) दीर्घ संधि– जब ह्रस्व या दीर्घ स्वर– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ के बाद क्रमशः ये सभी स्वर अ–आ, इ–ई, या उ–ऊ आएँ, तो दोनों के मेल से क्रमशः आ, ई तथा ऊ हो जाते हैं। इसकी चार स्थितियाँ होती हैं–

(i)	अ + अ = आ	मत + अनुसार = मतानुसार	(त् + अ)= अ + अ = आ	
		पीत + अंबर = पीतांबर	(त + अ) = अ + अ = आ	
		क्रोध + अग्नि = क्रोधाग्नि	(ध् +अ) = अ + अ = आ	
(ii)	आ + अ = आ	विद्या + अभ्यास	= य् + आ = आ + अ = आ	विद्याभ्यास
		सीमा + अंत	= म् + आ = आ + अ = आ	सीमांत
		यथा + अर्थ	= थ् + आ = आ + अ = आ	यथार्थ
	अ + आ = आ	शरण + आगत	= ण् + अ = अ + आ = आ	शरणागत
		न्याय + आलय	= य् + अ = अ + आ = आ	न्यायालय
		धर्म + आत्मा	= म् + अ = अ + आ = आ	धर्मात्मा
	आ + आ = आ	दया + आनंद	= य् + आ = आ + आ = आ	दयानंद
		वार्ता + आलाप	= त् + आ = आ + आ = आ	वार्तालाप
		महा + आत्मा	= ह् + आ = आ + आ = आ	महात्मा
(iii)	इ + इ = ई	कवि + इंद्र = कवींद्र	(व्+इ+इ=ई)	
		अभि + इष्ट = अभीष्ट	(इ+इ=ई)	
		हरी + इच्छा = हरीच्छा	(र्+ई+इ=ई)	
	इ + ई = ई	रवि + ईश = रवीश	(व्+इ+ई=ई)	
		कपि + ईश = कपीश	(प्+इ+ई=ई)	
		मुनि + ईश = मुनीश	(न्+इ+ई=ई)	

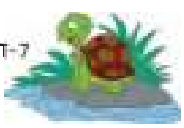

	ई + इ = ई	नारी	+	इंदु	=	नारींदु	(र्+ई+इ=ई)
		पत्नी	+	इच्छा	=	पत्नीच्छा	(न्+ई+इ=ई)
		मही	+	इंद्र	=	महींद्र	(ह्+ई+इ=ई)
	ई + ई = ई	रजनी	+	ईश	=	रजनीश	(न्+ई+ई=ई)
		नदी	+	ईश	=	नदीश	(द्+ई+ई=ई)
		सती	+	ईश	=	सतीश	(त्+ई+ई=ई)
(iv)	उ + उ = ऊ	सु	+	उक्ति	=	सूक्ति	(स्+उ+उ=ऊ)
		भानु	+	उदय	=	भानूदय	(न्+उ+उ=ऊ)
		लघु	+	उत्तर	=	लघूत्तर	(घ्+उ+उ=ऊ)
	उ + ऊ = ऊ	भानु	+	ऊर्जा	=	भानूर्जा	(न्+उ+ऊ=ऊ)
		सिंधु	+	ऊर्मि	=	सिंधूर्मि	(ध्+उ+ऊ=ऊ)
		साधु	+	ऊर्जा	=	साधूर्जा	(ध्+उ+ऊ=ऊ)

(ख) गुण संधि– 'अ' या 'आ' के साथ 'इ' या 'ई' से मेल होने पर ए; 'अ' या 'आ' के साथ 'उ' या 'ऊ' का मेल होने पर ओ; तथा 'अ' तथा 'आ' के साथ 'ऋ' का मेल होने पर अर् हो जाता है। इस प्रकार से मेल होने पर **गुण संधि** कहलाती है; जैसे–

	स्व	+	इच्छा	=	स्वेच्छा	(अ+इ का मेल)
अ + इ = ए	वीर	+	इंद्र	=	वीरेंद्र	(अ+इ का मेल)
	भारत	+	इंदु	=	भारतेंदु	(अ+इ का मेल)
आ + इ = ए	राजा	+	इंद्र	=	राजेंद्र	(आ+इ का मेल)
	यथा	+	इष्ट	=	यथेष्ट	(आ+इ का मेल)
	महा	+	इंद्र	=	महेंद्र	(आ+इ का मेल)
अ + ई = ऐ	नर	+	ईश	=	नरेश	(अ+ई का मेल)
	सुर	+	ईश	=	सुरेश	(अ+ई का मेल)
	परम	+	ईश्वर	=	परमेश्वर	(अ+ई का मेल)
आ + ई = ऐ	महा	+	ईश	=	महेश	(आ+ई का मेल)
	रमा	+	ईश	=	रमेश	(आ+ई का मेल)
	लंका	+	ईश	=	लंकेश	(आ+ई का मेल)

(i) 'अ' या 'आ' के साथ 'उ' या 'ऊ' आने पर 'ओ' हो जाता है; जैसे–

अ + उ = ओ	पर	+	उपकार	=	परोपकार	(अ+उ का मेल)
	चंद्र	+	उदय	=	चंद्रोदय	(अ+उ का मेल)
	सर्व	+	उदय	=	सर्वोदय	(अ+उ का मेल)

	आ + उ = ओ	यथा	+	उचित	=	यथोचित	(आ+उ का मेल)
		महा	+	उत्सव	=	महोत्सव	(आ+उ का मेल)
		महा	+	उदय	=	महोदय	(आ+उ का मेल)
	अ + ऊ = ओ	सूर्य	+	ऊष्मा	=	सूर्योष्मा	(अ+ऊ का मेल)
		समुद्र	+	ऊर्मि	=	समुद्रोर्मि	(अ+ऊ का मेल)
		सागर	+	ऊर्मि	=	सागरोर्मि	(अ+ऊ का मेल)
	आ + ऊ = ओ	गंगा	+	ऊर्मि	=	गंगोर्मि	(आ+ऊ का मेल)
		दया	+	ऊर्मि	=	दयोर्मि	(आ+ऊ का मेल)
		यमुना	+	ऊर्मि	=	यमुनोर्मि	(आ+ऊ का मेल)

(ii) 'अ / आ' के साथ 'ऋ आने पर 'अर्' हो जाता है; जैसे–

अ + ऋ = अर्	देव	+	ऋषि	=	देवर्षि	(अ+ऋ का मेल)
	ग्रीष्म	+	ऋतु	=	ग्रीष्मर्तु	(अ+ऋ का मेल)
	सप्त	+	ऋषि	=	सप्तर्षि	(अ+ऋ का मेल)
आ + ऋ = अर्	महा	+	ऋषि	=	महर्षि	(आ+ऋ का मेल)
	राजा	+	ऋषि	=	राजर्षि	(आ+ऋ का मेल)
	वर्षा	+	ऋतु	=	वर्षर्तु	(आ+ऋ का मेल)

(ग) वृद्धि संधि– जब 'अ' या 'आ' के साथ 'ए' या 'ऐ' का मेल हो तो ऐ; तथा 'अ' या 'आ' के साथ 'ओ' या 'औ' का मेल होने पर औ हो जाता है; जैसे–

(i)	अ + ए = ऐ	लोक	+	एषणा	=	लोकैषणा	(अ+ए का मेल)
		एक	+	एक	=	एकैक	(अ+ए का मेल)
	आ + ए = ऐ	तथा	+	एव	=	तथैव	(आ+ए का मेल)
		सदा	+	एव	=	सदैव	(आ+ए का मेल)
	अ + ऐ = ऐ	धन	+	ऐश्वर्य	=	धनैश्वर्य	(अ+ऐ का मेल)
		मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य	(अ+ऐ का मेल)
	आ + ऐ = ऐ	विद्या	+	ऐश्वर्य	=	विद्यैश्वर्य	(आ+ऐ का मेल)
		महा	+	ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य	(आ+ऐ का मेल)
(ii)	अ + ओ = औ	वन	+	औषधि	=	वनौषधि	(अ+ओ का मेल)
		दंत	+	ओष्ठ	=	दंतौष्ठ	(अ+ओ का मेल)
	अ + औ = औ	परम	+	औषध	=	परमौषध	(अ+औ का मेल)
		परम	+	औदार्य	=	परमौदार्य	(अ+औ का मेल)

आ + ओ = औ	महा	+	ओजस्वी	=	महौजस्वी	(आ+ओ का मेल)
	महा	+	ओज	=	महौज	(आ+ओ का मेल)
आ + औ = औ	महा	+	औषध	=	महौषध	(आ+औ का मेल)
	महा	+	औध	=	महौध	(आ+औ का मेल)

(घ) यण् संधि– यदि 'इ' या 'ई' के बाद कोई अन्य स्वर आए तो इ/ई के स्थान पर 'य्' तथा उ/ऊ के स्थान पर 'व्' हो जाता है। 'ऋ' के बाद कोई स्वर आए, तो 'ऋ' का 'र्' हो जाता है। स्वरों के ऐसे मेल को **यण संधि** कहते हैं; जैसे–

(i) इ–ई + अन्य स्वर = य्

नदी	+	अर्पण	=	नद्यर्पण	(ई+अन्य स्वर का य् हो गया)
अति	+	आचार	=	अत्याचार	(इ+अन्य स्वर का य् हो गया)
यदि	+	अपि	=	यद्यपि	(इ+अन्य स्वर का य् हो गया)
नि	+	ऊन	=	न्यून	(इ+अन्य स्वर का य् हो गया)
इति	+	आदि	=	इत्यादि	(इ+अन्य स्वर का य् हो गया)
अभि	+	आगत	=	अभ्यागत	(इ+अन्य स्वर का य् हो गया)

(ii) उ–ऊ + अन्य स्वर के स्थान पर व् हो जाता है; जैसे–

सु	+	आगत	=	स्वागत	(उ+अन्य स्वर का मेल)
सु	+	इच्छा	=	स्वेच्छा	(उ+अन्य स्वर का मेल)
अनु	+	इति	=	अन्विति	(उ+अन्य स्वर का मेल)
मधु	+	आलय	=	मध्वालय	(उ+अन्य स्वर का मेल)

(iii) ऋ + अन्य स्वर के स्थान पर र् हो जाता है; जैसे–

मातृ	+	इच्छा	=	मात्रिच्छा	(ऋ+अन्य स्वर का मेल)
पितृ	+	अनुमति	=	पित्रनुमति	(ऋ+अन्य स्वर का मेल)
मातृ	+	आनंद	=	मात्रानंद	(ऋ+अन्य स्वर का मेल)

(ङ) अयादि संधि– यदि 'ए' या 'ऐ' अथवा 'ओ' या 'औ' के साथ इनसे अलग स्वर आएँ, तो क्रमशः 'ए' का अय्, 'ऐ' का आय, 'ओ' का अव् तथा 'औ' का आव हो जाता है; जैसे–

ने	+	अन	=	नयन	(ए+अन्य स्वर = अय्)
गै	+	इका	=	गायिका	(ऐ+अन्य स्वर = आय)
पो	+	अन	=	पवन	(ओ+अन्य स्वर=अव्)
पौ	+	अक	=	पावक	(औ+अन्य स्वर=आव)

2. व्यंजन संधि– व्यंजन वर्णों का व्यंजन वर्ण के साथ अथवा किसी स्वर के साथ मेल होने से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे–

जगत् + ईश = जगदीश (त् (व्यंजन) + ई (स्वर) का मेल)

वि + छेद = विच्छेद (इ (स्वर) + छ् (व्यंजन) का मेल)

व्यंजन संधि के कुछ अन्य उदाहरण

वाक्	+	मय	=	वाङ्मय	उत्	+	योग	=	उद्योग
षट्	+	आनन	=	षडानन	दिक्	+	अंबर	=	दिगंबर
दिक्	+	गज	=	दिग्गज	सम्	+	कल्प	=	संकल्प
उत्	+	नति	=	उन्नति	संधि	+	छेद	=	संधिच्छेद
अनु	+	छेद	=	अनुच्छेद	स्व	+	छंद	=	स्वच्छंद
उत्	+	हरण	=	उद्धरण	भूष	+	न	=	भूषन
उत्	+	ज्वल	=	उज्ज्वल	षट्	+	दर्शन	=	षड्दर्शन
अन्	+	अंत	=	अनंत	उत्	+	डयन	=	उड्डयन
उत्	+	श्वास	=	उच्छवास	षट्	+	मास	=	षण्मास
तत्	+	टीका	=	तट्टीका	भो	+	अन	=	भवन
तत्	+	लीन	=	तल्लीन	शे	+	अन	=	शयन

3. विसर्ग संधि– विसर्ग के बाद किसी व्यंजन के साथ मेल होने पर विसर्ग संधि कहलाती है; जैसे–

मनः + हर = मनोहर (विसर्ग + व्यंजन का मेल)

दुः + चरित्र = दुश्चरित्र (विसर्ग + व्यंजन का मेल)

मनः + कामना = मनोकामना, मनस्कामना

दुः	+	गुण	=	दुर्गुण	दुः	+	शासन	=	दुश्शासन
निः	+	चय	=	निश्चय	मनः	+	रथ	=	मनोरथ
मनः	+	ज	=	मनोज	यशः	+	गान	=	यशोगान
निः	+	आहार	=	निराहार	पुनः	+	जन्म	=	पुनर्जन्म
निः	+	काम	=	निष्काम	निः	+	संतान	=	निस्संतान
निः	+	रोग	=	निरोग	निः	+	रस	=	नीरस
निः	+	पाप	=	निष्पाप	निः	+	तेज	=	निस्तेज
नमः	+	ते	=	नमस्ते	दुः	+	कर	=	दुष्कर

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को संधि व उसका विच्छेदन भेद सहित आसान तरीके से बताएँ ताकि बच्चों को पाठ रुचिकर लगे।

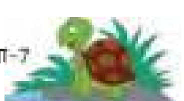

आइए, पुनरावृति करें

- **संधि**- संधि का अर्थ जोड़ या मेल होता है।
- संधि तीन प्रकार की होती है- स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।
- स्वर संधि के भी पाँच भेद होते हैं।
- संधियुक्त शब्दों को अलग करना **संधि-विच्छेद** कहलाता है।
- संधि में वर्णों का मेल होता है, जबकि समास में शब्दों का संक्षिप्तीकरण होता है।

संधि

- स्वर संधि (स्वर के साथ स्वर का मेल)
  - **भेद**
    - दीर्घ संधि
    - गुण संधि
    - वृद्धि संधि
    - यण् संधि
    - अयादि संधि
- व्यंजन संधि (व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन का मेल)
- विसर्ग संधि (विसर्ग का अनेक रूपों में परिवर्तन होता है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) स्वर संधि का उदाहरण बताइए।

(ख) 'आ + इ' मिलकर किस वर्ण का निर्माण करता है? बताइए।

(ग) 'स्वेच्छा' में किन वर्णों का मेल हुआ है? बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. **दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) संधि किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

(ख) संधि के कितने भेद होते हैं?

(ग) व्यंजन संधि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

(घ) स्वर संधि के कितने उपभेद होते हैं?

(ङ) विसर्ग संधि किसे कहते हैं? उदाहरण देकर लिखिए।

2. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद करके संधि का नाम लिखिए।

	गुरुपदेश	=	गुरु	+	उपदेश		दीर्घ संधि
(क)	लंकेश	=	....	+	....	—	....
(ख)	नद्यर्पण	=	....	+	....	—	....
(ग)	महर्षि	=	....	+	....	—	....
(घ)	स्वागत	=	....	+	....	—	....
(ङ)	जगदीश	=	....	+	....	—	....
(च)	आशीर्वाद	=	....	+	....	—	....
(छ)	पवन	=	....	+	....	—	....
(ज)	उज्ज्वल	=	....	+	....	—	....
(झ)	उद्योग	=	....	+	....	—	....

3. दिए गए संधि-विच्छेद से संधियुक्त शब्द बनाइए और संधि का नाम लिखिए।

(क)	निः	+	चय	=	निश्चय	—	विसर्ग संधि
(ख)	शती	+	छंद	=	....	—	....
(ग)	निः	+	रस	=	....	—	....
(घ)	वाक्	+	मय	=	....	—	....
(ङ)	महा	+	आलय	=	....	—	....
(च)	कपि	+	ईश	=	....	—	....
(छ)	महा	+	ऐश्वर्य	=	....	—	....

4. दिए गए शब्दों को उनके सामने उसकी संधि का नाम लिखिए।

अत्यधिक — .... अन्वय — .... रवीश — ....

परमेश्वर — .... पित्राज्ञा — .... पावक — ....

भवन — .... उन्नति — .... यशोगान — ....

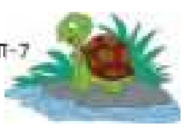

5. **दिए गए शब्दों के लिए सही संधि-विच्छेद चुनिए–**

(क) **सदैव–**

(i) सद + एव ☐ (ii) साद + एव ☐ (iii) सदा + ऐव ☐ (iv) सदा + एव ☐

(ख) **लोकोक्ति–**

(i) लोको + कोक्ति ☐ (ii) लोको + उक्ति ☐ (iii) लोक + उक्ति ☐ (iv) लोका + उक्ति ☐

(ग) **पर्यावरण–**

(i) पर्य + आवरण ☐ (ii) पर्या + वरण ☐ (iii) परि + आवरण ☐ (iv) परी + आवरण ☐

(घ) **अत्यधिक–**

(i) अत्य + धिक ☐ (ii) अत्यध + इक ☐ (iii) अती + अधिक ☐ (iv) अति + अधिक ☐

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. **गायक, नायक अयादि संधि के उदाहरण किसी व्यवसाय को दर्शाते हैं। इसी प्रकार आप भी ऐसे संधि शब्द सोचकर लिखिए जो किसी क्षेत्र या वर्ग को दर्शाएँ। उन शब्दों के संधि-विच्छेद भी कीजिए।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. **दी गई शब्द सारिणी में से संधियुक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए।**

त	थै	व	न	दी	श
म	हो	द	य		रा
ह	वि	द्या	भ्या	स	जे
र्षि	ना	य	क	लो	श
अ	भ्या	ग	त	कै	अ
वा	र्ता	ला	प	ष	न्वि
नी	ला	का	श	णा	ति

....

....

....

....

....

....

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार 'सम्+मान' मिलकर 'सम्मान' शब्द बनता है, उसी प्रकार सम्मान देना मानवीय गुण है।

अध्याय 12

समास (Compound)

पढ़िए और समझिए

धनहीन

रसोईघर

मालगाड़ी

बच्चो! ऊपर लिखे शब्द 'धनहीन', 'रसोईघर' तथा 'मालगाड़ी' क्रमशः 'धन से हीन', 'रसोई के लिए घर' तथा 'माल के लिए गाड़ी' के संक्षिप्त रूप हैं। ये सभी संक्षिप्त रूप समास कहे जाते हैं। 'समास' कुछ शब्दों के संक्षिप्त रूप होते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि–

जब दो या इससे अधिक शब्दों के मेल से एक नए शब्द का सृजन होता है, तो उस नए शब्द को समास कहते हैं।

यहाँ हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि समास की प्रक्रिया से बनने वाले शब्द को सामासिक पद या समस्त पद कहते हैं; जैसे–

घुड़सवार, नीलकंठ, पीतांबर, यथाशक्ति आदि।

दूसरी ओर समस्त पदों का विग्रह करने पर निकलने वाले सभी शब्दों को समास-विग्रह कहा जाता है; जैसे–

घोड़े पर सवार (समस्त पद – घुड़सवार) आदि।

समास में या समस्त पद में दो पद मिले होते हैं– पूर्वपद तथा उत्तर पद; जैसे–

नील	(पूर्वपद)	+	कंठ	(उत्तर पद)	=	नीलकंठ	(समस्त पद)
रसोई	(पूर्वपद)	+	घर	(उत्तर पद)	=	रसोईघर	(समस्त पद)
गृह	(पूर्वपद)	+	प्रवेश	(उत्तर पद)	=	गृहप्रवेश	(समस्त पद)
लाल	(पूर्वपद)	+	किला	(उत्तर पद)	=	लालकिला	(समस्त पद)

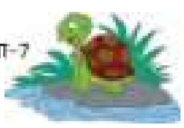

गंगा (पूर्वपद) + जल (उत्तर पद) = गंगाजल (समस्त पद)

सिर (पूर्वपद) + दर्द (उत्तर पद) = सिरदर्द (समस्त पद)

समास के भेद

बच्चो! समास के मुख्यत: छह भेद माने गए हैं; वे हैं–

1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष समास 3. द्विगु समास 4. द्वंद्व समास 5. कर्मधारय समास 6. बहुव्रीहि समास।

1. अव्ययीभाव समास– इस समास में पहला पद अव्यय होता है और वही पद प्रधान होता है। इसे ही अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे–

यथा (पूर्वपद अव्यय) + संभव = यथासंभव

आ (पूर्वपद अव्यय) + जीवन = आजीवन

भर (पूर्वपद अव्यय) + पेट = भरपेट

यथा (पूर्वपद अव्यय) + शक्ति = यथाशक्ति

अव्ययीभाव समास के कुछ अन्य उदाहरण हैं–

बेशक (बिना शक), बेमतलब (मतलब के बिना), आजन्म (जन्म से लेकर), भरसक (पूरी शक्ति से), सादर (आदर सहित), यथाविधि (विधि के अनुसार), दिनोंदिन (दिन-ही-दिन में), यथानियम (नियमों के अनुसार) आदि।

2. तत्पुरुष समास– जिस समास में प्रथम या पूर्व पद गौण होता है और दूसरा या उत्तर पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे–

रेखांकित = रेखा (पूर्वपद) + अंकित (उत्तर पद) = रेखा से अंकित।

विभक्ति के लोप के आधार पर तत्पुरुष समास के अनेक भेद हैं–

(क) कर्म तत्पुरुष ('को' चिह्न का लोप)

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
स्वर्गगत	स्वर्ग को गत	यशप्राप्त	यश को प्राप्त
पदप्राप्त	पद को प्राप्त	ग्रामगत	ग्राम को गत
गगनचुंबी	गगन को चूमने वाली	सर्वप्रिय	सर्व को प्रिय
वनगमन	वन को गमन	मनपसंद	मन को पसंद

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को समास और उसके भेद उदाहरण सहित विस्तारपूर्वक समझाएँ साथ ही विभिन्न समास के अंतर को भी स्पष्ट करें।

(ख) करण तत्पुरुष समास ('से' या 'द्वारा' चिह्न या परसर्ग का लोप)

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
ज्ञानयुक्त	ज्ञान से युक्त	रेखांकित	रेखा से अंकित
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत	पर्णकुटी	पर्ण से बनी कुटी
हस्तलिखित	हाथ से लिखित	अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित
गुणयुक्त	गुण से युक्त		

(ग) संप्रदान तत्पुरुष समास ('के लिए' चिह्न या परसर्ग का लोप)

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
हवनसामग्री	हवन के लिए सामग्री	सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि	गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
राहखर्च	राह के लिए खर्च	अनाथालय	अनाथों के लिए आलय
शौचालय	शौच के लिए आलय	मालगाड़ी	माल के लिए गाड़ी
सभाभवन	सभा के लिए भवन	बारातघर	बारात के लिए घर

(घ) अपादान तत्पुरुष समास ('से' अलग होने के अर्थ में चिह्न का लोप)

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
शोकाकुल	शोक से आकुल	पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त	देशनिकाला	देश से निकाला
धनहीन	धन से हीन	भयभीत	भय से भीत
धर्मभ्रष्ट	धर्म से भ्रष्ट	चरित्रभ्रष्ट	चरित्र से भ्रष्ट

(ङ) संबंध तत्पुरुष समास ('का, के, की' चिह्नों या परसर्गों का लोप)

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
सिरदर्द	सिर का दर्द	देशवासी	देश का वासी
सेनापति	सेना का पति	राजपुत्र	राजा का पुत्र
राजपुत्री	राजा की पुत्री	दीनानाथ	दीनों के नाथ
लखपति	लाखों का पति	राजसभा	राजा की सभा

(च) अधिकरण तत्पुरुष समास ('में' तथा 'पर' चिह्नों या परसर्गों का लोप)

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
वनवास	वन में वास	गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
आपबीती	आप पर बीती	ध्यानमग्न	ध्यान में मग्न
जलमग्न	जल में मग्न	कार्यकुशल	कार्य में कुशल

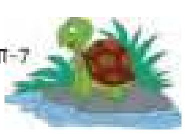

3. **द्विगु समास–** जिस समास में पहला पद संख्यावाची विशेषण होता है तथा उत्तर पद विशेष्य होता है, उसे द्विगु समास कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
चौराहा	चार राहों का समाहार	चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह
चौमासा	चार मासों का समूह	पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समाहार
तिरंगा	तीन रंगों का समूह	पंचतत्व	पाँच तत्वों का समूह
नवग्रह	नवग्रहों का समाहार	सप्ताह	सात दिनों का समूह
त्रिफला	तीन फलों का समाहार	अष्टसिद्धि	आठ सिद्धियों का समाहार
पंजाब	पाँच आबों (नदियों) का समूह	नवरात्रि	नौ रात्रियों का समूह

4. **द्वंद्व समास–** जिस समास के दोनों पद (पूर्व पद तथा उत्तर पद) प्रधान होते हैं एवं सामासिक पदों का विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या' आदि समुच्चयबोधकों से जुड़े हों; साथ ही उनके बीच योजक चिह्न हो, उसे द्वंद्व समास कहते हैं; जैसे–

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
पाप-पुण्य	पाप या पुण्य	अन्न-जल	अन्न और जल
हानि-लाभ	हानि और लाभ	अमीर-गरीब	अमीर या गरीब
छोटा-बड़ा	छोटा या बड़ा	गुण-दोष	गुण और दोष
नर-नारी	नर या नारी	भाई-बहन	भाई और बहन
देश-विदेश	देश और विदेश	माता-पिता	माता और पिता
अपना-पराया	अपना और पराया	सुख-दुख	सुख और दुख
नदी-नाला	नदी और नाला	राजा-रंक	राजा और रंक
आजकल	आज और कल	दाल-रोटी	दाल और रोटी

5. **कर्मधारय समास–** जिस समास में पूर्व पद विशेषण तथा उत्तर पद विशेष्य या 'उपमान-उपमेय' होते हैं, वे कर्मधारय समास कहलाते हैं; जैसे–

काली (विशेषण) + मिर्च (विशेष्य) = कालीमिर्च।

कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं–

समस्त पद	समास-विग्रह	समस्त पद	समास-विग्रह
महादेव	महान हैं जो देव	नीलकमल	नीला है जो कमल
नीलकंठ	नीला है जो कंठ	महाराजा	महान है जो राजा

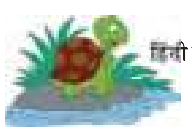

दुरात्मा	बुरी है जो आत्मा	करकमल	कमल के समान कर (हाथ)
श्वेतांबर	श्वेत है जो अंबर	देहलता	देह रूपी लता
भलामानस	भला है जो मानस	अंधकूप	अंधा है जो कूप
मुखचंद्र	मुख रूपी चंद्र	अधपका	आधा है जो पका
क्रोधाग्नि	क्रोध रूपी अग्नि	परमानंद	परम है जो आनंद
लालकिला	लाल है जो किला	पुरुषोत्तम	पुरुषों में जो है उत्तम

6. **बहुव्रीहि समास–** जिस समास में पूर्व (पहला) पद तथा उत्तर (दूसरा) पद कोई भी प्रधान नहीं होता है, बल्कि ये किसी तीसरे पद को संकेतित करते हैं, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है; जैसे–

नीलकंठ = नीला है कंठ (गला) जिसका अर्थात् शिवजी।

कुछ अन्य उदाहरण निम्नवत् हैं–

पीतांबर = पीत (पीले) हैं अंबर (वस्त्र) जिसके अर्थात् विष्णु या कृष्ण।

दशानन = दश हैं आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण।

चतुरानन = चार हैं आनन (मुख) जिसके अर्थात् ब्रह्मा जी।

वीणापाणि = वीणा पाणि (हाथ) में है जिसकी अर्थात् सरस्वती जी।

लंबोदर = लंबा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् गणेश जी।

मुरलीधर = मुरली को धारण करने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण जी।

त्रिलोचन = तीन हैं लोचन (आँखें) जिसकी अर्थात् शिव जी।

षड्गधारिणी = षड्ग (तलवार) को धारण करने वाली अर्थात् दुर्गा जी।

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

- बहुव्रीहि समास में दोनों पद प्रधान न होकर कोई तीसरा पद प्रधान होता है और उसी की विशेषता बताई जाती है।
- कर्मधारय समास के दोनों पदों में विशेषण तथा विशेष्य का संबंध होता है। समास-विग्रह करने पर ही यह अंतर पता चलता है; जैसे–

नीलकंठ = नीला है जो कंठ। (कर्मधारय)

नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव जी। (बहुव्रीहि)

मृगनयनी = मृग के समान हैं जो नयन। (कर्मधारय)

मृगनयनी = मृग के समान नैनों वाली अर्थात् सुंदर स्त्री। (बहुव्रीहि)

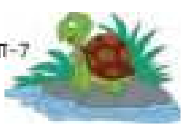

आइए, पुनरावृति करें

- दो या दो से अधिक शब्दों के संक्षिप्तीकरण की क्रिया को समास कहते हैं।
- समस्तपद का विग्रह करके प्राप्त हुए शब्दों को समास-विग्रह कहते हैं।
- सामासिक प्रक्रिया के बाद बने शब्द समस्तपद कहलाते हैं।

समास

अव्ययीभाव समास (प्रथम पद प्रधान)	**तत्पुरुष समास** (दूसरा पद प्रधान)	**द्विगु समास** (पहला पद संख्यावाची विशेषण)	**द्वंद्व समास** (और, या, अथवा)	**कर्मधारय समास** (विशेषण-विशेष्य का संबंध)	**बहुव्रीहि समास** (अन्य पद प्रधान)

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) द्विगु समास के तीन उदाहरण बताइए।

(ख) 'बेशक' किस समास का उदाहरण है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) समास किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

(ख) द्वंद्व समास को सोदाहरण बताइए।

(ग) तत्पुरुष समास के कितने उपभेद होते हैं?

(घ) कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समास में अंतर बताइए।

2. दिए गए शब्दों से समस्त पद बनाकर समास का नाम भी लिखिए।

	समस्त पद	समास का नाम
(क) जैसा संभव हो	यथासंभव	अव्ययीभाव समास
(ख) पाँच आबों का समूह	....	....
(ग) आयात-निर्यात	....	....
(घ) गगन को चूमने वाली	....	....
(ङ) गुरु के लिए दक्षिणा	....	....
(च) घन के समान श्याम	....	....

(छ) पाँच रत्नों का समूह ....

(ज) लंबा उदर है जिसका अर्थात् गणेश ....

3. दिए गए समस्त पदों के लिए उनके सही समास-विग्रह को चुनिए।

(क) बेखटके–
(i) खटक-खटक के ☐ (ii) खटका के ☐ (iii) बिना खटके के ☐ (iv) बिना खटकाए ही ☐

(ख) सप्तर्षि–
(i) ऋषियों की शपथ ☐ (ii) सप्त+र्षि ☐
(iii) सप्त तारे ☐ (iv) सात ऋषियों का समूह ☐

(ग) सिरदर्द–
(i) सिर का दर्द ☐ (ii) सिर में दर्द ☐ (iii) सिर के लिए दर्द ☐ (iv) सिर को दर्द ☐

(घ) त्रिलोचन–
(i) तीन लोचन ☐ (ii) तीन लोचन हैं जिसके ☐
(iii) तीन लोचन की समस्या ☐ (iv) तीन लोचन के लिए ☐

(ङ) आजीवन–
(i) जीवन भर वहीं ☐ (ii) जीवन भर ☐ (iii) आजीविका भर ☐ (iv) सभी जीवों के लिए ☐

(च) आसेतु–
(i) सेतु तक आना ☐ (ii) सेतु एक ☐ (iii) आ और सेतु ☐ (iv) सेतु तक ☐

4. दिए गए समस्त पदों का समास-विग्रह करके समास का नाम भी लिखिए।

समस्त पद	समास-विग्रह	समास का नाम
(क) चतुरानन	चार हैं आनन जिसके अर्थात् ब्रह्मा	बहुव्रीहि समास
(ख) नर-नारी	....	....
(ग) महात्मा	....	....
(घ) नवग्रह	....	....
(ङ) भुजदंड	....	....
(च) अधपका	....	....
(छ) वनवास	....	....
(ज) देहलता	....	....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. 'राष्ट्रपति' शब्द एक समस्तपद है। राष्ट्रपति की भाँति कुछ ऐसे ही समस्त पदों को सोचकर बताइए।

6. कक्षा में बच्चों से सामासिक शब्दाक्षरी का खेल खिलवाएँ। फिर उन्हें श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों से कॉपी में लिखवाएँ।

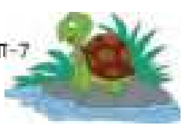

खेल-खेल में

7. कक्षा के छात्रों के छह समूह बनवाकर उनसे छहों समासों के नाम पूछें। श्यामपट्ट पर लिखकर नोट करवाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

व्यक्ति में गुण भले ही कम हों लेकिन उनका गुणगान सदैव व्यापक रूप से होना चाहिए।

अध्याय 13

कारक
(Case)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए–

जागृति ने सुंदर नृत्य किया।

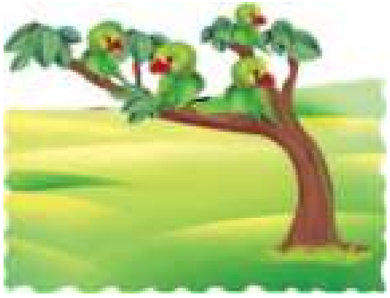

तोते डाल पर बैठे हैं।

यह साइकिल मेरे लिए आई है।

बच्चो! ऊपर के उदाहरणों में आपने देखा कि ने, पर तथा लिए क्रमशः कर्ता के कार्य, उसकी स्थिति तथा कर्म का कर्ता के साथ संबंध बता रहे हैं। इन शब्दों– ने, पर, तथा के लिए को कारक कहते हैं।

इसे हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि–

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया तथा वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ संबंध का पता चलता है, उसे कारक कहते हैं।

अब आइए, कारक के भेदों को जानते हैं। नीचे की सारणी को देखें: कारक के कुल आठ भेद होते हैं, जो निम्नलिखित हैं।

कारक का नाम	चिह्न	उदाहरण
1. कर्ता कारक	ने	नौकरानी ने कपड़े धोए। पिता जी भोजन करते हैं। ('न' का लोप)
2. कर्म कारक	को	माता जी दादी जी को नहलाती हैं। दिव्या चित्र बनाती है। ('को' का लोप)
3. करण कारक	से, के द्वारा	महेश कलम से लिखता है।
4. संप्रदान कारक	को, के लिए (देने का भाव)	पिता जी मोहन के लिए शर्ट ले आए। नंदन ने रंजना को पुस्तक दी।

5. अपादान कारक	से (अलग होने)	पिता जी ने घर से प्रस्थान कर दिया। पेड़ से तोते उड़ गए।
6. संबंध कारक	का, के, की, रा, रे, री, ना	यह राम की पुस्तक है।
7. अधिकरण कारक	में, पर	ज्योति ने कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
8. संबोधन कारक	हे!, अरे!	अरे राघव! क्यों रो रहे हो? हे भगवान! ये क्या अनर्थ हो गया।

अब आइए, इनके बारे में विस्तार से जानते हैं:

1. **कर्ता कारक (ने) :** कर्ता कारक में शब्द के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध होता है, उसे कर्ता कहते हैं; जैसे-

माता जी ने सब्ज़ी बनाई।

वृद्ध टहलते हैं।

मज़दूरों ने नींव भरी।

यहाँ ने से कर्ता के क्रिया करने का पता चल रहा है। दूसरे उदाहरण में कर्ता कारक का परसर्ग (चिह्न) नहीं है। यहाँ उसका लोप हुआ है। किंतु टहलने का कार्य वृद्ध कर रहे हैं। अतः यह भी कर्ता कारक का उदाहरण है। 'ने' विभक्ति का प्रयोग सदैव भूतकाल के वाक्यों में किया जाता है।

2. **कर्म कारक (को) :** ऐसे शब्द जिनसे क्रिया के कर्म का पता चलता है, उसे कर्म कारक कहते हैं, इसका परसर्ग 'को' है। कभी-कभी परसर्ग नहीं भी लगता है; जैसे-

मुकेश कुत्ते को टहलाता है।

मोहन बाँसुरी बजाता है।

दिव्या स्नेहा को कलम देती है।

3. करण कारक (से/के द्वारा/के साथ) : ऐसे शब्द जिनसे पता चले कि क्रिया को संपन्न करने में कर्ता ने किसी साधन का प्रयोग किया है, उसे करण कारक कहते हैं।

चम्मच से खीर खाओ।

नाश्ते के साथ चाय दे दो।

कूरियर सेवा के द्वारा पुस्तक आ गई।

इन उदाहरणों में से, के साथ एवं के द्वारा से यह पता चल रहा है कि क्रिया की संपन्नता किसी करण (साधन) से की जाती है। यहाँ करण कारक होगा।

4. संप्रदान कारक (को, के लिए) : यहाँ जिसके हित या कल्याण के लिए क्रिया की जाती है, वहाँ संप्रदान कारक का प्रयोग किया जाता है। संप्रदान कारक का प्रयोग प्राय: देने के अर्थ में प्रयुक्त होता है; जैसे–

माता जी गाय को रोटी देती हैं।

भंडारे का प्रसाद सबके लिए है।

माता जी सत्संग हेतु मंदिर गई हैं।

यहाँ दिए गए उदाहरणों में सभी में देने का भाव या प्रयोजन निहित है। इसलिए यहाँ संप्रदान कारक का प्रयोग किया गया है।

5. अपादान कारक (से-अलग होने का भाव) : संज्ञा अथवा सर्वनाम के वैसे रूप जिससे क्रिया द्वारा अलग होने का भाव स्पष्ट होता है, वहाँ अपादान कारक का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

पेड़ से आम गिरते हैं। (अलग होना)

देवेंद्र यश से तेज़ दौड़ता है। (तुलना)

मुझे ऊँचाई से डर लगता है। (डरना)

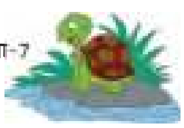

बच्चो! यहाँ से के द्वारा अलग होने, तुलना करने एवं डरने के भावों का पता चल रहा है। इसके अलावा लज्जा करने, ईर्ष्या, घृणा, द्वेष करने, निकलने, सीखने के भावों को भी अपादान कारक की श्रेणी में रखा जाता है अर्थात् इन सभी में अपादान कारक का प्रयोग किया जाता है।

6. संबंध कारक (का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी) : इस कारक में किसी संज्ञा या सर्वनाम का किसी अन्य संज्ञा, सर्वनाम या वस्तु से संबंध बताया जाए, वहाँ संबंध कारक का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

यह राधे की पुस्तक है।

हमारा घर यह है।

आप अपना नाम बताइए।

बच्चो! ऊपर के उदाहरणों में पुस्तक का राधे से, घर का हमारे से तथा आप का स्वयं से संबंध का ज्ञान हो रहा है। इसलिए यहाँ पर संबंध कारक का प्रयोग किया जाता है।

7. अधिकरण कारक (में, पर) : संज्ञा अथवा सर्वनाम का वैसा रूप जिससे क्रिया के स्थान, आधार व समय की जानकारी दी गई हो, अधिकरण कारक कहलाता है; जैसे–

वायुयान आकाश में उड़ता है।

तोते डाल पर बैठे हैं।

छात्रों को वार्षिकोत्सव पर पुरस्कार दिए गए।

यहाँ 'में' तथा 'पर' क्रिया के आधार स्वरूप हैं अर्थात् इन आधारों के बिना क्रिया का संपन्न हो पाना मुश्किल कार्य था। अतएव ये अधिकरण कारक हैं।

8. संबोधन कारक (हे, अरे) : किसी भी व्यक्ति को पुकारते समय या दूर से किसी को पास बुलाने आदि के लिए संबोधन कारक का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

अरे श्याम! कहाँ जा रहे हो?

हे ईश्वर! ये क्या हो गया।

अरे रामू! इधर आना।

हे, अरे, कष्ट, वेदना, पाश्चात्ताप, हर्ष, खुशी आदि भावों के लिए प्रयोग किया जाता है। ऊपर के उदाहरण भी इसी से संबंधित हैं।

अब आइए, कर्म और संप्रदान कारक में अंतर जानें–

कर्मकारक (को) परसर्ग	संप्रदान कारक (को) परसर्ग
कर्मकारक में परसर्ग कभी प्रयुक्त होता है और कभी नहीं भी; जैसे– • मनीष रेखा को रुलाता है। (परसर्ग) • ललित विद्यालय जाता है। (परसर्ग रहित)	संप्रदान कारक में परसर्ग कर्ता/क्रिया के साथ होता है एवं इसमें देने का भाव होता है; जैसे– • माता जी पुजारी को दक्षिणा देती हैं। यहाँ देने के अर्थ में प्रयोग किया गया है।

अब आइए, करण कारक और अपादान कारक में अंतर जानें–

करण कारक (से) परसर्ग	अपादान कारक (से अलग) परसर्ग
• बच्चे गेंद से खेल रहे हैं। यहाँ से परसर्ग साधन के रूप में प्रयुक्त है।	• साँप बिल से निकलकर झाड़ी में गया। यहाँ से परसर्ग अलग होने के रूप में प्रयुक्त है।

आइए, पुनरावृति करें

- संज्ञा या सर्वनाम के वैसे रूप जिसमें क्रिया तथा वाक्य का दूसरे शब्दों के साथ संबंध का पता चलता है, उसे **कारक** कहते हैं।

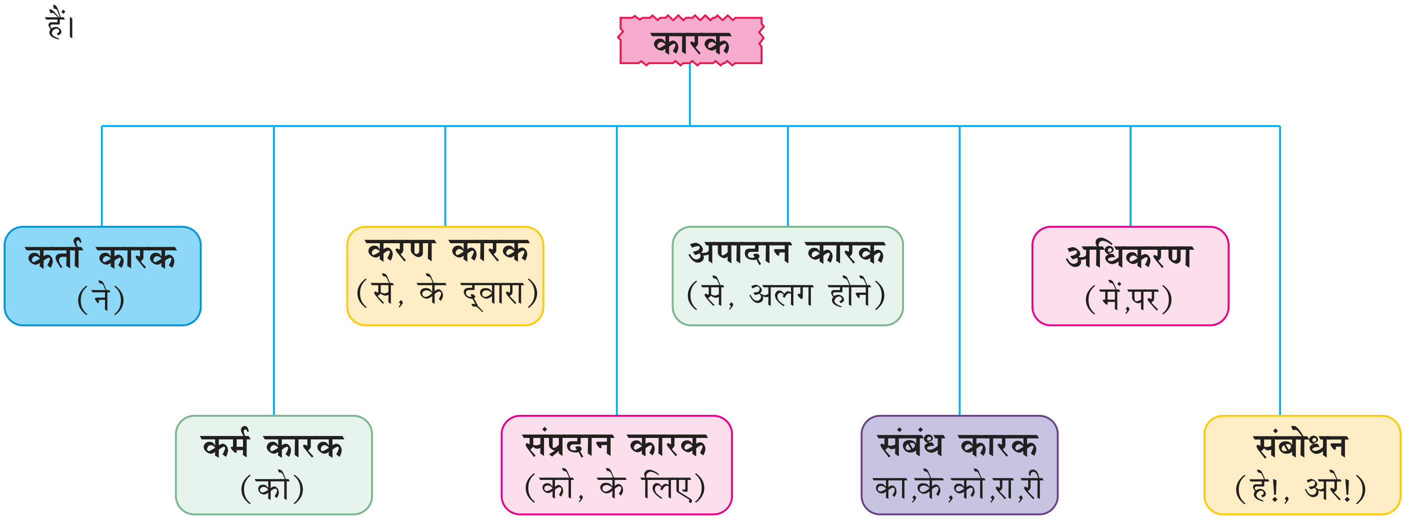

- **परसर्ग–** कारक के चिह्नों को परसर्ग कहते हैं।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को कारक तथा उसके भेदों की विभक्ति चिह्नों को समझाएँ तथा उसके प्रयोग से वाक्यों के बीच होने वाले विभेद को भी बताएँ।

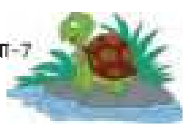

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य
Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) कर्मकारक किसे कहते हैं?

(ख) संबंधकारक का उदाहरण बताइए।

लेखन कार्य
Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) कारक किसे कहते हैं?

(ख) कर्मकारक और संप्रदान कारक में क्या अंतर होता है?

(ग) करणकारक और अपादान कारक में क्या अंतर होता है?

(घ) संबंध कारक की परिभाषा देते हुए उदाहरण भी दीजिए।

2. दी गई विभक्तियों से उनके सही कारक को मिलाइए।

(क) से, के द्वारा →	(i) कर्म कारक
(ख) ने	(ii) अधिकरण कारक
(ग) को, के लिए	(iii) संबोधन कारक
(घ) रा, री, रे, का, की, के	(iv) अपादान कारक
(ङ) हे, अरे	(v) कर्ता कारक
(च) से (अलग होने)	(vi) करण कारक
(छ) को	(vii) संबंध कारक
(ज) में, पर	(viii) संप्रदान कारक

3. दिए गए परसर्गों से वाक्य बनाइए, ताकि कारक स्पष्ट हो जाएँ।

(क) ने – ....

(ख) को – ....

(ग) से – ....

(घ) की – ....

(ङ) से (अलग) – ....

(च) हे – ....

4. दिए गए वाक्यों में सही परसर्ग भरकर वाक्य पूरे कीजिए।

(क) मंदिर दासपुर गाँव .... बना है। (का / के / में)

(ख) कुएँ .... बाल्टी भरकर पानी ले आओ। (में / को / से)

(ग) नेताओं की पेंशन जनता .... दी जाती है। (से / द्वारा / को)

(घ) मोटरगाड़ियाँ सड़कों .... चलती हैं। (मे / पर / से)

(ङ) नानी जी .... बढ़िया खीर बनाई। (द्वारा / ने / को)

(च) .... श्याम! तू कहाँ चला गया था? (हे / अरे / पगले)

5. दिए गए वाक्यों में कारक चिह्नों को रेखांकित करके कारक का नाम लिखिए।

(क) मुझे कुत्तों से डर लगता है। ....

(ख) यह भोजन गरीबों में बाँटना है। ....

(ग) अँधेरा होने पर चोर-उचक्के घूमने लगते हैं। ....

(घ) मैंने अपना गृहकार्य पूरा कर लिया है। ....

(ङ) गुरुजी बच्चों को पढ़ाते हैं। ....

(च) हे ईश्वर! ये कैसा न्याय हो रहा है? ....

(छ) हमेशा बड़ों से आदरपूर्वक बातें करनी चाहिए। ....

(ज) देश को विकास के रास्ते पर ले जाना है। ....

(झ) कहानी की शिक्षा को ग्रहण करना चाहिए। ....

(ञ) आज दिन में तेज़-तेज़ हवाएँ चलीं। ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. करण कारक और आपादान कारक की विभक्ति चिह्न समान है तो आप सोचकर यह बताइए कि किन वाक्यों में करण कारक की विभक्ति चिह्न का प्रयोग होगा और किन वाक्यों में आपादान कारक की विभक्ति चिह्न का?

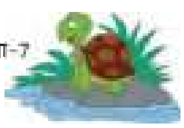

7. अध्यापिका/ अध्यापक छात्रों से कुछ वाक्य बुलवाएँ। उनमें परसर्ग का प्रयोग न हो, फिर उनसे सही परसर्ग भरवाएँ।

8. समझकर लिखिए।

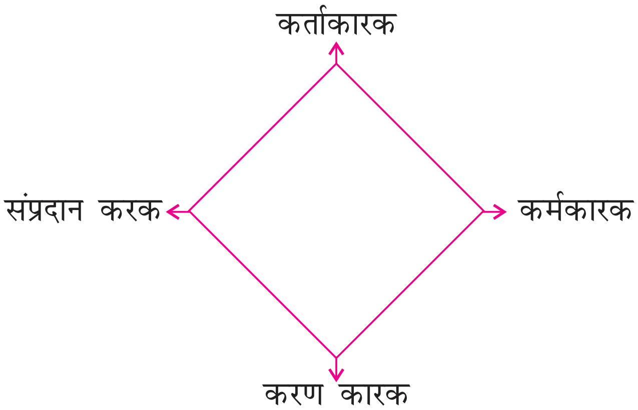

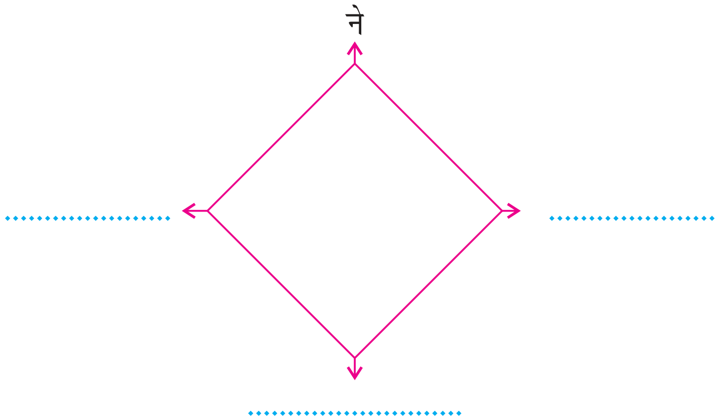

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार कारक-चिह्न शब्दों को जोड़कर एक वाक्य को मजबूती प्रदान करते हैं, उसी प्रकार एकता से राष्ट्र मजबूत बनता है। जिस राष्ट्र में एकता नहीं, वह दुर्बल है।

अध्याय 14

उपसर्ग
(Prefix)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखकर उनके नीचे लिखे शब्द और रंगीन भाग पर ध्यान दीजिए।

सुपुत्र

निडर

खुशबू

बच्चो! ऊपर लिखे शब्दों– सु+पुत्र = सुपुत्र; नि+डर = निडर; खुश+बू = खुशबू। इनमें सु, नि तथा खुश मूल शब्दों– पुत्र, डर तथा बू से पहले लगे हैं और इनसे नए शब्द का निर्माण हो सका है। अत: सु, नि तथा खुश उपसर्ग कहे जाते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि–

ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द से पहले लगकर उनका अर्थ बदल देते हैं और नया शब्द बनाते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

अब आइए, उपसर्ग के भेद या प्रकार की चर्चा करें–

हिंदी भाषा में चार प्रकार के उपसर्ग होते हैं–

(क) संस्कृत के उपसर्ग (ख) हिंदी के उपसर्ग

(ग) उर्दू के उपसर्ग (घ) संस्कृत के अव्यय

(क) संस्कृत के उपसर्ग:

	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण / शब्द
1.	अ	निषेध / अभाव	असत्य, अमर, अकाल, अज्ञान
2.	अव	हीन, बुरा	अवज्ञा, अवशेष, अवतार, अवनति
3.	उत्	श्रेष्ठ, ऊँचा	उत्सव, उत्थान, उत्साह, उत्तम
4.	परि	चारों ओर	परिपूर्ण, परिक्रमा, परिश्रम, पर्यावरण

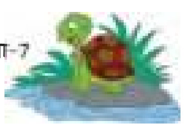

5.	प्र	अधिक, ऊपर	प्रबल, प्रयत्न, प्रकार, प्रशासन
6.	वि	अलग, विशिष्ट	विशेष, विज्ञान, विदेश, विनय
7.	अभि	पास, सामने	अभिमान, अभिलाषा, अभियोग, अभियोजन
8.	प्रति	विरोध, हरएक	प्रतिदिन, प्रतिघात, प्रतिक्षण, प्रतिपक्ष, प्रतिकूल
9.	निर्	रहित, बिना	निर्दय, निर्गुण, निर्भय, निर्मल
10.	सु	अच्छा	सुलभ, सुपुत्र, सुपुत्री, सुगम
11.	निस्/निष्	निषेध	निस्संतान, निष्कपट
12.	उद्	उत्कर्ष	उद्भव, उद्देश्य, उद्घाटन, उद्घोष
13.	स्व	निजी	स्वदेश, स्वराज, स्वतंत्र, स्वभाव
14.	अन्	अभाव	अनादर, अनुपस्थित, अनादि, अननुदार

(ख) हिंदी के उपसर्गः

	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण / शब्द
1.	अन	अभाव	अनजान, अनमोल, अनपढ़, अनचाहा
2.	अध	आधा	अधखिला, अधपका, अधमरा, अधकचरा
3.	नि	रहित	निपुण, निडर, निहत्था, निहंग
4.	भर	पूर्ण	भरपेट, भरसक, भरपूर
5.	अव	हीन	अवसर, अवगुण, अवलंब
6.	उन	कम	उनतीस, उनसठ, उनहत्तर, उनचास
7.	पर	दूसरा, पराया	परदेश, परोपकार, परलोक, परावलंबन
8.	कु	बुरा	कुकर्म, कुरूप, कुसंगति, कुमति
9.	बिन	रहित	बिनब्याहा, बिनबोया, बिनबुलाया
10.	चौ	चार	चौराहा, चौमासा, चौमुखा, चौगुना
11.	सु	अच्छा	सुगंध, सुवास, सुजान, सुयश
12.	अ	अभाव	अचल, अस्पष्ट, अटल, अमर

(ग) उर्दू के उपसर्गः

	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण / शब्द
1.	बे	के बिना	बेदाग, बेशर्म, बेईमान, बेखौफ़
2.	गैर	निषेध	गैरहाज़िर, गैरकानूनी, गैरसरकारी
3.	ला	के बिना	लावारिस, लापरवाह, लाजवाब
4.	ना	नहीं	नालायक, नापसंद, नामुमकिन, नाराज़
5.	बद	बुरा	बदनाम, बदबख्त, बदचलन, बदबू

अध्यापन संकेत — शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को कुछ उपसर्ग पर्चियाँ देकर समूह में उपसर्ग गतिविधि करवाएँ ताकि अभ्यास की पुनरावृति हो सके।

6.	खुश	अच्छा	खुशहाल, खुशखबरी, खुशबू, खुशफहमी
7.	बिला	बिना	बिलाशक, बिलावज़ह, बिलानागा
8.	सर	प्रमुख	सरदार, सरपंच, सरकार, सरहद
9.	दर	में	दरमियान, दरकिनार, दरबार, दरगुज़र
10.	हम	साथ	हमशक्ल, हमसफ़र, हमजोली, हमदर्द
11.	बा	के साथ	बाकायदा, बाइज्ज़त, बाअदब, बामशक्कत
12.	हर	प्रत्येक	हरदिन, हरहाल, हरपल, हरतरफ़
13.	कम	हीन, थोड़ा	कमतर, कमबख्त, कमज़ोर, कमसिन

(घ) संस्कृत के अव्ययः

	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण / शब्द
1.	अंतः	भीतरी	अंत:करण, अंत:पुर, अंत:स्थ
2.	चिर	लंबे समय तक	चिरजीवी, चिरकाल
3.	बहिस्/बहिः	बाहर	बहिष्कार, बहिर्गमन, बहिर्मुख
4.	सह	साथ	सहपाठी, सहचर, सहचरी
5.	अंतर्	भीतरी	अंतर्राष्ट्रीय, अंतर्मन, अंतर्दर्शन
6.	अधः	नीचे	अधोगति, अध:पतन, अधोमार्ग
7.	सत्	सच्चा, अच्छा	सत्संग, सत्पुरुष, सज्जन, सदाचार
8.	पुरस्	आगे	पुरस्कार, पुरस्कृत
9.	कु	बुरा	कुमार्ग, कुबुद्धि, कुपोषण, कुलच्छनी
10.	स	सहित	सचित्र, सपरिवार, सहर्ष, सफल
11.	पुरा	प्राचीन, पहले	पुराकाल, पुरातन, पुरातत्व
12.	स्वयं	स्वत:	स्वयंसेवी, स्वयंसिद्ध, स्वयंवर, स्वयंसेवक
13.	स्व	अपना	स्वदेश, स्वराज, स्वराष्ट्र, स्वाभिमान

आइए, पुनरावृति करें

- उपसर्ग शब्दांश होते हैं, इसलिए इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं हो सकता।
- उपसर्ग मूल शब्द से पहले जुड़कर नए शब्द बनाते हैं।

उपसर्ग

- **संस्कृत के उपसर्ग** (उद्, निर्, अन्, परा, सम्, प्र आदि)
- **हिंदी के उपसर्ग** (अन, कु, अध, बिन, भर, चौ, पर आदि)
- **उर्दू के उपसर्ग** (बिना, बिन, बिला, गैर, खुश, बा आदि)
- **संस्कृत के अव्यय** (स्व, अध:, अंत:, पुरस्, स्वयं, सत्, सह, चिर, पुरा आदि)

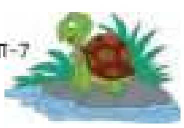

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) खुशमिजाज और भरपेट में कौन-सा उपसर्ग जुड़ा है? बताइए।

(ख) 'स्व' उपसर्ग से बनने वाले दो शब्द बताइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) उपसर्ग किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) हिंदी भाषा में कितने प्रकार के उपसर्ग प्रयोग किए जाते हैं?

(ग) उर्दू के कुछ प्रमुख उपसर्गों से शब्द बनाइए।

2. दिए गए शब्दों में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग करके लिखिए।

(क) स्वाभिमान = स्व (उपसर्ग) + अभिमान (मूल शब्द)

(ख) निडर = ... + ...

(ग) अधोगति = ... + ...

(घ) प्रसन्न = ... + ...

(ङ) अपमान = ... + ...

(च) निस्संकोच = ... + ...

(छ) बिलावजह = ... + ...

(ज) पराजय = ... + ...

(झ) संयोग = ... + ...

(ञ) उत्पत्ति = ... + ...

(ट) बहिर्गमन = ... + ...

(ठ) कुपोषण = ... + ...

(ड) सहपाठी = ... + ...

3. दिए गए उपसर्गों से तीन-तीन नए शब्द बनाइए।

(क) अव – ....

(ख) सु – ....

(ग) पर – ....

(घ) सर – ....

(ङ) ना – ....

(च) अध – ....

(छ) बहिर् – ....

(ज) स्वयं – ....

4. सही विकल्प का चुनाव कीजिए।

(क) 'संविधान' शब्द में उपसर्ग लगा है–

(i) सम ☐ (ii) सम् ☐ (iii) सं ☐ (iv) संवि ☐

(ख) 'लापरवाह' शब्द में उपसर्ग लगा है–

(i) लाप ☐ (ii) लापर ☐ (iii) ला ☐ (iv) वाह ☐

(ग) 'परोपकार' शब्द में उपसर्ग लगा है–

(i) परो ☐ (ii) परा ☐ (iii) पर ☐ (iv) कार ☐

(घ) 'अनुशासन' शब्द में उपसर्ग लगा है–

(i) अन ☐ (ii) अन् ☐ (iii) अनु ☐ (iv) सन ☐

5. उपसर्ग लगाकर रिक्त स्थान भरिए।

....	+	नाम	=	बदनाम	....	+	चय	=	परि
....	+	जन	=	सज्जन	....	+	जीवी	=	चिरजीवी
....	+	पतन	=	अधोपतन	....	+	हार	=	संहार
....	+	कपट	=	निष्कपट	....	+	भय	=	निर्भय
....	+	भाग्य	=	दुर्भाग्य	....	+	कालीन	=	समकालीन
....	+	जन्म	=	पुनर्जन्म	....	+	ईमान	=	बेईमान
....	+	करण	=	अंतःकरण	....	+	मान	=	अनुमान
....	+	अक्ष	=	प्रत्यक्ष	....	+	सिद्ध	=	प्रसिद्ध

6. दिए गए उपसर्गों का प्रयोग करके नए शब्द बनाइए।

निर्	+	....	=	....	नि	+	....	=	....
उत्	+	....	=	....	सम्	+	....	=	....
अप	+	....	=	....	निस्	+	....	=	....
सु	+	....	=	....	परि	+	....	=	....
अधः	+	....	=	....	दुस्	+	....	=	....
गैर	+	....	=	....	अध	+	....	=	....
अंतर	+	....	=	....	बे	+	....	=	....
ला	+	....	=	....	सत्	+	....	=	....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

7. ऐसे शब्द सोचकर बताइए जिनमें उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ हो।

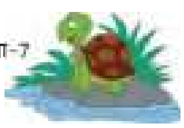

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

8. छात्रों के चार समूह बनवाएँ। प्रत्येक समूह से एक-एक प्रकार के उपसर्गयुक्त शब्द बुलवाएँ।

9. श्यामपट्ट पर कुछ उपसर्ग लिखकर छात्रों से उनसे बने शब्द बुलवाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार शब्द के आगे उपसर्ग लगने पर उसके अर्थ में परिवर्तन हो जाता है उसी प्रकार शिष्टाचार को अपने व्यक्तित्व के आगे लगाने पर हम शिष्ट व्यक्तित्व को पाते हैं।

प्रत्यय
(Suffix)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्रों को देखकर उनके नीचे लिखे रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए।

लड़ाई मत करो।

मंडप की सजावट सुंदर है।

कंगना झूला झूल रही है।

बच्चो! आपने देखा कि ऊपर लिखे सभी रंगीन शब्द– लड़ाई (लड़+आई), सजावट (सज+आवट) तथा झूला (झूल+आ) से मिलकर बने हैं। इन शब्दों के अंत में लगे शब्दांश – 'आई', 'आवट' तथा 'आ' मूल शब्दों– 'लड़', 'सज' तथा 'झूल' के अंत में लगे हैं। इसलिए वे सभी शब्दांश प्रत्यय कहे जाते हैं।

अत: हम कह सकते हैं कि–

मूल शब्दों के अंत में लगने वाले शब्दांश जिनसे नए शब्द बनाए जाते हैं, वे प्रत्यय कहे जाते हैं।

अब आइए, प्रत्यय के भेदों के बारे में बात करें–

प्रत्यय के दो भेद होते हैं– कृत् प्रत्यय तथा तद्धित प्रत्यय।

1. **कृत् प्रत्यय :** इसे कृदंत (कृत+अंत) प्रत्यय भी कहते हैं। क्रिया के मूल रूप के साथ संज्ञा और विशेषण शब्दों का निर्माण करने वाले प्रत्यय कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। इसलिए कृत् प्रत्ययों के योग से बने शब्दों को कृदंत कहते हैं; जैसे–

   दिख + आवा = दिखावा   पाठ + अक = पाठक

   कृत् प्रत्ययों से संज्ञा तथा विशेषण शब्दों की रचना होती है। अत: आइए, संज्ञा तथा विशेषण शब्दों की रचना को समझते हैं।

(क) संज्ञा बनाने वाले कृत् प्रत्यय–

प्रत्यय	धातु	संज्ञा शब्द
अंत	गढ़, भिड़	गढ़ंत, भिड़ंत
अन	सह, वच, गम, मोह	सहन, वचन, गमन, मोहन
अक	सहाय, धाव, पठ, लेख, पाल	सहायक, धावक, पाठक, लेखक, पालक
आ	मेल, पूज, चिंत, झूल, ठेल	मेला, पूजा, चिंता, झूला, ठेला
आन	उठ, थक, चढ़, ढल	उठान, थकान, चढ़ान, ढलान
नी	मथ, चट, धौंक, कर	मथनी, चटनी, धौंकनी, करनी
ई	बोल, खोल, हँस, फँस	बोली, खोली, हँसी, फँसी
आई	लिख, पढ़, लड़, चढ़, सुन	लिखाई, पढ़ाई, लड़ाई, चढ़ाई, सुनाई
औटी	कस, बाप, चून	कसौटी, बपौती, चुनौटी
इया	घट, बढ़, बन, तक	घटिया, बढ़िया, बनिया, तकिया
आक	तैर, चाल	तैराक, चालाक
आव	खिंच, बच, चढ़, कट, बह	खिंचाव, बचाव, चढ़ाव, कटाव, बहाव
आवट	मिल, लिख, थक, आम	मिलावट, लिखावट, थकावट, अमावट

(ख) विशेषण बनाने वाले कृत् प्रत्यय–

प्रत्यय	धातु	संज्ञा शब्द
आलु	दया, कृपा, श्रद्धा	दयालु, कृपालु, श्रद्धालु
अनीय	पठ, कथ, स्मृ, श्लाघ	पठनीय, कथनीय, स्मरणीय, श्लाघनीय
इयल	सड़, मर, अड़	सड़ियल, मरियल, अड़ियल
इया	घट, बढ़, खाट, चोटी	घटिया, बढ़िया, खटिया, चुटिया
आकू	पढ़, लड़	पढ़ाकू, लड़ाकू
आलु	कृपा, दया, ईर्ष्या	कृपालु, दयालु, ईर्ष्यालु
एरा	काम, लूट, ठाठ, मामा	कमेरा, लुटेरा, ठठेरा, ममेरा
ऊ	चाल, डाका, खा, पका, गाय	चालू, डाकू, खाऊ, पकाऊ, गऊ
आड़ी	आगे, पीछे, खेल, कब	अगाड़ी, पिछाड़ी, खिलाड़ी, कबाड़ी

कृत् प्रत्यय के पाँच अन्य भेद होते हैं, जिनकी चर्चा हम अगली कक्षा में करेंगे। ये भेद हैं–1. कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय, 2. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय, 3. करणवाचक कृत् प्रत्यय, 4. भाववाचक कृत् प्रत्यय तथा क्रियार्थक कृत् प्रत्यय।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों में प्रत्यय तथा मूल शब्द के बारे में विशेष रूप से समझाएँ ताकि बच्चों को प्रत्यय जोड़कर शब्द निर्माण करने में समस्याओं का सामना न करना पड़े।

2. तद्धित प्रत्यय–

ऐसे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों के अंत में लगते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे–

सोना (संज्ञा) + आर (प्रत्यय) = सुनार

मीठा (विशेषण) + आस (प्रत्यय) = मिठास

वह (सर्वनाम) + ई (प्रत्यय) = वही

कुछ तद्धित प्रत्यय के उदाहरण निम्नलिखित हैं–

मूल शब्द	प्रत्यय	प्रत्यय लगे शब्द
गरम, चहचह, मुस्कान	आहट	गरमाहट, चहचहाहट, मुस्कराहट
उपज, बिकना, चलता	आऊ	उपजाऊ, बिकाऊ, चलताऊ
सुनार, लुहार, कहार, भक्त	इन	सुनारिन, लुहारिन, कहारिन, भक्तिन
सेठ, जेठ, देवर	आनी	सेठानी, जेठानी, देवरानी
कंजूस, हँस, ठग	ई	कंजूसी, हँसी, ठगी
पढ़, रोज़, ज़बर	आना	पढ़ाना, रोज़ाना, ज़बराना
सूख, भूख, पढ़, कान	आ	सूखा, भूखा, पढ़ा, काना
भड़, मीठा, खट	आस	भड़ास, मिठास, खटास
रोना, भला, अच्छा	आई	रुलाई, भलाई, अच्छाई
डिब्बा, पान, सब्ज़ी, फल	वाला	डिब्बावाला, पानवाला, सब्ज़ीवाला, फलवाला
दादी, नानी	हाल	ददिहाल, ननिहाल
काट, बाप, मान	औती	कटौती, बपौती, मनौती
सात, आठ, पच्चीस	वाँ	सातवाँ, आठवाँ, पच्चीसवाँ
मुंबई, नागपुर, जयपुर	इया	मुंबइया, नागपुरिया, जयपुरिया
चमक, रंग, भड़क	ईला	चमकीला, रंगीला, भड़कीला
बूढ़ा, पूजा, मोटा	आपा	बुढ़ापा, पुजापा, मोटापा
पत्र, कहानी, कला, संगीत	कार	पत्रकार, कहानीकार, कलाकार, संगीतकार

तद्धित प्रत्यय के भी आठ भेद होते हैं, जिन्हें हम अगली कक्षाओं में पढ़ेंगे। ये भेद हैं–1. कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय, 2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय, 3. संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय, 4. गणनावाचक तद्धित प्रत्यय, 5. गुणवाचक तद्धित प्रत्यय, 6. स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय, 7. लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय तथा 8. सादृश्यवाचक तद्धित प्रत्यय।

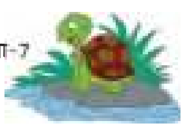

आइए, पुनरावृति करें

- **प्रत्यय**– ये मूल शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं।
- प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं–(क) कृत् प्रत्यय (ख) तद्धित प्रत्यय।
- कृत् प्रत्यय– ये धातुओं एवं क्रियाओं में लगते हैं। इन्हें कृदंत प्रत्यय भी कहा जाता है।
- **तद्धित प्रत्यय**– ये प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों के अंत में जोड़े जाते हैं।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) कृत प्रत्यय के भेद बताइए।

(ख) 'नी' प्रत्यय को जोड़कर दो शब्द बनाइए।

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रत्यय किसे कहते हैं? उदाहरण के साथ बताइए।

(ख) कृत् प्रत्यय को उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) तद्धित प्रत्यय की परिभाषा तथा उदाहरण दीजिए।

(घ) प्रत्यय के भेदों के नाम लिखिए।

2. दिए गए प्रत्ययों से दो-दो शब्द बनाइए।

आवट	....	....	इयल	....	....
नी	....	....	आऊ	....	....
औना	....	....	औती	....	....
वाला	....	....	कार	....	....
ईला	....	....	ईय	....	....
आर	....	....	इया	....	....

3. दिए गए शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए।

शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय	शब्द	मूल शब्द	प्रत्यय
रचनाकार	रचना	कार	गरमी	गरम	ई

दयावान	....	....	गर्वीला	....	....
भारतीय	....	....	धनवान	....	....
बचपन	....	....	मानवता	....	....
डिबिया	....	....	चिकनाहट	....	....
जादूगर	....	....	जंगली	....	....
सुनार	....	....	बबुआइन	....	....

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर रिक्त स्थान भरिए।

(क) वायुयान अब .... भरने वाला है। (उड़)

(ख) कल्पना अच्छी .... है। (नर्तक)

(ग) मिठाई पर .... भिनभिना रही हैं। (मक्खी)

(घ) .... ने ग्राहक को सामान दिया। (दुकान)

(ङ) श्रेया घोषाल बहुत .... गीत गाती है। (सुर)

(च) .... ने ढेर सारे गहने पहन रखे हैं। (सेठ)

(छ) हमारे घर के पास .... बाज़ार लगता है। (सप्ताह)

(ज) दिव्या की .... बहुत सुंदर है। (लिख)

5. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए।

(क) 'ननिहाल' में सही प्रत्यय लगा है–

(i) अनी ☐ (ii) आल ☐ (iii) हाल ☐ (iv) इहाल ☐

(ख) 'रंगीला' शब्द में सही प्रत्यय लगा है–

(i) ईला ☐ (ii) इला ☐ (iii) ला ☐ (iv) गीला ☐

(ग) 'सुनार' शब्द में सही प्रत्यय लगा है–

(i) र ☐ (ii) आर ☐ (iii) नार ☐ (iv) अर ☐

(घ) 'कोल्हापुरी' शब्द में सही प्रत्यय लगा है–

(i) पुरी ☐ (ii) पूरी ☐ (iii) उरी ☐ (iv) ई ☐

(ङ) 'कड़वाहट' शब्द में सही प्रत्यय लगा है–

(i) हट ☐ (ii) वाहट ☐ (iii) आहट ☐ (iv) टै ☐

सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. कुछ ऐसी स्थिति वाले शब्दों को सोचकर बताइए जो आपकी दशा, मनोस्थिति आदि को दर्शाते हैं।

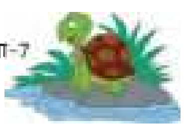

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. दिए गए आयत में से प्रत्ययुक्त शब्द चुनकर लिखिए।

क	लु	टि	या	रि	पु	य	ज	गु
ड़	ला	अ	नु	क	र	णी	य	ण
वा	सा	भा	र	ती	य	क्रो	धी	वा
ह	क	ला	का	र	रू	प	वा	न
ट	गा	ड़ी	वा	ला	द	दि	हा	ल

....

....

....

....

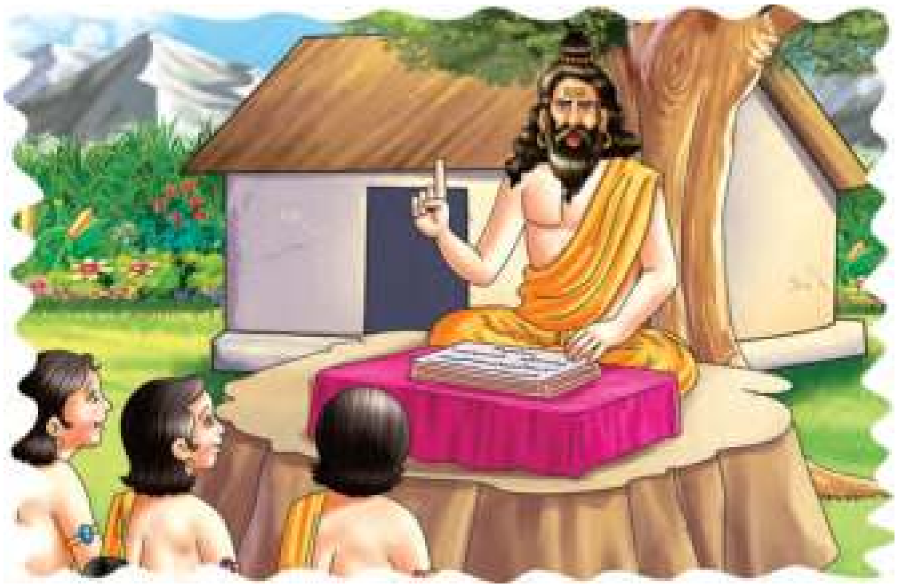

प्रेरणादायक मूल्य

व्यक्ति छोटा हो या बड़ा लेकिन उसके गुण इतने प्रभावकारी होने चाहिए कि यदि वह किसी के भी साथ जुड़ जाएँ तो उसके समस्त ढाँचे को परिवर्तित कर दें।

अध्याय 16

मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms & Proverbs)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! किसी बात को सीधी तरह से कहने में शायद उतना मज़ा नहीं आता है, जितना कि उसे अच्छे एवं परोक्ष अर्थ में छुपी बातों के माध्यम से कहना। इस तरह की बातें प्रायः मुहावरों व लोकोक्तियों के माध्यम से कही जाती हैं।

मुहावरे प्रायः वे वाक्यांश या शब्द समूह होते हैं, जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर लाक्षणिक अर्थ ग्रहण करते हैं उन्हें हम मुहावरा कहते हैं।

सामान्यतः हम मुहावरों को तीन वर्गों में बाँट लेते हैं- (क) मानवीय अंगों से संबंधित (ख) जीव-जंतुओं पर आधारित तथा (ग) खान-पान या खाने की वस्तुओं पर आधारित।

(क) मानवीय अंगों पर आधारित मुहावरे

1. **अँगूठा दिखाना** = मना करना।
   दिनेश ने जब मनीष से अपनी पुस्तक माँगी, तो उसने अँगूठा दिखा दिया।
2. **दाँत खट्टे करना** = बुरी तरह हराना।
   हमारे सैनिकों ने चीनी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।
3. **आँखों में धूल झोंकना** = धोखा देना।
   सुधीर से बचके रहना। वह तो सबकी आँखों में धूल झोंकता फिरता है।
4. **कान कतरना** = बहुत चालाक होना।
   मौसमी है तो अभी बच्ची ही, किंतु वह बड़ों-बड़ों के कान कतरती रहती है।
5. **बाल बाँका न होना** = तनिक भी नुकसान न पहुँचना।
   आजकल नेताओं का ही बोलबाला है। कोई भी उनका बाल बाँका नहीं कर सकता है।
6. **दाहिना हाथ होना** = महत्वपूर्ण व्यक्ति।
   अमित शाह नरेंद्र मोदी का दाहिना हाथ कहे जाते हैं।
7. **घुटने टेकना** = हार स्वीकारना।
   चीन ने हमारी सेना के दमखम के आगे अपने घुटने टेक दिए।
8. **पेट में चूहे कूदना** = बहुत भूख लगना।
   अरे जल्दी से खाना ले आओ, मेरे पेट में तो कबसे चूहे कूद रहे हैं।
9. **पैर पसारना** = नई ज़मीन तलाश करना।
   अंग्रेज़ों ने ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से अपने पैर पसारने शुरू कर दिए।

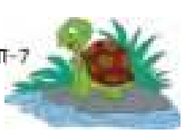

10. **पाँचों उँगलियाँ घी में होना** = हर ओर से लाभ ही लाभ।

हरिहर की तो न पूछो। उनकी तो इस समय पाँचों उँगलियाँ घी में हैं। अपनी पेंशन आ रही है और बहू-बेटे दोनों नौकरी पर लग गए हैं।

11. **कान का कच्चा होना** = किसी की भी बात मान लेना।

प्राय: सभी मालिक लोग कान के कच्चे होते हैं। वे हर किसी की बात सुनकर सहसा उन पर विश्वास कर लेते हैं।

12. **नाक के बाल होना** =अत्यंत प्रिय।

बीरबल तो अकबर की नाक के बाल थे, बीरबल के बिना तो बादशाह को चैन ही नहीं पड़ता था।

13. **माथे पर बल पड़ना** = चिंता का विषय।

आजकल लॉकडाउन में बड़े-बड़े पूँजीपतियों के माथे पर बल पड़ गया है।

14. **कलेजे पर साँप लोटना** = ईर्ष्या करना।

पड़ोसी के बेटे का सिविल सेवा की परीक्षा में चयन होने पर राधे के कलेजे पर साँप लोट गया।

15. **तलवे चाटना** = खुशामद करना।

आजकल तो नौकरियों में टिके रहने के लिए काम के साथ-साथ मालिकों के तलवे भी चाटने पड़ते हैं।

(ख) जीव-जंतुओं पर आधारित मुहावरे

1. **साँप-छछूँदर की गति होना** = निर्णय न ले पाना।

मनीष द्वारा प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी या व्यापार करने के बीच सही निर्णय न ले पाने के कारण उसकी गति साँप-छछूँदर जैसी हो गई है।

2. **घोड़े बेचकर सोना** = निश्‍चिंत हो जाना।

कुछ बच्चे परीक्षा देने के बाद घोड़े बेचकर सोने लग जाते हैं।

3. **मक्खी मारना** = समय बरबाद करना।

पिता ने पुत्र को समझाते हुए कहा- बेटे कुछ काम-धाम की ओर मन लगाओ, ऐसे मक्खियाँ मारने से तो काम नहीं चलेगा।

4. **उड़ती चिड़िया पहचानना** = गुप्त बातें जानना।

आजकल एकाध को छोड़कर सभी न्यूज़ चैनल उड़ती चिड़िया को पहचानने में लगे रहते हैं।

5. **भैंस के आगे बीन बजाना** = बेकार कोशिश करना।

आजकल सरकारें ऐसी हो गई हैं लगता है कि भैंस के आगे बीन बजाना पड़ता है।

6. **साँप सूँघना** = किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाना।

नंदिता घर में सास से झगड़ा कर रही थी कि उसी समय उसके पति आ गए। उन्हें देखकर उसे साँप सूँघ गया।

7. **गिरगिट की तरह रंग बदलना** = हर क्षण बदलते रहना।

कुछ लोग इतने अवसरवादी होते हैं कि हमेशा गिरगिट की तरह रंग बदलते रहते हैं।

8. **किताबी कीड़ा होना** = अधिक पढ़ने की आदत।

किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता पाने के लिए किताबी कीड़ा होना ही पड़ता है।

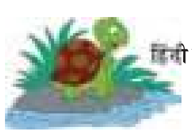

9. **कोल्हू का बैल होना** = बहुत परिश्रमी।

कुछ कर्मचारी कोल्हू का बैल होते हैं, जिनके बूते कंपनी चलती है।

10. **काठ का उल्लू** = मूर्ख व्यक्ति।

रंजना तो काठ का उल्लू है, उससे कुछ भी कहने-सुनने का कोई लाभ नहीं।

(ग) खान-पान या खाने की वस्तुओं पर आधारित मुहावरेः

1. **नमक-मिर्च लगाना** = बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना।

कुछ लोग हर बात को नमक-मिर्च लगाकर पेश करते रहते हैं।

2. **खयाली पुलाव पकाना** = कल्पना में जीना।

पिता ने कहा- चलो, कुछ करना शुरू करो। खयाली पुलाव पकाने से कुछ नहीं होगा।

3. **गाजर-मूली समझना** = किसी को महत्वहीन समझना।

हमें किसी को भी गाजर-मूली नहीं समझना चाहिए।

4. **तिल का ताड़ बनाना** = सामान्य-सी बात को बहुत बढ़ाकर कहना।

आजकल पार्टियों के प्रवक्तागण तिल का ताड़ बनाकर अपनी उपलब्धियाँ गिनाते हैं।

5. **घी के दीये जलाना** = खुशियाँ मनाना।

पुत्री के सिविल सेवा परीक्षा में सफलता के बाद माता-पिता ने घी के दीये जलाए।

6. **अपनी खिचड़ी अलग पकाना** = अकेले कार्य करने का निश्चय।

आजकल प्रसिद्धि पाने के लिए या भीड़ से अलग दिखने के लिए लोग अपनी खिचड़ी अलग पकाते फिर रहे हैं फिर चाहे वह अनुचित ही क्यों न हो।

7. **पापड़ बेलना** = कठिन कार्य करना।

कोरोना समय में जीवन-यापन के लिए बहुत पापड़ बेलने पड़े।

8. **लोहे के चने चबाना** = दुष्कर कार्य।

किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लोहे के चने चबाने पड़ते हैं।

9. **पानी-पानी होना** = शर्मिंदा होना।

कक्षा में चोरी करते पकड़े जाने पर रोहन सबके सामने पानी-पानी हो गया।

10. **गरीबी में आटा गीला होना** = विपत्ति पर विपत्ति आना।

मानचंद अकेला ही घर में कमाने वाला था, कोरोना काल में उसकी नौकरी छूट गई। यह तो गरीबी में आटा गीला वाली बात हुई।

11. **थाली का बैंगन** = सिद्धांत विहीन व्यक्ति

चुनाव आते ही सभी नेतागण टिकट के लिए इधर-उधर होने लगते हैं, मानो वे थाली के बैंगन हो गए हों।

12. **दाल न गलना** = चाल असफल होना।

एक बुजुर्ग ने वोट माँगने आए नेता से कहा- यहाँ क्यों आए हो? अब तक तुमने यहाँ क्या किया? अब तुम्हारी दाल गलने वाली नहीं है।

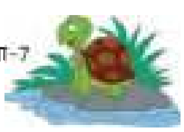

13. **दूध का दूध पानी का पानी** = न्याय होना।

आजकल सरकारें सभी केसों के लिए जाँच बिठा दे रही हैं और ज़ोर-शोर से कह रही हैं कि अब तो दूध का दूध पानी का पानी होगा, किंतु क्या कुछ हो सका है!

14. **तिल का ताड़ बनाना** = छोटी-सी बात को बहुत तूल देना।

अनेक लोगों की आदत होती है कि वे मामूली-सी बात को भी तिल का ताड़ बनाकर प्रस्तुत करते हैं।

15. **आग में घी डालना** = क्रोध को और अधिक भड़काना।

मनीष के पिता जी उस पर क्रोधित होकर भला-बुरा कह रहे थे और मुन्नू उसकी और भी शिकायतें करके आग में घी डालने का काम कर रहा था।

(घ) अन्य मुहावरे

1. **चिराग तले अँधेरा** = पास की गलती या कमी न दिखाई देना।

अरे! थाने के पास ही डकैती पड़ गई। यह तो चिराग तले अँधेरा वाली बात हुई।

2. **पंगा लेना** = बैर मोल लेना।

इस समय मोदी सरकार से पंगा लेने की हिम्मत करना हर किसी के वश की बात नहीं है।

3. **धूल में रस्सी बटना** = असंभव को संभव करने की चेष्टा करना।

सुरेश ने पैसों को निकलवाकर धूल में रस्सी बटने का कार्य कर दिया है।

4. **मीन-मेख निकालना** = गलतियाँ/कमियाँ ढूँढ़ना।

सुनिधि तो अपनी बहू के हर कार्य में मीन-मेख निकालती रहती है।

5. **खटिया खड़ी कर देना** = परेशान करना।

वर्तमान सरकार ने सभी विपक्षी दलों, कुछ समाचार चैनलों की खटिया खड़ी कर दी है।

6. **मशहूर होना** = प्रसिद्ध होना।

आजकल लोग मशहूर होने के लिए नकारात्मक कार्य भी करने से नहीं चूक रहे हैं।

लोकोक्तियाँ (Proverbs)

लोकोक्तियाँ लोक (संसार) में प्रचलित उक्तियाँ (कहावतें) होती हैं, जो अपने दीर्घकालीन अनुभवों पर आधारित होती हैं। इसलिए इन्हें कहावतें भी कहा जाता है। अब आइए, मुहावरे और लोकोक्तियों में अंतर क्या है? इसे जानें।

मुहावरे	लोकोक्तियाँ
1. मुहावरे प्राय: शरीर के अंगों के नाम पर होते हैं।	1. लोकोक्ति में ऐसा कुछ भी निश्चित नहीं है।
2. मुहावरे वाक्य का हिस्सा बन जाते हैं।	2. लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य के समाप्त होने पर पुष्टि स्वरूप किया जाता है।
3. मुहावरे लगाने से वाक्य की सुंदरता बढ़ती है। इनके अंत में प्राय: 'ना' होता है।	3. लोकोक्तियों के प्रयोग से गद्य में कही/लिखी बातें आधार प्राप्त करती हैं। ये जीवन का अनुभव होती हैं।

कुछ लोकोक्तियाँ नीचे दी जा रही हैं:

1. **आ बैल मुझे मार** = मुसीबत मोल लेना।

   इस समय सरकार की बुराई करने का अर्थ है– 'आ बैल मुझे मार' वाली कहावत को चरितार्थ करना।

2. **अंधों में काना राजा** = अल्पज्ञ लोगों में थोड़ा जानने वाला ही मर्मज्ञ समझा जाता है।

   नदेसर अपने गाँव में थोड़ा पढ़ा–लिखा है, इसलिए वह अंधों में काना राजा समझा जाता है।

3. **अधजल गगरी छलकत जाय** = अल्पज्ञ व्यक्ति बढ़ा–चढ़ाकर दिखावा करता है।

   कुछ टी.वी. चैनलों पर प्रश्न कुंडली बताने वाले स्वयं को विज्ञान, चिकित्सा सहित अनेक विषयों के ज्ञाता समझते हैं। ठीक तो है– अधजल गगरी छलकत जाय।

4. **चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात** = कम समय का सुख।

   वेतन मिलने पर कुछ दिन तो बहुत अच्छे–से कटते हैं, फिर धीरे–धीरे दिन सामान्य से असामान्य होते जाते हैं। ऐसा लगता है कि चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात।

5. **आम के आम गुठलियों के दाम** = दोहरा लाभ होना।

   मैं कंपनी के काम से बनारस गया था। लगे हाथ काशी विश्वनाथ जी का दर्शन भी कर लिया। ठीक ही कहा गया है कि आम के आम गुठलियों के दाम।

6. **नाच न जाने आँगन टेढ़ा** = अपनी गलती न मानकर अन्य पर दोषारोपण करना।

   सुलक्षणा ने परीक्षा में कुछ खास लिखा नहीं, परीक्षा में कम नंबर आने पर परीक्षक को कोसने लगी कि उन्होंने बिना पढ़े ही नंबर दे दिया। यह तो वही बात हुई कि नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

7. **घर का भेदी लंका ढाए** = घर की बात बाहर फैलाकर नुकसान पहुँचाना।

   विभीषण ने नाभि में प्राण छिपे होने की बात बताकर रावण का वध करवाया। ठीक ही कहा गया है कि घर का भेदी लंका ढाए।

8. **खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे** = लज्जित होने पर अधिक क्रोध करना।

   मीटिंग में जब राजेश की बात अनसुनी कर दी गई, तो वह एक सदस्य पर नाराज़गी दिखाने लगा। ठीक ही है– खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे।

9. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** = अत्यधिक परिश्रम का थोड़ा फल।

   रजनीश ने वर्षों तक सिविल परीक्षा की तैयारी की, किंतु एक क्लर्क ही बन पाया। यह तो वही बात हुई कि खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

10. **एक हाथ से ताली नहीं बजती** = झगड़ा अकेले नहीं होता है।

    राजू के पिता जी के पास उनके पड़ोसी शिकायत लेकर आए कि राजू ने उनके पुत्र से मार–पिटाई की है। इस पर वे बोले कि ताली एक हाथ से नहीं बजती।

11. **एक अनार सौ बीमार** = चीज़ कम माँग अधिक।

कोरोना काल में हर कोई गिलोय को ढूँढ़ता फिर रहा था। इस पर तो, एक अनार सौ बीमार वाली कहावत लागू होती है।

12. **चोर पर मोर** = एक–दूसरे से ज्यादा धूर्त।

अरे विनोद और विकास को कम मत समझो, ये दोनों तो चोर पर मोर हैं।

13. **साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे** = सरलता व चालाकी से काम कर लेना।

आजकल नेता जी लोग चाहते हैं कि उन्हें वोट भी मिल जाए वह भी बिना कुछ विशेष किए, वे साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे की नीति पर चलना चाहते हैं।

14. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** = बलवान ही जीतता है।

सरकारें अपने ही लोगों को चेयरमैन, राज्यपाल आदि पद देती हैं, चाहे वे कैसे भी हों। ठीक ही कहा गया है कि जिसकी लाठी उसकी भैंस।

15. **दूर के ढोल सुहावने** = दूर की वस्तु सुंदर लगती है।

सरकारें जिस विभाग को स्वच्छ कहती हैं, अंदर जाकर देखिए तो पता चलेगा कि दूर के ढोल सुहावने लगते हैं।

16. **आगे कुआँ पीछे खाई** = चारों तरफ मुसीबत।

राजेश के पड़ोसी की बहन की शादी है। यदि जाता है तो कोरोना का खतरा है, यदि नहीं जाता है तो पड़ोसी नाराज़ होगा। वह क्या करे, उसके तो आगे कुआँ और पीछे खाई है।

17. **रस्सी जल गई पर बल न गया** = खराब स्थिति में भी घमंड करना।

रघुपति खाने के लिए भी परेशान है, किंतु उसके तेवरों से पता चलता है कि वह लखपति है। ठीक ही कहा गया है– रस्सी जल गई पर बल न गया।

18. **ऊँट के मुँह में जीरा** = ज्यादा खाने वाले को कम खाना देना।

पहलवान को केवल दो रोटी देना तो ऊँट के मुँह में जीरा देने वाली बात होगी।

आइए, पुनरावृति करें

- **मुहावरे** – मुहावरे अपना मुख्य अर्थ या सामान्य अर्थ छोड़कर लाक्षणिक अर्थ ग्रहण करते हैं। इससे भाषा सुंदर हो जाती है।
- **लोकोक्तियाँ** – ये कहावतें होती हैं, जो लोगों के दीर्घकालिक अनुभवों पर आधारित होती हैं।
- लोकोक्तियों तथा मुहावरों में अंतर होता है।

अध्यापन संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को मुहावरे एवं लोकोक्ति के प्रयोग द्वारा वाक्य निर्माण की प्रक्रिया का बोध कराएँ। ताकि बच्चों को कक्षा–चर्चा के दौरान अनुभव प्राप्त होता रहे।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) मुहावरे सामान्य अर्थ छोड़कर किस प्रकार का अर्थ ग्रहण करते हैं?

(ख) लोकोक्तियों का अन्य नाम क्या है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) मुहावरे किसे कहते हैं?

(ख) लोकोक्तियाँ किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

2. चित्र पहचान कर उस पर बनने वाला मुहावरा लिखिए और उसका अर्थ भी लिखिए।

(क) : ....

(ख) 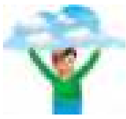 : ....

(ग) 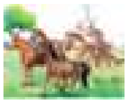 : ....

(घ) : ....

(ङ) : ....

3. दिए गए मुहावरों से उनके अर्थों को मिलाइए।

(क) कोल्हू का बैल	(i) अनुभवी होना
(ख) घोड़े बेचकर सोना	(ii) अवाक् रह जाना
(ग) उड़ती चिड़िया पहचानना	(iii) क्रोध को और बढ़ाना
(घ) हाथों के तोते उड़ना	(iv) चाल न चलना
(ङ) आग में घी डालना	(v) बहुत काम करना
(च) दाल न गलना	(vi) खुशियाँ मनाना
(छ) घी के दीये जलाना	(vii) शर्मसार होना
(ज) पानी-पानी होना	(viii) निश्चिंत हो जाना
(झ) लोहे के चने चबाना	(ix) कठिन कार्य करना

4. दिए गए मुहावरों तथा लोकोक्तियों से वाक्य बनाइए।

(क) अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना – ....

(ख) ऊँची दुकान फीका पकवान – ....

(ग) गिरगिट की तरह रंग बदलना – ....

(घ) सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना – ....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. मुहावरे व लोकोक्तियाँ यदि नहीं होते तो हमारी भाषा में रोचकता कैसे होती?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. दिए गए अर्थों से संबंधित मुहावरे लिखिए और उनके वाक्य प्रयोग भी कीजिए।

(क) अपनी बड़ाई स्वयं करना – ....

(ख) चुगली करना – ....

प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार मुहावरे एवं लोकोक्ति के प्रयोग द्वारा भाषा को सुंदर बनाया जा सकता है उसी तरह अनुशासन, परिश्रम, संयम, सत्यता व्यक्ति के जीवन को सुंदर बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

शब्द-भंडार
(Word-Vocabulary)

पढ़िए और समझिए

शब्द-भंडार के बिना हमारी भाषा अच्छी नहीं हो सकती अर्थात् हमारे बोलने एवं लिखने में कठिनाई उत्पन्न होती है। इसलिए प्रारंभ से ही शब्दों के भंडार (word stock) को बढ़ाना आवश्यक होता है। यदि आपके पास शब्दों का अच्छा भंडार रहता है, तो आप निर्बाध रूप से बोल-लिख सकते हैं।

बच्चो! हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने में अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ये शब्द निम्नलिखित हैं– 1. पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द, 2. विलोम या विपरीतार्थक शब्द, 3. अनेकार्थक शब्द, 4. वाक्यांशबोधक शब्द, 5. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द।

1. पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द:

ऐसे शब्द जिनसे समान अर्थ का बोध होता है, वे पर्यायवाची या समानार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे–

सूर्य – भानु, रवि, प्रभाकर, दिवाकर

नीचे पर्यायवाची शब्दों की सूची दी गई है–

शब्द	पर्यायवाची शब्द	शब्द	पर्यायवाची शब्द
आग	अग्नि, वह्नि, अनल, पावक	आम	आम्र, अमिय फल, रसाल
आसमान	आकाश, नभ, व्योम, शून्य	कमल	पंकज, सरोरुह, नीरज, तोयज, अरविंद
कपड़ा	वस्त्र, पोशाक, पट, चीर	अश्व	घोड़ा, सैंधव, हय, बाजि
कर	हाथ, हस्त, हथेली	इंद्र	सुरेश, सुरपति, देवेश, देवराज
वन	कानन, विपिन, अरण्य, जंगल	उपवन	बगीचा, बगिया, उद्यान, बाग
शेर	सिंह, केसरी, वनराज	कोयल	पिक, श्यामा, कोकिल
गाय	धेनु, गौ, सुरभि	सागर	रत्नाकर, उदधि, समुद्र, जलधि
आदमी	नर, मानव, मनुष्य, जन	हाथी	गज, हस्ती, मतंग
सर्प	साँप, भुजंग, नाग, विषधर	घर	गेह, आवास, सदन, गृह
दिन	वासर, दिवस, वार	नारी	महिला, स्त्री, वामा, कामिनी
स्वर्ग	देवलोक, परलोक, आनंदलोक	पेड़	तरु, विटप, वृक्ष, पादप
चंद्रमा	चाँद, शशि, चंद्र, राकेश, शशांक	सरस्वती	वाग्देवी, वीणावादिनी, शारदा
पत्थर	पाहन, पाषाण, प्रस्तर, अश्मक	पहाड़	भूधर, गिरि, नग, पर्वत

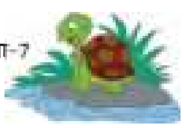

शब्द	पर्यायवाची शब्द	शब्द	पर्यायवाची शब्द
जल	वारि, पानी, सलिल, आब	नदी	सरिता, नद, सलिला
राजा	नृप, बादशाह, नरेश, भूपति	संसार	विश्व, दुनिया, संसार, जग, इहलोक
पृथ्वी	धरती, वसुधा, धरा, धरित्री	मछली	मत्स्य, मीन, झष
गंगा	सुरसरि, त्रिपथगामिनी, मंदाकिनी, भागीरथी	सोना	कंचन, सुवर्ण, स्वर्ण, हेम
बादल	मेघ, वारिद	गणेश	विघ्नहर्ता, गणपति, एकदंत
मुख	वदन, मुख, चेहरा	शरीर	देह, मिट्टी, तन, काया

2. विलोम या विपरीतार्थक शब्दः

विलोम शब्द ऐसे शब्द होते हैं, जो किसी शब्द का उल्टा अर्थ बताते हैं; जैसे–

रात × दिन

कुछ शब्दों के विलोम शब्द नीचे दिए गए हैं–

शब्द		विलोम शब्द	शब्द		विलोम शब्द
सुंदर	×	कुरूप	साधारण	×	असाधारण
उठना	×	बैठना	रक्षक	×	भक्षक
आना	×	जाना	मौखिक	×	लिखित
पक्ष	×	विपक्ष	अतिवृष्टि	×	अनावृष्टि
सत्कर्म	×	दुष्कर्म	आमिष	×	निरामिष
सगुण	×	निर्गुण	आश्रित	×	अनाश्रित
प्रवेश	×	निषेध	आकर्षण	×	विकर्षण
मीठा	×	खट्टा	कायर	×	वीर
परिचित	×	अपरिचित	कोमल	×	कठोर
सार्थक	×	निरर्थक	अथ	×	इति
हर्ष	×	शोक	आकाश	×	पाताल
आदर	×	निरादर	आदान	×	प्रदान
उपयुक्त	×	अनुपयुक्त	अर्थ	×	अनर्थ
आदि	×	अंत	आलस्य	×	स्फूर्ति
आय	×	व्यय	आयात	×	निर्यात
ह्रस्व	×	दीर्घ	स्वच्छ	×	मलिन
संभव	×	असंभव	तरल	×	ठोस
प्राचीन	×	नवीन	गुण	×	दोष
जड़	×	चेतन	गहरा	×	उथला
सबल	×	निर्बल	खूबसूरत	×	बदसूरत

शब्द		विलोम शब्द	शब्द		विलोम शब्द
विशेष	×	सामान्य	सार्थक	×	निरर्थक
मुमकिन	×	नामुमकिन	सुविधा	×	असुविधा
सरल	×	कठिन	दयालु	×	क्रूर
भीतर	×	बाहर	खाद्य	×	अखाद्य
मान	×	अपमान	सज्जन	×	दुर्जन

3. अनेकार्थक शब्द:

बच्चो! जब एक ही शब्द से अनेक अर्थ प्रकट होते हों, तो उसे अनेकार्थक शब्द कहते हैं। 'अनेकार्थक' को यदि विस्तारित करें तो इसका अर्थ होगा– अनेक अर्थक या अनेक अर्थ वाला; जैसे–

आम – एक फल, साधारण

नीचे कुछ अनेकार्थक शब्द दिए गए हैं–

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पद	कविता का चरण, पैर, ओहदा, डग, किरण	गुरु	बृहस्पति ग्रह, अध्यापक, बड़ा, श्रेष्ठ
मत	वोट, राय, नहीं, धर्म	योग	जोड़, ध्यान, युक्ति, उपाय
मुद्रा	मुहर, धन, अँगूठी, हठयोग का आसन	बल	शक्ति, ऐंठन, सेना, स्थूलता, ताकत
वर्ण	रंग, जाति, अक्षर, भेद, यश	मधु	शहद, मदिरा, मीठा, वसंत ऋतु
हंस	एक पक्षी, घोड़ा, सूर्य, आत्मा, विष्णु	वर	श्रेष्ठ, दूल्हा, बालक, वरदान, कुंकुम
अमृत	स्वर्ण, घी, दूध, जल, अन्न	द्विज	पक्षी, ब्राह्मण, दाँत, चाँद, क्षत्रिय, वैश्य
उत्तर	एक दिशा, जवाब, बचाव, बदला	कला	चंद्रमा की कलाएँ, अंश, छोटा भाग, गुण
जाल	माया, फंदा, जाली, फरेब, छल	पूर्व	एक दिशा, पहले, पुरखा
फल	पेड़ों पर लगने वाले फल, परिणाम, तीर-बरछी का अग्र भाग	सोम	चंद्रमा, सप्ताह का एक दिन, अमृत, कंजूस, कपूर
शून्य	गिनती का अंक, आकाश, खाली, अभाव, निराकार	अज	बकरा, चंद्रमा, भेंड़ा, दशरथ के पिता, ब्रह्मा
अलि	कोयल, भँवरा, बिच्छू, कौआ	अंबर	आकाश, कपास, वस्त्र, अभ्रक
अर्थ	धन, प्रयोजन, हेतु, मतलब	घन	बादल, हथौड़ा, घंटा, लोहा
दल	समूह, सेना, पत्ता, म्यान, गिरोह	भूत	बीता हुआ कल, प्रेत, प्राणी, उत्पन्न
विधि	उपाय, विधाता, न्याय, कानून, ब्रह्मा	वंश	कुल, संतान, बाँस, गति
मूल	जड़, उत्पत्ति स्थान, आरंभ, आदि, कारण		

4. वाक्यांशबोधक शब्द:

कभी-कभी किसी बात को थोड़ा विस्तार में समझाने के बजाय एक शब्द कहने से ही बात समझ में आ जाती है। वे ही 'एक शब्द' वाक्यांशबोधक शब्द कहलाते हैं; जैसे–

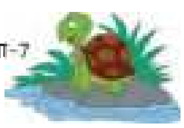

दूसरों के लिए अच्छी सोच रखने वाला – शुभचिंतक। यहाँ 'शुभचिंतक' शब्द वाक्यांशबोधक हुआ। 'दूसरों के लिए अच्छी सोच रखने वाला' वाक्यांश हुआ। कुछ वाक्यांशबोधक शब्द उनके वाक्यांश के साथ नीचे दिए जा रहे हैं–

वाक्यांश	एक शब्द	वाक्यांश	एक शब्द
बहुत तेज़ बुद्धि वाला	कुशाग्रबुद्धि	जिसके पार भी देखा जा सके	पारदर्शी
मछली की तरह आँखों वाली	मीनाक्षी	हिरनी के समान आँखों वाली	मृगनयनी
अत्यधिक खर्च करने वाला	खर्चीला / शाहखर्ची	जिसे प्राप्त करना सरल हो	सुलभ
जिसे प्राप्त करना कठिन हो	दुर्लभ, दुष्कर	साथ पढ़ने वाला	सहपाठी
साथ काम करने वाला	सहकर्मी	जीने की प्रबल इच्छा रखना	जिजीविषा
मोक्ष की कामना रखने वाला	मुमुक्षु	जो मांस का सेवन नहीं करता है	निरामिष
जो मांस-मछली का सेवन करता हो	आमिष	जो केवल शाक-पात का सेवन करता हो	शाकाहारी
जिस पुरुष की पत्नी मर गई हो	विधुर	जिस स्त्री का पति मर गया हो	विधवा
जिस स्त्री का पति जीवित हो	सधवा	जो कम जानकारी रखता हो	अल्पज्ञ
इतिहास की जानकारी रखने वाला	इतिहासज्ञ/इतिहासकार	जो कार्य विधि (कानून) के सम्मत न हो	गैरकानूनी
जो आँखों से न दिखाई दे	अप्रत्यक्ष	जो जन्म से ही अंधा हो	जन्मांध
उच्च कुल से संबंध रखने वाला	कुलीन	जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
जिस व्यक्ति का कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु	जिस व्यक्ति के कोई संतान न हो	निस्संतान/निःसंतान
पंद्रह दिन में एक बार होने वाला	पाक्षिक	महीने में एक बार होने वाला	मासिक
पढ़ी जाने वाली चीज़	पठनीय	वर्ष में एक बार होने वाला	वार्षिक
नीचे लिखा हुआ	निम्नलिखित	जिसका कोई आकार है	साकार
जिसका कोई आकार नहीं है	निराकार	ऊपर कहा गया	उपर्युक्त
जिसने अपनी इंद्रियों को जीत लिया हो	जितेंद्रिय	जिसकी तुलना किसी से न की जा सके	अतुलनीय
जहाँ पहुँचना असंभव हो	अगम	जो क्षमा करने के योग्य न हो	अक्षम्य
जो व्यक्ति सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ	जिस व्यक्ति की उपमा न दी जा सके	अनुपम

5. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दः

ऐसे शब्द जो सुनने में तो लगभग समान लगें, किंतु उनके अर्थ भिन्न होते हों, उन्हें श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहते हैं; जैसे– अनु – अणु, अनु – पीछे, अणु – कण।

कुछ श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द उनके अर्थों के साथ नीचे दिए गए हैं–

शब्द		अर्थ
आयत	–	चतुर्भुज
आयात	–	बाहर से मँगाना
अवधि	–	काल, समय
अवधी	–	अवध की भाषा
द्रव	–	तरल
द्रव्य	–	धन
निसान	–	झंडा
निशान	–	चिह्न, प्रतीक
शूर	–	वीर
सूर	–	अंधा
प्रणय	–	प्रेम
परिणय	–	विवाह
श्रवण	–	सुनना
श्रावण	–	एक महीने का नाम
लक्ष्य	–	उद्देश्य
लक्ष	–	लाख
बात	–	बातचीत
वात	–	हवा
शोक	–	दुख
शौक	–	चाव, व्यसन
दिन	–	वार, वासर
दीन	–	गरीब
निर्वाण	–	मृत्यु
निर्माण	–	बनाना
शक्ल	–	सूरत
सकल	–	संपूर्ण
अंबर	–	आकाश, वस्त्र
अंबार	–	ढेर
अनल	–	आग
अनिल	–	वायु

शब्द		अर्थ
सर्ग	–	अध्याय
स्वर्ग	–	एक लोक
शुल्क	–	फ़ीस
शुक्ल	–	श्वेत, उजाला
भवन	–	महल, घर
भुवन	–	संसार
पानी	–	जल
पाणि	–	हाथ
कृपण	–	कंजूस
कृपाण	–	तलवार
इंदिरा	–	लक्ष्मी
इंद्रा	–	इंद्राणी (इंद्र की पत्नी)
कोस	–	दूरी का माप
कोश	–	खज़ाना
पास	–	निकट
पाश	–	बंधन
खान	–	खदान
ख़ान	–	पठान
कड़ाई	–	सख्ती
कढ़ाई	–	कशीदाकारी
शम	–	शांति
सम	–	समान, बराबर
पवन	–	वायु
पावन	–	पवित्र
गुर	–	तरकीब
गुरु	–	शिक्षक, भारी
पुर	–	नगर
पूर	–	बाढ़
अगम	–	दुर्गम
आगम	–	शास्त्र

अध्यापन संकेत

शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को शब्द-भंडार के अंतर्गत शामिल समस्त शब्द समूहों को विस्तारपूर्वक समझाएँ तथा उन समस्त शब्द समूहों के बीच विभेदों को स्पष्टता के साथ बताएँ।

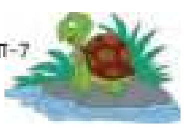

आइए, पुनरावृति करें

- **शब्द-भंडार**– शब्दों का भंडारण करना।
- **विपरीतार्थक शब्द**– ऐसे शब्द जो किसी शब्द के विरोधी शब्द होते हैं।
- **श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द**– ऐसे शब्द सुनने में लगभग समान लगते हैं किंतु उनके अर्थों में भिन्नता पाई जाती है।
- **वाक्यांशबोधक शब्द**– ऐसे शब्द जो किसी वाक्यांश के बदले बोले जाते हैं।
- **पर्यायवाची शब्द**– ऐसे शब्द जिनका अर्थ किसी शब्द के समान होता है, वे पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।
- **अनेकार्थक शब्द**– ऐसे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं, उनको अनेकार्थक शब्द कहा जाता है।
- अधिकाधिक शब्दों का भंडारण करने से हमें भाषा को लिखने-बोलने में कोई भी कठिनाई नहीं आती है।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) शब्द-भंडार के अंतर्गत शामिल शब्द समूहों को बताइए।

(ख) 'वाक्यांशबोधक' किसे कहते हैं?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) शब्द-भंडार से क्या-क्या लाभ होता है?

(ख) वाक्यांशबोधक शब्द किसे कहते हैं, उदाहरण भी दीजिए।

(ग) श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द से आप क्या समझते हैं?

(घ) अनेकार्थक शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित लिखकर बताइए।

2. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

आनंद	–	दीर्घ	– ....
गहरा	–	आमिष	– ....
उपस्थित	–	उपयोगी	– ....
आदान	–	एकता	– ....
अतिवृष्टि	–	इच्छा	– ....
स्थूल	–	हर्ष	– ....
निर्मल	–	चंचल	– ....

3. **दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।**

सिंह – .... कोयल – ....

हाथी – .... तलवार – ....

पक्षी – .... किरण – ....

हवा – .... बंदर – ....

पत्थर – .... अपमान – ....

अतिथि – .... सोना – ....

4. **दिए गए शब्दों के तीन-तीन अर्थ लिखिए।**

घन → .... → .... → ....

आम → .... → .... → ....

पूर्व → .... → .... → ....

5. **दिए गए वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।**

(क) उच्च कुल से संबंध रखने वाला – ....

(ख) पंद्रह दिन में एक बार होने वाला – ....

(ग) जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो – ....

(घ) जानने की इच्छा रखने वाला – ....

(ङ) जिसकी उपमा न दी जा सके – ....

(च) दूसरों का अच्छा सोचने वाला – ....

6. **दिए गए चित्रों के तीन-तीन नाम लिखिए।**

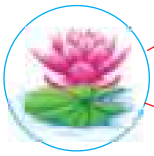

→ .... → .... → ....

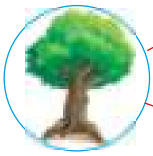

→ .... → .... → ....

7. **दिए गए शब्दों के सही विलोम शब्दों से मिलान कीजिए।**

(क) निद्रा	(i) माफ़ी
(ख) स्थल	(ii) निरक्षर
(ग) आकर्षण	(iii) दुरात्मा
(घ) अदृश्य	(iv) मृत्यु
(ङ) साक्षर	(v) अनुकूल
(च) जन्म	(vi) जागरण
(छ) प्रतिकूल	(vii) सदृश्य
(ज) महात्मा	(viii) विकर्षण
(झ) सजा	(ix) जल

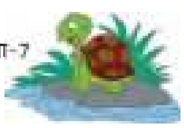

8. **दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए–**

कोस	....	कंगाल	....	कृपण	....
कोश	....	कंकाल	....	कृपाण	....
खान	....	शस्त्र	....	इतर	....
ख़ान	....	शास्त्र	....	इत्र	....

सोचें-विचारें

Critical Thinking

9. **समय की गति से सामंजस्य बिठाकर जो व्यक्ति जीवन में अपनी गति को बनाए रखता है, उसे सच्चे अर्थों में प्राप्त होती है। 'गति' शब्द के अलग-अलग अर्थ सोचकर बताइए।**

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

10. **छात्रों को दो समूहों में बाँटकर एक से शब्द तथा दूसरे से उसका विलोम शब्द बुलवाएँ।**

11. **श्यामपट्ट पर कुछ चित्र बनाकर उनके कुछ पर्यायवाची शब्द छात्रों से बुलवाएँ।**

12. **छात्रों से शब्दाक्षरी के खेल से अनेक शब्द बुलवाएँ और उनके विलोम, पर्यायवाची, अनेकार्थी शब्द पूछें और लिखवाएँ।**

13. **दिए गए वर्ग में से वाक्यांश बोधक शब्द चुनकर लिखिए–**

जो देखने में अच्छा लगे ....
जिसकी संतान न हो ....
जिसके नीचे रेखा खिंची हो ....
पंद्रह दिन में एक बार होने वाला ....
उच्च कुल से संबंध रखने वाला ....
जिसकी उपमा न दी जा सके ....
इतिहास लिखने वाला ....
जो आँखों के सामने न हो ....
कम खर्च करने वाला ....
साथ पढ़ने वाला ....
साथ काम करने वाला ....
मछली की तरह आँखों वाली ....
जिसकी पत्नी मर गई हो ....
जिसे प्राप्त करना आसान हो ....

पा	रे	खां	कि	त	
क्षि		कु	ली	न	नि
क	अ	नु	प	म	स्सं
अ	प्र	त्य	क्ष	इ	ता
मि	त	व्य	यी	ति	न
स	ह	क	र्मी	हा	प्रि
ह	सु	वि	मी	स	य
पा	ल	धु	ना	का	द
ठी	भ	र	क्षी	र	र्शी

प्रेरणादायक मूल्य

संपत्ति का भंडार व्यक्ति को धनवान बनाता है, इसी प्रकार शब्दों का भंडार व्यक्ति को विद्वान बनाता है। अतएव, शब्दों का संग्रह करते रहना चाहिए।

अध्याय 18

वाक्य-विचार (The Sentence)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और उसके नीचे लिखे वाक्य पढ़िए–

रंजना खेल रही है।

रामलीला शुरू होने वाली है।

बच्चे खेल रहे हैं।

बच्चो! आप जानते हैं कि ऊपर के उदाहरणों में पूरे-पूरे वाक्य लिखे हैं। पूरे वाक्य के बजाय यदि केवल 'रंजना', 'होने वाली है' या केवल 'खेल' कहें तो कोई भी बात को समझ नहीं सकेगा। इसलिए पूरे वाक्य का बोलना या लिखना आवश्यक होता है। **वाक्य** सार्थक शब्दों के समूह होते हैं।

आप जानते हैं कि अनेक वर्णों से मिलकर शब्द बनते हैं। शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं, तो उन्हें **पद** कहा जाता है। अनेक पद मिलकर वाक्य बनाते हैं। वाक्य में पदों का प्रयोग भी व्याकरणिक नियमों के अंतर्गत किया जाता है।

अब आइए, जानते हैं कि वाक्य के कितने अंग होते हैं।

वाक्य के मुख्यत: दो अंग होते हैं– उद्देश्य तथा विधेय।

उद्देश्य: वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, वह उद्देश्य कहा जाता है; जैसे–

रवींद्र मैदान में खेल रहा है।

गुड़िया रस्सी कूद रही है।

इन वाक्यों में 'रवींद्र' तथा 'गुड़िया' उद्देश्य हैं। क्योंकि इन्हीं के कार्यों के बारे में वाक्य में सूचना दी गई है। इसलिए ये उद्देश्य कहे जाते हैं।

विधेय: उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, वह विधेय कहा जाता है; जैसे–

माता जी भोजन बना रही हैं।

जानवरों की सभा हो रही है।

यहाँ भोजन बनाने का कार्य माता जी द्वारा किया जा रहा है तथा सभा होने का कार्य जानवरों द्वारा किया जा रहा है। अतएव यहाँ '**भोजन बना रही हैं।**' एवं '**सभा हो रही है**'। ये सब **विधेय** कहलाते हैं।

अब आइए, वाक्य के भेदों पर चर्चा करते हैं।

वाक्य के भेद दो आधारों पर तय किए जाते हैं– 1. रचना के आधार पर तथा 2. अर्थ के आधार पर

1. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद निश्चित किए गए हैं–

(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) मिश्रित वाक्य

(क) सरल वाक्य : ऐसे वाक्य जिनमें केवल एक उद्‌देश्य तथा एक ही विधेय हो, उन्हें **सरल वाक्य** कहा जाता है; जैसे–

सरला पुस्तक पढ़ती है।

महेश भजन गाता है।

चंद्राणी सितार बजाती है।

यहाँ वाक्यों में एक ही उद्‌देश्य **सरला**, **महेश** तथा **चंद्राणी** प्रयुक्त हुए हैं। इसके अलावा एक ही विधेय इन तीनों वाक्यों में क्रमश: 'पुस्तक पढ़ती है', 'भजन गाता है' तथा 'सितार बजाती है' प्रयुक्त हुए हैं। इसलिए ये तीनों वाक्य सरल वाक्य के उदाहरण हैं।

(ख) संयुक्त वाक्य : जिस वाक्य में एक से अधिक सरल वाक्य समुच्चयबोधक शब्दों– या, अथवा, और, पर से जुड़ें हों, वहाँ पर **संयुक्त वाक्य** होता है; जैसे–

सविता गीत गाएगी **अथवा** कहानी सुनाएगी।

रोहन कल छात्रावास जाएगा **किंतु** नरेश आज ही चला गया।

यहाँ दोनों वाक्यों में **अथवा** या **किंतु** से एक-एक सरल वाक्य और जुड़ा हुआ है।

(ग) मिश्रित वाक्य : जिस भी वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य हो और दूसरा आश्रित उपवाक्य हो, उसे **मिश्रवाक्य** या **मिश्रित वाक्य** कहा जाता है। इसमें आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य पर आधारित होता है; जैसे–

वह नदी पार नहीं कर सका, **क्योंकि** नदी में बाढ़ आई हुई थी।

कोरोना काल में परिवहन नहीं था, **इसलिए** कंपनियाँ बंद करनी पड़ीं।

रवि परीक्षा नहीं दे सका, **क्योंकि** केंद्र काफ़ी दूर पड़ता था।

इन वाक्यों में (दोनों वाक्य)-एक प्रधान दूसरा आश्रित उपवाक्य आए हैं और दोनों ही **क्योंकि**, **इसलिए** से जुड़े हैं। इसलिए ये तीनों मिश्रवाक्य के उदाहरण हैं।

2. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद–

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं– 1. विधानवाचक वाक्य 2. निषेधात्मक वाक्य 3. प्रश्नवाचक

वाक्य 4. आज्ञावाचक वाक्य 5. विस्मयादिवाचक वाक्य 6. संदेहवाचक वाक्य 7. इच्छावाचक वाक्य 8. संकेतवाचक वाक्य।

इनके बारे में विस्तार से हम अगली कक्षा में चर्चा करेंगे।

अब आइए, यह जानें कि हम वाक्य में गलतियाँ किस-किस तरह से करते हैं।

1. पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ–

वाक्य में पदों का एक क्रम निश्चित होता है, तभी उनसे सार्थक अर्थ निकलता है। यदि शब्दों (पदों) का स्थान परिवर्तित कर दिया जाए, तो उनसे या तो अर्थ नहीं निकलेगा या निकलेगा तो दूसरा अर्थ निकलेगा।

जैसे–	रोगी को दवा पिलाकर हिलाइए।	(गलत या अशुद्ध)
	रोगी को दवा हिलाकर पिलाइए।	(सही या शुद्ध)

कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं–

(क)	खरगोश को काटकर गाजर दो।	खरगोश को गाजर काटकर दो।	(शुद्ध)
(ख)	मुझे एक फूलों की माला चाहिए।	मुझे फूलों की एक माला चाहिए।	(शुद्ध)
(ग)	गले में बिल्ली घंटी कौन बाँधे?	बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे?	(शुद्ध)
(घ)	लोग चढ़ गए, ट्रेन आई।	ट्रेन आई, लोग चढ़ गए।	(शुद्ध)
(ङ)	वीरों का देश रहेगा आभारी।	देश वीरों का आभारी रहेगा।	(शुद्ध)

2. अन्विति संबंधी अशुद्धियाँ–

वाक्यों में कर्ता-क्रिया की उचित ढंग से अन्विति होने पर भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है; जैसे–

आप चले जाओ।	(अशुद्ध)	आप चले जाइए।	(शुद्ध)
गांधी जी आ गया।		गांधी जी आ गए।	(शुद्ध)
पिता जी या माता जी आएँगे।		पिता जी या माता जी आएँगी।	(शुद्ध)
राम, लक्ष्मण व सीता वन को गए।		राम, लक्ष्मण और सीता वन को गईं।	(शुद्ध)

अन्य अनेक अशुद्धियाँ–

(क) पुनरुक्ति संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
जयपुर देखने योग्य दर्शनीय स्थल है।	जयपुर दर्शनीय/ देखने योग्य स्थल है।
कृपया पाँच सौ रुपये देने की कृपा करें।	कृपया पाँच सौ रुपये दें।
घर पर हम सकुशल पूर्वक हैं।	घर पर हम सब कुशलपूर्वक हैं।
मुझे केवल दो हज़ार रुपये मात्र निकालने दें।	मुझे केवल दो हज़ार रुपये निकालने दें।

(ख) सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
मेरे को मुंबई जाने का।	मुझे मुंबई जाना है।
बता तेरे से क्या करना।	बताओ तुम्हारा क्या करना है?
रहन दे, इधर नहीं आने का।	रहने दो, इधर नहीं आना है।
हम जाता हूँ।	मैं जाता हूँ।

(ग) परसर्ग संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
पक्षी पेड़ में बैठे हैं।	पक्षी पेड़ पर बैठे हैं।
आप कमरे पर चलिए।	आप कमरे में चलिए।
पिता जी थाली से भोजन कर रहे हैं।	पिता जी थाली में भोजन कर रहे हैं।
आपने यह काम नहीं हो पाएगा।	आपसे यह काम नहीं हो पाएगा।

(घ) रूपांतरण/रचनात्मक संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
माता जी से गाड़ी नहीं पकड़ी।	माता जी से गाड़ी नहीं पकड़ी गई।
मैंने पगड़ी पहनना भूल गया।	मैं पगड़ी पहनना भूल गया।
रोहन से पुस्तक पढ़ाओ।	रोहन से पुस्तक पढ़वाओ।
संजना से साड़ी नहीं पहनी।	संजना से साड़ी नहीं पहनी गई।

आइए पुनरावृति करें

- **वाक्य–** शब्दों (पदों) के सार्थक समूह से बने वाक्य कहलाते हैं।
- **वाक्य के अंग–** वाक्य के दो अंग होते हैं– उद्देश्य तथा विधेय।
- **वाक्य के भेद–** वाक्य के भेद दो आधारों पर तय किए गए हैं– रचना के आधार पर तथा अर्थ के आधार पर।
- रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं– सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य तथा मिश्रित वाक्य।
- अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं– विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, आज्ञावाचक, विस्मयादिवाचक, संदेहवाचक, इच्छावाचक तथा संकेतवाचक।
- अनेक कारणों से वाक्य में अशुद्धियाँ आती हैं।

अध्यापन संकेत

उद्देश्य–विधेय की पहचान करवाएँ। साथ ही संयुक्त अथवा मिश्रित वाक्यों से संबंधित गतिविधि करवाएँ।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) वाक्य के भेद कितने आधार पर तय किए जाते हैं?

(ख) पदों का सार्थक समूह क्या कहलाता है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) वाक्य किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) वाक्य के कितने अंग होते हैं? किसी एक की परिभाषा देकर बताइए।

(ग) अर्थ के आधार पर वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?

(घ) पुनरुक्तात्मक दोष किस तरह होता है? उदाहरण देकर समझाइए।

(ङ) शब्द और पद में क्या अंतर होता है?

2. दिए गए वाक्यों को शुद्ध करके दोबारा लिखिए।

(क) जो करेगा, वह भरेगा। ....

(ख) शादी में अनेकों लोग आए हुए थे। ....

(ग) सभी कागज़ मेज़ पर रखे हैं। ....

(घ) मैं मेरे घर जाता हूँ। ....

(ङ) देश के गांधी जी राष्ट्रपिता हैं। ....

(च) क्या तेरे को नहीं मालूम कि क्या करना है? ....

(छ) रिया और रानी बहुत अच्छे दोस्त हैं। ....

(ज) श्याम कल शहर को जाएगा। ....

(झ) कोयल मीठा गाता है। ....

3. दिए गए वाक्यों में से उद्देश्य एवं विधेय अलग करके लिखिए।

	उद्देश्य	विधेय
(क) कविता गीत गुनगुनाने लगी।	कविता	गीत गुनगुनाने लगी।
(ख) रामू बस से गाँव जा रहा है।	....	....
(ग) माता जी सीरियल देखने लगीं।	....	....
(घ) मिठाईवाला पेड़े बेच रहा है।	....	....
(ङ) नंदन अब अपने पाँव पर खड़ा होने लगा।	....	....

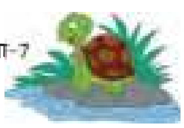

सोचें-विचारें

Critical Thinking

4. मिश्रित वाक्य में यदि मुख्य उपवाक्य एवं आश्रित उपवाक्य न हो, तो वाक्य की रचना का रूप किस तरह की अशुद्धियों के साथ प्रयोग किया जाएगा? कक्षा में इन बिंदुओं पर विचार करते हुए कुछ उदाहरण दीजिए।

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

5. श्यामपट्ट पर कुछ अशुद्ध वाक्य लिखकर उसकी अशुद्धियाँ बच्चों से पूछें।
6. बच्चों से एक-एक वाक्य बुलवाएँ। शुद्ध है तो शाबासी दें। अशुद्ध है, तो दूसरे छात्रों से ठीक करवाएँ।
7. कक्षा में विविध संप्रदायों– पंजाबी, बंगाली, मराठी, दक्षिण भारतीय, बिहार, उ. प्र. के बच्चों से एक-एक वाक्य बुलवाकर श्यामपट्ट पर लिखवाएँ और उन पर चर्चा करें।

प्रेरणादायक मूल्य

बच्चों को प्रत्येक क्षेत्र की भाषा एवं बोली को सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अध्याय 19

अशुद्ध वाक्यों का शोधन (Correction of Incorrect Sentences)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए और इनके संवादों पर ध्यान दीजिए।

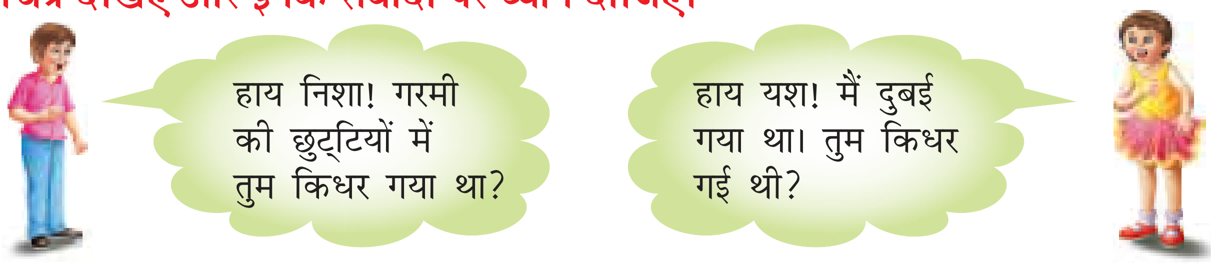

बच्चो! आपने दोनों की बातचीत में देखा कि वे बातों में सही वाक्य का प्रयोग नहीं कर रहे हैं। यश को बोलना चाहिए था– 'हाय निशा! गरमी की छुट्टियों में तुम कहाँ गई थी?' वहीं निशा को कहना चाहिए था– 'हाय यश! मैं दुबई गई थी। तुम कहाँ गए थे? इसलिए इन दोनों के पहले के कहे गए वाक्य सही नहीं हैं, इसलिए उन्हें अशुद्ध वाक्य कहेंगे और बाद के लिखे वाक्य शुद्ध वाक्य कहे जाएँगे।

अब आइए, यह जानें कि भाषा में कितने प्रकार की अशुद्धियाँ पाई जाती हैं– भाषा में मुख्यत: दो प्रकार की अशुद्धियाँ पाई जाती हैं।

1. वर्तनी संबंधी 2. वाक्य संबंधी

1. वर्तनी संबंधी अशुद्धि:

इसमें वर्तनी संबंधी गलतियाँ हो जाती हैं, जो प्राय: अशुद्ध अथवा क्षेत्रीय भाषा के प्रभाव से गलत उच्चारण के कारण लेखन में त्रुटि को दर्शाती हैं।

2. वाक्य संबंधी अशुद्धि:

वाक्य संबंधी अशुद्धियाँ अनेक प्रकार की होती हैं, जो प्राय: संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, कारक एवं पदक्रम संबंधी होती हैं। आइए, हम एक-एक करके इनका अध्ययन करते हैं।

(क) संज्ञा - सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
मैं मेरे घर जाता है।	मैं अपने घर जाता हूँ।
सरिता मेरा बहन है।	सरिता मेरी बहन है।
मेरे को इधर नहीं आना है।	मुझे इधर नहीं आना है।
तुम क्या करना है?	तुझे क्या करना है?

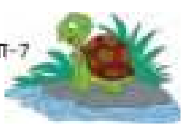

(ख) लिंग संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
हमारे यहाँ नानी जी आया है।	हमारे यहाँ नानी जी आई हैं।
हमारी गेंद पानी में गिर गया।	हमारी गेंद पानी में गिर गई।
पिता जी अभी ऑफिस जाएगी।	पिता जी अभी ऑफिस जाएँगे।
रंजना गाँव को जाएगा।	रंजना गाँव जाएगी/रंजना को गाँव जाना है।
महाराणा प्रताप वीरांगना थे।	महाराणा प्रताप वीर थे।

(ग) वचन संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
फ्रिज़ में कई अंडा रखा है।	फ्रिज़ में कई अंडे रखे हैं।
आपका हस्ताक्षर हो गया।	आपके हस्ताक्षर हो गए।
उसका आँसू निकल गया।	उसके आँसू निकल गए।
पिता जी का आँसू मेरे सामने निकल गया।	पिता जी के आँसू मेरे सामने निकल गए।
आपका दर्शन बहुत दिन बाद हुआ।	आपके दर्शन बहुत दिन बाद हुए।

(घ) कारक संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
आपको एक काम है।	आपसे एक काम है।
कबूतर डाली पर से उड़ गए।	कबूतर डाली से उड़ गए।
लड़का धूप से खड़ा है।	लड़का धूप में खड़ा है।
पिता जी कमरे पर आ गए।	पिता जी कमरे में आ गए।
आसमान पर चाँद निकला है।	आसमान में चाँद निकला है।
यह वर्षा की मौसम है।	यह वर्षा का मौसम है।

(ङ) पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
खरगोश को काटकर गाजर दो।	खरगोश को गाजर काटकर दो।
मेरे घर शुद्ध गाय का दूध आता है।	मेरे घर गाय का शुद्ध दूध आता है।
पालतू शेर होता है नहीं।	शेर पालतू नहीं होता है।
शास्त्री जी का देश आभारी है।	देश शास्त्री जी का आभारी है।
मुझे एक फूलों की माला चाहिए।	मुझे फूलों की एक माला चाहिए।
एक रामचरितमानस की चौपाई सुनाइए।	रामचरितमानस की एक चौपाई सुनाइए।

अध्यापन संकेत — शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को कक्षा में उदाहरण द्वारा अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध वाक्य में परिणत करने के तरीके को समझाएँ।

मुझे गरम-गरम सरसों का साग खिलाइए।	मुझे सरसों का गरम-गरम साग खिलाइए।
यहाँ मुफ़्त लोगों के लिए भोजन मिलता है।	यहाँ लोगों के लिए मुफ़्त भोजन मिलता है।

(च) पुनरुक्तात्मक दोष संबंधी त्रुटियाँ-

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
जयपुर देखने योग्य दर्शनीय स्थल है।	जयपुर दर्शनीय स्थल है।
कृपया आगे की पंक्ति में बैठने की कृपा करें।	कृपया आगे की पंक्ति में बैठें।
मुझे केवल पाँच हज़ार रुपये मात्र चाहिए।	मुझे केवल पाँच हज़ार रुपये चाहिए।
शास्त्री जी ईमानदार व्यक्ति थे।	शास्त्री जी ईमानदार थे।
आज के दिन कौन-सा बार है?	आज कौन-सा वार है?
आज बादलों से पानी बरसेगा।	आज बादल बरसेंगे।

(छ) मुहावरे संबंधी अशुद्धियाँ-

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
तुम अपनी अक्ल के घोड़े मत चराओ।	तुम अपनी अक्ल के घोड़े मत दौड़ाओ।
पंड़ित जी ने आशीर्वाद दिया - खूब फलो-फूलो।	पंडित जी ने आशीर्वाद दिया- खूब फूलो-फलो।
नंदिता हँसती है जैसे फूल गिरते हैं।	नंदिता हँसती है जैसे फूल झड़ते हैं।
आसमान में बिजली तड़क रही है।	आसमान में बिजली चमक रही है।
आजकल महेश धरती पर पाँव नहीं धरता।	आजकल महेश के पाँव धरती पर नहीं पड़ते।
नेहा का दम घुट गया है।	नेहा का दम फूल गया है।
भारतीय सैनिक सिर पर कफ़न ओढ़कर निकलते हैं।	भारतीय सैनिक सिर पर कफ़न बाँधकर निकलते हैं।
हमारे किसान खून सुखाकर काम करते हैं।	हमारे किसान खून जलाकर काम करते हैं।

आइए पुनरावृति करें

- वाक्यों में अशुद्धियाँ दो कारणों से होती हैं- वर्तनी एवं वाक्यों से संबंधित।
- वाक्यों में पुनरुक्तात्मक दोष, पदक्रम दोष, मुहावरों के गलत प्रयोग, लिंग, वचन, कारक संबंधी अशुद्धियाँ होती हैं।
- अशुद्धियाँ अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग कारकों से होती हैं।

अभ्यास कार्य

मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

(क) वाक्यों में अशुद्धियाँ किस आधार पर होती हैं?

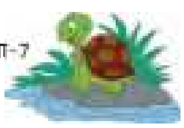

(ख) वाक्य अशुद्धि से भाषा का स्वरूप कैसा हो जाता है?

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ किस प्रकार होती हैं?
(ख) सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ किस प्रकार होती हैं?
(ग) कारक संबंधी अशुद्धियाँ किस प्रकार होती हैं? उदाहरण देकर समझाइए।
(घ) वचन संबंधी अशुद्धियों को उदाहरण के साथ लिखिए।

2. दिए गए वाक्यों को शुद्ध करके दोबारा लिखिए।

(क) छत में मत सोइए। ....
(ख) मैं कमरे पर पहुँच गया। ....
(ग) तुम्हारा हस्ताक्षर सुंदर है। ....
(घ) मैंने अनेकों पुस्तकें लिखी हैं। ....
(ङ) तुम तुम्हारा गाँव जाओ। ....
(च) रोगी को काटकर सेब खिलाइए। ....
(छ) मेरे को पढ़ाई करनी है। ....
(ज) मुझे गरम गाय का दूध पीना है। ....
(झ) सारे स्कूल भर में सफ़ेदी का कार्य हो रहा है। ....
(ञ) यहाँ मुफ़्त आँखों का आपरेशन किया जाता है। ....
(ट) भोजन खा लीजिए। ....
(ठ) मुझसे बेफ़िजूल बातें मत कीजिए। ....
(ड) उसका आँसू निकल आया। ....

3. दिए गए वाक्यों में कहाँ अशुद्धि है, उसके नीचे रेखा खींचिए।

(क) यह बच्चे गाना गा रहे हैं।
(ख) लगता है आज पानी बरसेगी।
(ग) मैंने रोहतक जाणा है।
(घ) तुम नए कपड़े डाल लो।
(ङ) आप उधर बैठो।
(च) उसको पुस्तक नहीं चाहिए।
(छ) पेड़ में तोते बैठे हैं।
(ज) उन्होंने नाम को लोग याद करेंगे।

4. दिए गए वाक्यों के सामने सही (✓) या गलत (×) के निशान लगाइए।

(क) मुझे नहीं जाना है स्कूल। ☐
(ख) आप मुझसे बात मत करो। ☐
(ग) नन्हे की रुलाई देखकर मेरे आँसू निकल गए। ☐
(घ) मेरा पिता जी आज जल्दी आएगा। ☐

(ङ) आज दुकानें जल्दी बंद हो गईं।

(च) मुझको मत पुकारिए।

(छ) मुझे गरम-गरम बाजरे की रोटियाँ खिलाइए।

(ज) मेरी माता जी स्वादिष्ट भोजन बनाती हैं।

(झ) मेरे गले में माला डाल दो।

(ञ) गत मंगलवार को हम मंदिर जाएँगे।

सोचें-विचारें

Critical Thinking

5. यदि भाषा में अशुद्धता हो तो वह किस तरह बोली जाएगी?

खेल-खेल में

Brain Storming Activity

6. कक्षा में सभी बच्चों से एक-एक वाक्य बुलवाएँ। सही वाक्य बोलने वाले को शाबासी दें और गलत वाक्य में अन्य बच्चों से गलतियों की पहचान करवाएँ।

7. प्राय: वाक्यों में सामान्य गलतियाँ कहाँ होती हैं? उस पर बच्चों का ध्यान दिलाएँ; जैसे- पुनरुक्तात्मक, पदक्रम संबंधी या लिंग-वचन-कारक संबंधी कुछ वाक्यों को उदाहरण देकर समझाएँ।

प्रेरणादायक मूल्य

हमें भी अपनी गलतियों का सुधार जल्द से जल्द कर जीवन में आगे बढ़ना चाहिए।

अध्याय 20

चित्र–वर्णन
(Picture Description)

पढ़िए और समझिए

बच्चो! आप जानते हैं कि जब हम कोई चित्र देखते हैं तो हमारी भावनाएँ अनेक प्रकार से उस चित्र के आस–पास बहने लगती हैं। यानी कि किसी भी चित्र को देखकर उसके बारे में सामान्य वर्णन करना चित्र–वर्णन कहा जाता है। चित्र–वर्णन में हमें यह बात विशेष ध्यान में रखनी चाहिए कि वर्णन के प्रत्येक वाक्य का संबंध चित्र से अवश्य होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक वाक्य में उन्हीं चीज़ों का वर्णन करें जो कि चित्र में दिखाई दे रही हैं। अमूर्त चीज़ों का वर्णन चित्र–वर्णन के साथ नहीं करना चाहिए।

चित्र–वर्णन के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- सबसे पहले चित्र को अच्छी तरह से देखना चाहिए।
- फिर उसमें हो रही क्रियाओं को समझना चाहिए।
- वाक्य छोटे और चित्र से संबंधित होने चाहिए।

उदाहरण

1. दिए गए चित्र को देखकर उसका वर्णन 50–60 शब्दों में कीजिए।

वर्णन : यह हमारे शहर का सबसे सुंदर माल है। यहाँ मैं अपनी मम्मी जी के साथ घूमने आया हूँ। मम्मी जी ने मेरे लिए स्कूल बैग खरीदा। मुझे आइसक्रीम दिलवाई। अपने लिए एक नई साड़ी खरीदी। मॉल में खिलौने, कपड़े, बैग, आईसक्रीम पॉर्लर आदि की सुंदर–सुंदर दुकाने हैं। गुड़िया को मम्मी जी ने नई फ्रॉक दिलवाई। थोड़ी देर घूमने के बाद हम सब घर वापस आ गए।

2.

वर्णन: हमारे घर से बारात निकल रही है। मेरे चाचा जी की शादी है। वे दुल्हा बनकर घोड़ी पर बैठे हैं। उनके साथी लोग खूब नाच रहे हैं। उधर मम्मी जी के साथ कुछ महिलायें भी नाच रही हैं। बिजली वाले भी लाइटें लेकर साथ-साथ चल रहे हैं। बाजे वाले मस्ती से बाजा बजा रहे हैं। चाचा जी की बारात में मुझे बड़ा मज़ा आ रहा है।

अध्यापन संकेत शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को चित्र-वर्णन में शामिल विभिन्न पहलुओं को समझाते हुए एक मूल अंश प्रदान करने के संबंध में विस्तारपूर्वक बताएँ।

अभ्यास कार्य

लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए चित्रों को देखकर उनका वर्णन 50-60 शब्दों में कीजिए-

(क)

....

....

....

(ख)

....

....

....

....

....

(ग)

....

....

....

....

....

(घ)

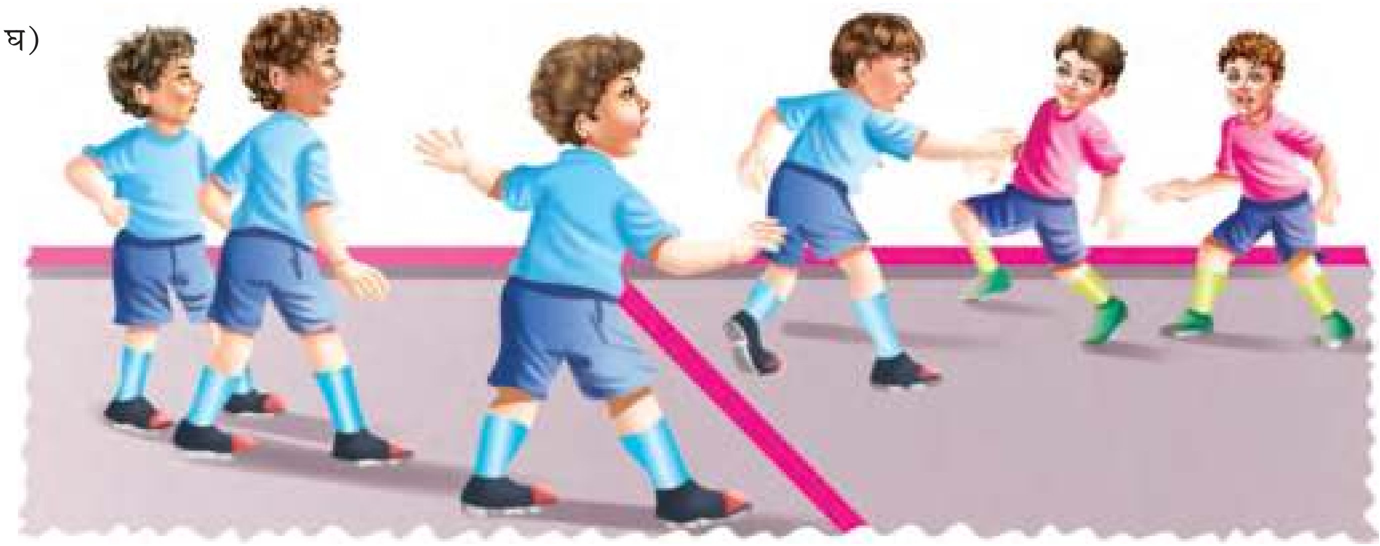

(ङ)

प्रेरणादायक मूल्य

किसी व्यक्ति को देखकर अनायास ही उसके संबंध में अपने विचार व्यक्त नहीं करने चाहिए जब तक कि आप उसे अच्छी तरह से समझ न लें। इस प्रकार के कृत्य आपके व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

स्वमूल्यांकन पत्र-1

समय: 1 घंटा

नाम : .... **कक्षा :** .... **अनुक्रमांक :** ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) भाषा किसे कहते हैं?

(ख) स्वरों की परिभाषा बताइए, तथा उसके भेद भी लिखिए।

(ग) शब्द कितने प्रकार के होते हैं?

(घ) स्वर संधि की परिभाषा दीजिए।

2. (क) दिए गए समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए।

चतुरानन – ....

अधपका – ....

नवग्रह – ....

(ख) दिए गए शब्दों से समस्त पद बनाइए।

गगन को चूमने वाली – ....

जैसा संभव हो – ....

गुरु के लिए दक्षिणा – ....

3. सही विकल्प का चुनाव कीजिए।

(क) 'परोपकार' शब्द में उपसर्ग लगा है–

☐ परों ☐ परा ☐ पर ☐ कार

(ख) 'कोल्हापुरी' शब्द में सही प्रत्यय लगा है–

☐ कोल्हा ☐ हापुरी ☐ पुरी ☐ पूरी

(ग) 'ठकुराइन' का पुल्लिंग होगा–

☐ क्षत्राणी ☐ शेरनी ☐ क्षत्रिय ☐ ठाकुर

4. (क) दिए गए शब्दों के वचन बदलिए।

नर्तकदल – .... दीवार – ....

कविता – .... मुर्गियाँ – ....

सभा – .... राजा – ....

(ख) दिए गए शब्दों से भावनात्मक संज्ञा शब्द बनाइए।

तरुण – .... प्यासा – ....

कवि	–	....	नारी	–	....
अपना	–	....	रोना	–	....

5. (क) दिए गए शब्दों के लिंग बदलिए।

इंद्र	–	....	पाठक	–	....
रुद्र	–	....	रक्षिका	–	....
लुटिया	–	....	बालक	–	....

(ख) दिए गए शब्दों के वचन बदलिए।

विद्यार्थी	–	....	कर्मचारी	–	....
चिट्ठी	–	....	पुड़िया	–	....
लेखिका	–	....	कवि	–	....

6. दिए गए वाक्यों में कारक चिह्नों को रेखांकित कर कारक का नाम लिखिए।

(क) ये कपड़े मनोहर के लिए हैं। ....

(ख) हमेशा बड़ों से आदरपूर्वक बातें करनी चाहिए। ....

(ग) मैंने अपना गृहकार्य कर लिया है। ....

(घ) कबूतर पेड़ से उड़ गए। ....

7. रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर कीजिए।

(क) .... पिता जी आए हैं। (हमारे / मेरे / उन्होंने)

(ख) .... नौकर को मेरे पास बुलाओ। (एक / किसी / कोई)

(ग) मेरे साथ .... भी चलना है। (तुम /तुम्हें / तुमको)

(घ) .... मेरे घर पर अवश्य आएगा। (वे /तुम / वह)

8. (क) दिए गए वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए।

दीपक में थोड़ा-सा घी डाल देना। ....

यहाँ से ग्रामीण क्षेत्र शुरू होता है। ....

कुछ पैसे मेरे पास भी हैं। ....

बाज़ार में पके टमाटर मिल रहे हैं। ....

(ख) दिए गए शब्दों से विशेषण शब्द बनाइए।

घूमना	–	....	राष्ट्र	–	....
कमाना	–	....	नीच	–	....
आप	–	....	झगड़ा	–	....

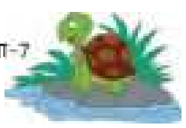

स्वमूल्यांकन पत्र-2

समयः 1 घंटा

नाम : .... **कक्षा :** .... **अनुक्रमांक :** ....

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) क्रिया किसे कहते हैं?

(ख) सकर्मक और अकर्मक क्रिया में क्या अंतर होता है?

(ग) भविष्यत् काल की परिभाषा देकर उदाहरण दीजिए।

(घ) वाक्य के कितने अंग होते होते हैं? किसी एक की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

2. (क) दिए गए विराम-चिह्नों के नाम लिखिए।

! – .... “ – ” – ....

; – .... ? – ....

⅄ – .... ( ) – ....

(ख) दिए गए वाक्यों में विराम-चिह्न लगाइए।

(i) मिहिर ने मम्मी से कहा मम्मी मुझे भूख लगी है।

(ii) क्या कहा तुम यह क्या कह रहे हो

(iii) नेताजी ने कहा यदि हमारी पार्टी की सरकार बनेगी तो कोरोना वैक्सीन मुफ़्त बँटेगी।

(iv) मोहन सोहन नीलिमा और राकेश मेला देखने गए।

3. दिए गए वाक्यों को शुद्ध करके दोबारा लिखिए।

(क) मैं मेरे घर जाता हूँ। ....

(ख) करना नहीं मुझे बहुत कुछ। ....

(ग) रोगी को दवा पिलाकर हिलाओ। ....

4. (क) दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

पक्षी – .... अतिथि – ....

पत्थर – .... सिंह – ....

कमल – .... वृक्ष – ....

(ख) दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

दुर्गम – .... एकता – ....

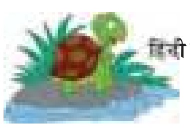

स्थूल – .... हर्ष – ....

गहरा – .... आदान – ....

5. (क) दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखिए।

पैर पसारना – ....

खयाली पुलाव पकाना – ....

थाली का बैंगन – ....

अंधों में काना राजा – ....

(ख) दी गई लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

एक अनार सौ बीमार – ....

....

खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे – ....

....

चोर पर मोर – ....

....

ऊँट के मुँह में जीरा– ....

....

आगे कुआँ पीछे खाई – ....

....

दूर के ढोल सुहावने – ....

....

रस्सी जल गई पर बल न गया – ....

....

6. चित्र का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

....

....

....

....